बाईबल के इस पार से उस पार

मार्क और पैटी विर्कलर

बाईबल के इस पार से उस पार

"व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में ध्यान दिए रहना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की चौकसी करे, क्योंकि ऐसा ही करनें से तेरे सब काम सफल होंगें, और तू प्रभावशाली होगा ।"

(यहोशू १:८)

प्रार्थना

"मेरी आँखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्‌भुत बातें देंख सकूँ..........तेरी बातों के खुलनें से प्रकाश होता है; उससे भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं।

(भजन ११९:१८,१३०)

पुस्तक के बाहरी पृष्ठ के बारे में

परमेश्वर की प्रेरणा पा कर भविष्यवक्ताओं बाईबल को लिखा (२ तिमुथियुस ३ १६) । परन्तु भविष्यवक्ता ने केवल दूर से ऊपरी तौर से जो देखा उसे लिखा ये न जानते हुए की उन बातों को पूरा होने के लिए सदियों लग जाएगें ।

इस चित्र में एक भविष्यवक्ता पहाडियों की चोटींयां है, इस्रालियों का मिस्र से छुटकारा यीशु की जीवन और मृत्यु और इस युग के समाप्ती पर यीशु का दुबारा आना। जहां भविष्यवक्ता खडा है वहां से ये तीनो बातें एक सी लग रही है या एक ही युग की बातें । इसका नतीजा यह है की उसने इन तीनों बातों को हो सकता है की, एक ही वचन में लिखा हो, चाहे उनके मध्य में कई वर्ष उनको अलग कर रहे हों । (यशायह ६१-१,२)
परमेश्वर के भविष्यवक्ता देखना जारी रखें ।

विषय सूची

०१- किस तरह इस पुस्तक का उपयोग किया जाए
०२- भूमिका लिखना
०३- प्रस्तावना
०४- पवित्रशास्त्र की व्याख्या करना
०५- दैवी प्रकाशन का ज्ञान कैसे पाऐं
०६- बाईबल का अति उत्तम अतिरिक्त दृश्य
०७- पुराने नियम का अति उत्तम अतिरिक्त दृश्य
०८- पुराने नियम की समय सूची
०९- उत्पत्ति
१०- निर्गमन
११- लैव्यव्यवस्था
१२- गिनती
१३- व्यवस्थाविवरण
१४- यहोशु
१५- न्यायियों
१६- रूत
१७- १ शमुएल
१८- २ शमुएल
१९- १ राजा
२०- २ राजा
२१- १ इतिहास
२२- २ इतिहास
२३- ऐज्रा
२४- नहेम्याह
२५- एस्तर
२६- पुर्नरिक्षण पृष्ठ न्याय और इतिहास पर
२७- अय्युब
२८- भजन संहिता
२९- नीतिवचन
३०- सभोपदेशक

३१- श्रेष्ठ गीत
३२- भविष्यवक्ताओं का परिचय
३३- यशायह
३४- यिर्मयाह
३५- विलापगीत
३६- यहेजकेल
३७- दानिय्येल
३८- चार बडे भविष्यवक्ताओं की तुलना
३९- होशे
४०- योएल
४१- आमोस
४२- ओबद्याह
४३- योना
४४- मीका
४५- नहूम
४६- हब्ककूक
४७- सपन्याह
४८- हाग्गै
४९- जकर्याह
५०- मलाकी
५१- सारांश पृष्ठ-पुराना नियम
५२- नये नियम का अति उत्तम अतिरिक्त दृश्य
५३- मत्ती
५४- मरकुस
५५- लूका
५६- यूहन्ना
५७- इन चार इंजीलों पर तुलना चित्र
५८- चेलों व्दारा प्रचार, विशेष कर पौलुस का
५९- प्रेरितों के काम
६०- रोमियों
६१- १ कुरिन्थियों
६२- २ कुरिन्थियों
६३- गलतियों
६४- इफिसियों

६५- फिलिप्पियों
६६- कुलुस्सियों
६७- १ थिस्सलुनीकियों
६८- २ थिस्सलुनीकियों
६९- १ तीमुथियुस
७०- २ तीमुथियुस
७१- तीतुस
७२- फिलोमोन
७३- इब्रानियों
७४- याकूब
७५- १ पतरस
७६- २ पतरस
७७- १ यूहन्ना
७८- २ यूहन्ना
७९- ३ यूहन्ना
८०- यहूदा
८१- पत्रियों पर सारांश में पुर्निरिक्षण
८२- प्राकाशितवाक्य
८३- आप ने क्या पाया, उस पर एक पुर्निरीक्षण

१. इस पुस्तक को उपयोग में लाने के तरीके

इस पुस्तक को बाईबल पाठशालाओं, रविवार की बाल पाठशालाओ घरों मे प्रार्थना सभाओं, और व्यक्तिगत तौर से उपयोंग किया जा सकता है। इस कार्यपुस्तक के साथ उपयोग में विश्व विद्याल्य से पाठय कर्म के रुप में मंगाया जा सकता है।

निम्न दी गयी पुस्तके, मसीही अगुवा विश्वविद्यालय, १४३१, बुलिस राह, ऐल्मा, न्यूर्याक, १४०५९, से मंगाई जा सकती हैं या इस पते से उपलब्द की जा सकती हैं डब्लयू सी डब्लयू मिनिस्ट्रीज़, ओ आर जी या १-८००-४६६-६९६१ पर फोन कर के मंगा सकते हैं:

१.	अध्ययनक्रम के पाठ जो सीडी - रौम पर उपलब्द हैं बाईबल के इस पार से उस पार I-VIII	$ ४९.००
२.	बाईबल के इस पार से उस पार, जवावो की छोटी पुस्तक	$ १९.९५
३.	बाईबल के इस पर से उस पार अगुवों के मार्ग दर्शन के लिए	$ २९.९५
II.	बाईबल के इस पार से उस पार कैसट:	
१.	पेंटाटयूक	$ १९.९५
२.	यूनाईटैड किगंडम	$ १९.९५
३.	डिबाईडेड किगंडम	$ २९.९५
४.	कविता	$ १९.९५
५.	मुख्य भविष्यवक्ता	$ १९.९५
६.	मसीह का जीवन	$ १९.९५

७. प्रेरितों के काम और पत्रियाँ $ १९.९५

८. पत्रियाँ और प्रकाशितवाक्य $ १९.९५

२. भूमिक लिखना

मसीह की देह में निम्न आवश्यक्ताओं को पाने के लिए यह बाईबल सर्वेक्षण किया गया।

अ) मसीहत पर केंद्रित, क्रम से बाईबल शिक्षा की आवश्यक्ता।

ब) उस व्यक्ति के लिए जो पूरा पारिवारिक है और जो अपनी बाईबल प्रशिक्षण ज्यादातर घर पर ही करता है पर उसे कक्षा या समूह की भी आवश्यक्ता है।

स) एक पाठयक्रम जो दोनों नए और पुराने मसीह की आवश्यक्ता को पूरा करता है।

द) हम संस्तुति करतने है की यह आठ भागो का छः माही पाठय क्रम तीन साल में खतम कर दे, यानी एक साल मे तीन भाग सितम्बर से मई तक चलने चाहिए और गर्मीयों में छुट्‌टी होनी चाहिए। समूह अपनी शुरूआत, नए नियम, पुराने नियम या भजन संहिता से कर सकते हैं। हर भाग अपने में पूर्ण है, इसलिए कोई भी व्यक्ति किसी भी भाग से शुरु कर सकता है।

ई) इस का उपयोग घरो की प्रार्थना सभाओं, बाईबल स्कूलों और कर्मठ रविवार स्कूल कक्षाओं में किया जा सकता है।

इस पुस्तक को बनाते वक्त निमन बातो को ध्यान में रखा गया है।

१. समय के अभाव के कारण एक विद्यार्थी सब कुछ नहीं पढ़ सकता। इसलिए, सब से आवश्यक यह होगा की आप बाईबल पढ़ें।

२. पाठयक्रम की शुरुआत बाईबल पर ध्यान लगा कर होनी चाहिए, बाद में अनुवाद करीए, और आखिर में उसे प्रयोग में लाईए।

३. किसी भी साहित्य को अनुवाद करने के दो मूल सिद्धान्त हैं। "बंधुता के सिद्धात" और "अनुपात के सिद्धात"। यह पुस्तक विध्यर्थियों को इन सिद्धांतो को अपनाने मे मदद करेगी।

४. एक विवादी अगुवा, जवाबों की छोटी पुस्तक का इस्तेमाल कर के वह विवादों के दौरान मुख्य बातो को बताता है।

५. परिक्षा केवल मुख्य और आवश्यक बातो को याद रखने के लिए किया जाना चाहिए। परिक्षा का प्रयोग इसलिए करना चाहिए क्योकी इस से किसी कार्य को पूरा करने की संतुष्टी मिलती है और यह आगे बढ़ने की शक्ति देता है।

६. आखिर में विद्यार्थीयों को वर्ग भी देना चाहिए यह जानने के लिए की उन्हें सही जानकारी या सही बात पता चली की नहीं। यह उन्हे विवादी अगुबा दे सकता है (जिस के पास जबाबो की छोटी पुस्तक है)

७. यह बाईबल का सर्वेक्षण करने का एक अलग तरीका है, स्वंय को खोजते हुए और समुह विवाद के द्वारा, जिस से आप, परमेश्वर की अदभुत सच्चाईयों को खोज सकते है।

प्रस्तावना

A. अवश्यक्ता

इस पुस्तक को लिखने का मुख्य कारण यह है की हम ने कई मसीहो की अवश्यक्ता को देखा है जो पूरी बाईबल को क्रमानुसार और भक्ति के साथ पढना चाहते है। ऐसा करने से ही हम परमेश्वर और उसका मनुष्य के साथ व्यवहार का संतुलन बना सकते है। इस बाईबल का मनन करना और भी तीव्र हो जाता है जब हम इसे , लोगो के समूह में एक आत्मिक निर्देशक के तहत करते हैं।

B. विधि

जब किसी साहीत्य का अध्यन करे, तो आप उन दो मूल और मौलिक सिद्धांतों को पहचानीए। हमे इन दो सिद्धांतो को बाईबल का अध्यन करने में प्रयोग करना हैं।

१. बंधुता का सिद्धांत: हर चीज़ जो लिखा या बोला गया हैं उस का कुछ और चिज से खास बंधुता होती है। यह, चरित्र, दुहराव, कारण या असर, आखरी साधन या कुछ और, बंधुता हो सकाता है। हमे इन बंघुतों को समझना चाहिए ताकी हमारे विचार इस वचन की रौशनी के क्रम से गुज़रे।

२. अनुपात के सिद्धांत : एक लेखक, किसी खास विष्य पर ज़रुरत के मुताबिक आचरण कर विशिष्द उच्चारण प्राट करता है, या नही कर पाता है। वह उच्चारण कर भी सकता है या कुछ भागों को पूरी तहरा भूल भी सकता है, जो उस के विचारों के विकास पर निर्भर होता है। लोगो, जगाहो समय, वृतान्तों और अभिप्रायों कि परिक्षा कीजीए।

जब आप इन दो सिद्धांतों को अपने दिमाग में रख कर प्रार्थना मे परमेश्वर के वचन पर ध्यान लगाऐंगे, तो आप लेखक की सामग्री को पूर्ण रुप से समझ पाओगे, यह पुस्तक इन सिद्धांतो पर साफ दृष्टि डालती है क्योकी यह एक ही पृष्ट पर सारी बाईबल की

जान कारी देती है। यह इतिहास बताती है। लेखक का अभिप्राय और दृष्टिकोन और इस पुस्तक की सामग्री का बंधुत और अनुपात।

C. आपके चित्र

जब आप पुस्तक पढ़ते हुए पाठों के रिक्त स्थानों को भरेंगे तो यह आप के चित्र हो जाऐंगे। हम एक दिन में दो या तीन पाठ पूरे करेंग। जब आप पाठ का शीर्शक लिखे, तो चित्र को अच्छी तरहा से देखें और इस पाठ के और इस पुस्तक के मुख्य रेखाचित्र का रिशता देखीए। जब आप हर पाठ को पढ रहे हो, तो आप इस प्रश्न को ध्यान मे रखिए, "परमेश्वर, उस पाठ का निष्कर्श क्या है"? तब, चन्द शब्दो में, आत्मा जैसा बताता है उस के अनुसार, पाठ के शीर्शक को लिखिए। ताकी जब आप उस चित्र को देखें तो आप को उस पाठ के घनपरिमान का पता लग जाना चाहिए। यह चित्र आप के बाईबल के अध्यन के समय एक स्थायी लेखा बन जाऐगा।

D. चित्रो का प्रयोग क्यों करे?

१. चिक्र आँख को भाते हैं और वे उस सामग्री को चित्र के रूप में प्रस्तुत करते है। इसलिए उन्हें याद रखने में वे हमारी मदद करते हैं।

२. चित्र वाचक के लिए मितव्यय नियुक्त करते हैं। वे एक ही दृष्टि में कई विचार बताते हैं।

अ) वे बंधुता के सिद्धातों और अनुपात के सिद्धांतो को चित्रके रुप में प्रस्तुत करते है।

ब) चित्र छोटे अंश से मुख्य विचार तक जाते हैं।

स) चित्र पूरी योजना बताते हैं।

E. चित्रों को समजने के लिए कुछ उपकारक संकेत

१. आप कहीं से भी शुरु कर सकते हैं चाहे चित्र के ऊपर या नीचे दिए गए शीर्शक में से किसी भी एक से शुरु कर सकते हैं।

२. उस के बाद सब से बडे भागों को देखिए

३. बाद मे छोटे भागों की और मुडिए और रिशते को लिखते जाईए, और ये भाग एक दूसरे के साथ कैसे मिलते हैं इसे भी लिखिए। यह भी देखिए की लेखक ने हर विषय पर कितनी अनुपात सामग्री का प्रयोग किया है।

F. याद रखने का कार्य

हर हफ्ते एक खास आयत को पढ कर याद करीए। इस आयत को एक गत्ते पर लिखिए, ताकी पूर हफ्ते, आप उसे अपने साथ ले जा सके। ऐसी आयत चुनीए जो परमेश्वर आप को बता रहा है और आप के जीवन मे उस का प्रयोंग कर रहा है। इस तरहा, वे आप का जीवन बन जाऐंगी।

G. तिथि (तारीखे)

प्रचार के विद्यवान बाईबल की घटनाओं के क्रम से सहमत है। परन्तु सही तिथि नहीं पता लगा जा सकती है और एक दूसरे के विचारो के बीच, एक सौ साल का फर्क हो सकता है। इस पुस्तक मे जो तिथि बतायी गयी है वह द कमौनियन बाईबल के मुताबिक है।

H. विवादी प्रश्नो के जबाब।

विवादी प्रश्नों का जबाब देने के लिए आप को मदद पडेगी उस बाईबल की जिस के किनारी पर लिखे हुए संदर्भ हैं। हम न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड वर्शन बाईबल का उपयोग करने की सलाह देते है। आप को एक अलग लिखने की किताब की आवश्यक्ता पडेगी, इन विवादी प्रश्नो के जवाबों को लिखने के लिए।

समानान्तर सामग्री

कुछ समानान्तुर किताबें नहीं है। परन्तु हम हैलीस बाईबल हैण्डबुक और एक पूर्ण सादृश्य (जैसे यगस या स्ट्रागस) को उपयोग करने की सलाह देने हैं।)

J. अगुवों का मार्गदर्श

यह सलाह दी जाती है की इस पुस्तक का उपयोग करने के लिए एक समूह बनाया जाए जो स्पताह में एक बार एकत्रित हो कर जवाबो को आपस में बाँटें और जो उन्होने खोजा है उसे दूसरो के साथ बांट ले। समूह के अगुवो के लिए जवाबों की छोटी पुस्तक उपलब्द है, जिस मे जवाबों की सलाह दी गयी है और कुछ विचार है जो समूह में विवादो के वक्त आगुवे के काम आऐंगे।

k. ध्यान लगाना

इस किताब की बहुमूल्यता इन बातो पर निरभर है

१) समय जो आप परमेश्वर के वचन पर ध्यान लगाने मे बिताते हैं और

२) पवित्रात्मा से सिखाए जाने की आप की इच्छा शक्ति। यदी आप दिन और रात ध्यान लगाऐ और जो भी वचन में कहा गया है उस का आज्ञापालन करे, परमेश्वर ने आप के लिए क्या वादा किया है? (यहोशु १:८) ____ ____

L. पुराने नियम को क्यों खोजें?

१. क्योकी यह चीजे एक उदहारण के रुप मे हमारे लिए हुई और आदेश के रूप में हमारे लिए लिखी गयी, ताकी हम वही गलतीयों को न दोहरा सकें और गिर जाऐं। (१ कुरि १०:११,१२)

२. क्योंकी कई चीज़े प्रतिलिपी हैं परछाई है या उन आत्मिक चीज़ो की तरहा है जो नए नियंम में पाई जाती हैं, और इसी कारण हमे नए नियम को समझने में मदद करेंगी (इब्रा ८:५)

३. क्योकि हमारा विश्वास बनता है जब हम परमेश्वर की व्यवस्था जो उस के लोगों के लिए परने नियम मे है उस पर ध्यान लगाते हैं और जो वादे उसने उनके साथ किये, वे सब हमोक लिए मसीह के द्वारा दौहराए गए हैं, क्योकी उन्हों ने और भी अच्छी वाचा हमें दी है, जो और भी अच्छे वादो पर निरधारित है

(११ कुरि १:२०, इब्र ८:६)

पवित्रशास्त्र को लिखने और ध्यान लगाने पर परमेश्वर का जो महत्वपूर्ण नज़रीया है उस पर ध्यान दीजीए।

लिखिए व्यवस्थाविवरण १७:१८,१९ ______________________________

____

____

४. पवित्रशास्त्र की व्यख्या करना

A. अनुवाद के मुल सिद्धांतों की आवश्यक्ता पडेगी।

१. विपरित वचनों को समझाने के लिए, उदहारण के लिए, नीतिवचन १५:२९ और प्रेरितों १७:२७ की तुलना करीए।

२. शब्दो की आवाज़ मात्र से बहकने से बचाने के लिएं । उदहारण के लिए, यूहन्ना ६:५३-५६ पढने से आप को गलत अनुमान हो सकता है परन्तु यदी आप उसे मत्ती २६:२६-२९ के साथ जोड़ कर पढे तो आप समझेंगे।

३. कुछ वचनों मे व्यख्यातमक शब्दो को डालने के लिए। उदहारण के लिए, यीद हबक्कूक १:१३ मे किसी प्रकार का व्यख्यातमक शब्द नहीं डाला गया तो वह नीतीवचन १५:३ के विपरित होगा।

B. पवित्रशास्त्र के अनुवाद करने वाले के पास यह सब होने चाहिए:

१. एक मस्तिश्क जो पवित्रात्मा से भरा हुआ हो (भजन ११९:१८,१८,१३०; १ कुरि २:६-१६; इफि १:इफि १:१७,१८; याकूब १:५)

२. एक नम्र, पढ़ाने योग्य, पक्षपात रहित मन और दिमाग (मत्ती ५:३, ११-२५, लूक१ ८:१५,याकूब ४:६)

३. सही कारण, जो परमेश्वर और आप के जीवन में उसकी इच्छा से अच्छि तरहा वाकिफ हो (२ थिस २:१०, १ तिमों २:४, गगतिमो २:१५, ३:१-९ खास कर ७वी आयत)

C. पवित्रशास्त्र के अनुवाद के मूल सिद्धात

१. आप को पुराने नियम और नए नियम की सामान्ताऐ और भेदो को समझ लेना चाहीए। समान्ताऐ, भेदो के मुकाबने ज्यादा महत्व पूर्ण है। नया नियम पुराने नियम से ही निकलती है और कई तरीको से पुराने नियम का क्रम है। निम्न दी गयी आयतें दोनो नियमा की सामान्ताओं और भेदों के बारे में क्या बताती है; उन्हें लिखिए:

मत्ती ५:१७-१९ ....
मत्ती ५:२०-२२ ....
मत्ती ७:१२..........................
१ कुरिंथियों १०:११-१२..........................
११ कुरिंथियों १:२०..........................
गलतीयों ३:१९..........................
गलतीयों ३:२४-२५..........................
गलतीयों ५:१८..........................
इब्रानियों ८:५; १०:१..........................
इब्रानियों ८:६,१३..........................

२. चाहे जिस तरीक से नया नियम पुराने नियम का अनुवाद करे, उसे मानना है।

३. किसी एक वचन पर कोई सिद्धात नही बनाना चाहिए (यूहन्ना ५:३१-३९; ८:१६-१७)

४. महत्वपूर्ण सिद्धांतों को, केवल कोई एक ही प्रकार के नमूनें, आलंकारीक वर्णन या द्दष्टांतो पर आधारित न करें, परन्तु सीधी और मूलार्थक कहानियों और शिक्षा पर आधारित करें, पहिले वालों को सच्चाई बतलाने दें। (११तिमो ३:१६)

५. इस बात का निर्णय लीजीए की यह आयत क्या सब पर लागू हो सकती है या केवल उन पर जिन के लिए लिखी गयी है। उस आयत पर जो दूसरे संदर्भ है, उन के द्वारा पता लगाया जा सकता है की यह सब के लिए है या नही, परमेश्वर के वचन में यदि सफाई से नहीं बताया गया है, तो उस पर पहले से कोई दायरा मत बना लीजीए।

६. पवित्रशास्त्र का अनुवाद पवित्र शास्त्र से ही होना चाहीए। साराश में कहे गए वचनों का अनुवाद पूरे वचनो से होना चाहीए।

७. परमेश्वर का उस विष्य पर पूरा साराँश पता चलता है, चब उस विष्य पर सारी आयतों को जमा कर के एक दूसरे के साथ जोड़ा जाऐ, ताकी सच्चाई को सब तरफ से देखा जा सके।

८. वैसे सामन्य रुप में, पवित्रशास्त्र को उसके साधे, सामान्य, मूलार्यक रुप में स्वीकारना चाहिए, परन्तु आप जान ले की बाईबल में कुछ अमूलार्थक भाषा भी है। एक अंगूठा छाप सिद्धांत, मूलार्थक और अमूलार्थक को यहचानने का यही है की, शब्दों को, जब सामान्य और स्वभाविक रुप में दर्शाया गया हो तो उन्हे मूलार्थक रूप में ले और यदी शब्द को उस चीज़ से जोड़ दिया जाऐ जहाँ वो सामन्य रूप से नहीं पाऐ जाते हैं तो वे आलंकारिक है (उदहारण मत्ती २३:२४)

९. आप, नमूनों को सही तरीके से पहचानीए और अनुवाद करीए। नमूना, एक व्यक्ति या चीज़ हो सकती है जो की पुराने नियम मे एक छवी के रूप से बनायी गयी है, नए नियम के किसी न्यक्ति या चिज़ की जो नए नियम में नमूने के रुप में बताया गया है वह सचमुच में नमूना है। परन्तु, यदी आप उस के आगे जा कर आप ही अनुमान लगऐगे, तो आप अनिश्चित भूमि पर है (नमुने का उदहारण निर्गमन १२:१-२८, यूहन्ना १:२९, १ कुरिंथियों ५:६,७, और १ परतस १:९-१९, में मिलना है)

१०. जब आप दृष्टंतों का अनुवाद करें तो

अ) उस केद्र को दूँढीए जो यह दृष्टात को बताना चाहता है

ब) यह ज़रूरी नही की दृष्टांत के बाकी हिस्सा का कुछ अर्थ होगा (या जैसे लूका १८:१-८, में परमेश्वर को बईमान न्यायांदीश समझाजा सकता है)

स) यह जान जाईए की एक दृष्टांत किसी भी विष्य का केवल कुछ हिस्सा ही दर्शाता है,

और

द) समझ लीजीए की दृष्टांत केवल किसी बात को दर्शाते है, वे सीधे रूप में शिक्षा नहीं देते।

११. इस पुस्तक के शुरु मे बताऐ गऐ अनुसार बधुता के सिद्धात का उपयोग करें।

१२. इस पुस्तक के शुरु में बताऐ गए अनुसार, अनुपात के सिद्धांत का उपयोग करें।

१३. पहला कथन के सिद्धांत का उपयोग करीए, जो बताता है की क्योंकी परमेश्वर शुरु से ही अंत जानता है, पवित्रशास्त्र में किसी विषय के पहले कथन में वह सब मूल तत्व रहेगे उस विष्य के जो पवित्रशास्त्र में आगे पुष्ट किया गया है। उदहारण के लिए हृदय के विष्य को उत्पत्ती ६:५ से खोजना शुरु करीए।

१४. आगे के पृषठो पर बताए गए अनुसार, बाईबल का अध्ययन करने के लिए लामाड़ की तरीके का उपयोग करीए।

५. जब आप इस पुस्तक के अभ्यास को पूर्ण कर ले, तो दैवी प्रकाशन का ज्ञान कैसे पाऐं।

दैवी प्रकाशन का एक उदहारण यह है की जब आप बाईबल पढ रहे हों और उस मे से एक वचन आप की आँखों को भा जाए और आप को ऐसा लगे जैसे परमेश्वर कह रहे हों की 'यह अभी इसी वक्त तुम्हारे लिए है'। यह विश्वासी के लिए बहुमूल्य अनुभव हैं। परन्तु कईयों के लिए, यह अकसर नही होता। जब मैं बाईबल पढ़ता हुँ, तो दैवी प्रकाशन पाने के लिए सात चीज़े करता हुँ। सच्चाई और परिज्ञान पृष्ठो से निकलते है और एक समझ की वे मेरे जीवन में किस तरहा समा जाऐंगे यह मेरी आत्मा और प्राण में प्रवेश करती है। मुझे यह अनुभव बहुत प्यारा है और जब भी मैं पवित्राशास्त्र पढ़ता हँ तो इस के लिए भूखा होता हँ। इस कारण मे अपने आप को इन सात चीज़ो को कर के अपने आप को तैयार करता हुँ। इन चीज़ो को प्रार्थना पूर्वक ध्यान दीजीए और पहचानीए की इन मे से आप क्या करते है और क्या नही करते जब आप इस पुस्तक के अभ्यास को पूरा करे तो ध्यान दीजीए की इन मे से हर एक को आप करें और अपने नियम अनुसार प्रार्थना समय पर भी।

बाईबल अध्ययन

इस से चमक, दैवी प्रकाशान का ज्ञान, अभिषिक्त विचार मिलते है।

इन्हे मत करीए बाया दिमाग विद्या/ विवेकी मानवीय	परत्तु इन्हे करीए पूर दिमाग। ह्रदय ध्यान तगाना/ दैवी प्रकाशन
१. अस्वीकृत पाप को रखना	१. यीशु के खून मे साफ हो जाईए।
२. पूर्ण विचार धारना रखना	२. शिक्षा देने योग्य धारना रखना
३. स्वाधीन रहीएः मैं कर सकता हुँ	३. प्रार्थना करीएः परमेश्वर मुझे बातईए।
४. जल्दी पढ़ीए	४. धीरे पढीए, विचारीए ध्यान दीजीए।
५. विवेक और तारकित्ता पर भरोसा करीए।	५. अभिषिक्त विवेक, बहते चित्रो, संगीत और उपदेशों को मिलाईए
६. बिना किसी खास मकसद के पढीए।	६. ध्यान पूर्वक मकसद से पढीए।
७. अंदरुणी विचारों के लिए स्वय को महत्व दीजीए।	७. अंदरुणी विचारो के लिए परमेश्वर को महीमा दीजीए।

बाईबल अध्ययन के साथ क्रमों को विवरण :

१. परमेश्वर, मुझे अपने खून से साफ करः बाईबल के ध्यान लगाने का केद्र है दैवी दर्शन पाना, इसे आप मेंमने के लहु मे साफ होकर पवित्रात्मा के द्वारा पा सकते हैं। आपने जो पूरेव में दर्शन पाए हैं, उन को मानना होगा (मत्ती ७:६) और आप के जीबन के पापों का इकरार करना होगा ताकी अभी जारी दर्शन से न हठ जाऐ। (याशायाह ५९:१,२; १ यूहन्ना १:९)

२. परमेश्वर, मुझे पूर्ण रुप से शिक्षा देने योग्य बनाएगाः दैवी दर्शन वे ही पाते है जो नम्र स्वभाव रखते है और यह घमन्डि और अहंकारी को नही मिलता। इस कारण परमेश्वर के समक्ष खुला और नम्र स्वभाव रखीए, ताकी, वे उन विचारों पर जो आपके मन में हैं उन पर और अधिक रौशनी डाल और जैसा वह चाहे उन्ह बदल सके। (याकूब ४:६,

२पतरस १:१९)

३. परमेश्वर मैं अपनी इंद्रियों को अपने आप नही अपयोग करूँगाः आप अपने आप कुछ नहीं कर सकते परन्तु केवल वही जो आप आत्मा को करते देखते या सुनते हैं (यूहन्ना ५:१९,२०,३०)। आप का दिमाग उपयोग में लाने के लिए नहीं है, बरन इसलिए है की आप उसे परमेश्वर क सौप सके ताकी वह उस में अभिषिक्त विचार और दैवी र्दान भर सके (नीती ३:५-७, रोमि १२:१,२)। यदी आप अपने दिमाग को स्वय उपयोग मे लाऐ तो यह मरे हुए काम हैं। (इब्रा ६:१,२)

४. परमेश्वर मैं प्रार्थना करता हुँ की मेरी मन की आँखे खुल जाएः जैसे जैसे आप पढ़ते हैं तो धीमे हो जाईए, वचन को अपन मन और दिमाग में पीस लीजीए,
प्रार्थना करीए की परमेश्वर आप को बुद्धि की आत्मा दृष्टि दृष्य और उस के ज्ञान का दैवी प्रकाश दे (इफी १:१७,१८; भजन १९:१८)

५. परमेश्वर, मै अपनी योग्यताओं को विचारो को सौपता हुँ और यह विचार करता हुँ की आप की आत्मा इन में भर कर बहने लगेः ध्यान लगाने का अर्थ परमेश्वर को सौंप दे ताकी वह उन को भर कर उन का अपयाग करे। इस में आप की बाँयें दिमाग के विचार की क्षमता और दाहीने दिमाग की देखने की योग्य शामिल है। परमेश्वर की नही को देखे (यानी आत्मा का बहाव) की वह दोनो गोलार्धो का
मार्गर्दान करके उन को भर दे, ताकी आप अभिषिक्त विचार और स्वपन और दर्शन पा सके। (यूहन्ना ७:३७-३९)। इस में, संगीत, बढबढाना, बोलना या लिखना आप का साथ दे सकता है जब आप खोलने के क्रम से गुज़रे (२ राजाओं ३:१५)

६. परमेश्वर, जिस समस्या से मैं गुजर रहा हुँ, उस का हल दिखाः केद्रित ध्यान, मन और दिमाग की अधिक शक्तियों को उभारता है। उदहारण के लिए, इस बात में फरक देखीए जब सूरज की किरण सीधे कागज पर पढती है और जब वृहणयन्त्र से होकर सूरज की किरण कागज पर पढ़ती है। केंद्रित शक्ति इतनी तीव्र किरण उत्पन करती है की वह कागज को जला देती है। जब आप नयी समझ और अनुशासन के भूखे होंगे, तब वह भूखा और खोजी मन आप को वह चीज़ें दिखाऐगा जिन्हे आप सामान्य रुप से नहीं देख सकते। (मत्ती ५:६)

७. परमेश्वर, जो आप ने मुझे दिखाया उस के लिए आप का धन्यवाद हैः जब इस बारे में आप जान जाऐ, की दैवी दर्शन अन्दर वास कर रही पवित्रात्मा से मिला है तो, जो दिखाया या बताया गाय उस के लिए परमेश्वर की महिमा करीए। (इफि ३:२१)

ध्यान लगाना के इब्रानी और यूनानी परिभाषा :

स्टागंस एगस्हास्टिव कानकर्देनस के मुताबिक कई ऐसे इब्रानी और यूनानी शब्द है जिन का आर्थ पुराने और नए नियम के शब्द ध्यान लगाना से है। पुराने नियम में इन शब्दों की स्ट्राग की गिनती हैः १८९७, १९००, १९०१, १९०२, ७८७८, ७८७९, ७८८१, नए नियम की गिनती है ३१९ और ४३०४.

स्ट्रागस ऐगस्हास्टिव कानकार्द्रेंस की सुच के सूची के मुताबिक, ध्यान लगाने का मूलार्थ हैः बड़बड़ाना, अपने आप से बात करना, और यह तेज; बोलना, बात चीत करना, बकवाद, अस्पष्टं उच्चारण, गुराना, विलाप करना, बातुनीपने बड़बड़ाने की आवाज नि कालना, जसे संगीत की धुन, पढ़ना; विचारना, दिमाग में घुमाना, सोचना, प्रार्थना करना, प्रार्थना, प्रतिबिम्ब भाक्ति;

उपर्युक्त सूची में से बायें अर्धगोल यह हैः पढ़ना, दिमाग मे घुमाना अस्पष्ट उच्चारण, बड़बड़ाना, बातचीत बोलना, बात करना बातूतीपन (टिप्पणीः विचार और बात चीत बायां दिमाग है)

उपर्युक्त सूची में से दाहिने अर्धगोल के कार्य यह हैं, सोचना, संगीत की धुन, विलाप करना, बकवाद (टिप्पणीः फुल्लर थियोंलौजिकल सैमिनरी के प्रयोगो के मुताबिक, जीभ से बोलना, दाहिने अर्धगों मे होता है। चित्र संगीत और भावनाऐ भी दाहीने दिमाग के है।)

हृदय (यातीसरा दिमाग) के कार्य जो उपर्युक्त सूची मे हैः प्रार्थना करना, प्रार्थना, भक्ति, प्रतिबिम्ब, विचारना (यानी, आत्मा के बहाव से विचार को जागरित करना - अफि १:१७,१८)

हर वक्त जब कोई बाईबल पढ़ता है और किसी विष्य पर ध्यान लगांता है तो जो वचन उजागर होता है उस से ध्यान लगता है। उजागर होने का अनुभव तब होता है जब परिज्ञान पुष्ठ पर से उच्छलता है और आप की दोनो आँखो के मध्य मे मारता है।

ध्यान लगान पूरे दिमाग और हृदय का कार्य है, और पढ़ाई अकसर केवल बाये अर्धगोल का कार्य है।

मैंने एक पादरी से, जो की दिमाग अनुराग निर्दाक परिक्षा मे अत्यंत बायाँ दिमाग साबित हुए थे (२,) पूछा की वे बाईबल कैसे पढते है। क्या वे चित्रों का अधिक प्रयोग करते हैं?

उन्होने जवाब दिया कभी नहीं। फिर मैंन एक दाहिने दिमाग पादरी (६,७) से बूछा की वे बाईबल कैसे पढ़ते हैं। क्या वे चित्रों का अधिक प्रयोग
करते है?

उन्होंने कहा हमेशा। जब वे पढ़ते थे, तो चित्रों की नदी, का बहाव उन्हे, मिलता था। टिप्पणी, ५.० संम्पूर्ण रुप से संतुलित माना जाता है।)

क्या आपने देखा की एक बायां दिमाग वाला व्यक्ति, बाईबल को दाहिने दिमाग वाले व्यक्ति से अलग तरीके से पढेगा? हम इस बात को भूल जाते है, क्योकी हम समझते है की हर कोई हमारे तरीके से पढ़ता है। यह सच्चाई से अधीक दूर नहीं है। बायेम दिमाग वाले व्यक्ति आदिक रूप में तर्कशास्त्र, विचार और विधटन को प्रयोग कर पढ़ते हैं। दाहिने दिमाग के लोग आदि रूप में चित्रों और बहाव को विचार विधटन, बाबचीत और गीत को मिला कर पढ़ाई करते हैं (या हम कह सकते हैं, ध्यान लगांते हैं।)

पढ़ाई के लिए पश्चताप: सो, ध्यान लगाते में पूरे दिमाम द्वारा, मार्ग दर्शन दिया जाता है, परन्तु पढ़ाई में आदि रूप से बायाँ दिमाग का प्रयोग होता है, और उस पर स्वंय खुद का नियत्रण होता है। वाह, क्या ही चकित करने वाली जानकारी है विशेष तौर से उस वक्त जब हमें पता चलता की बाईबल केवल पढाई पर दबाव नहीं डालती, परन्तु २० बार ध्यान लगाने पर दबाव डालती है। यदि आप किगं जेम्स वर्जन में पढ़ाई शब्द का तीन जगाहों पर यूनानी अनुवाद देखेंगे तो आप पाऐंगे की यह अनुवाद सही नहीं है। सो मैं जो की बायाँ दिमाग वाला व्यक्ति हुँ, पढ़ने के लिए की अब केवल ध्यान लगाऊँगा जब परमेश्वर के वचन को पढूगा या कोई भी विषय जो परमेश्वर मुझे देना जाहता है की मैं खोजूँ।

एक और महान सहायक देखने के लिए पवित्रशास्त्र को लिखना। :

जब आप किसी वचन को लिखते या टाईप करते हैं, तों आप उन शब्दों को खोज निकालैंगे जिन्हें आप हो सक्ता है चूक गए हों।

निम्न वह न्याय है जो परमेश्वर ने नए राजाओं को उस वक्त दिया जब वे राजा घोशित कर दिए गए और वे अपने सिंहासन पर विराजमान करने आत्मिक रहे थे:

"और जब वह राजगद्दी पर विराजमान हो, तब इसी व्यवस्था की पुस्तक, जों लेविय याजकों के पास रहेगी उसकी एक नकल अपने लिए कर ले।" (व्यवस्था १७:१८)

क्योकी हम भी राजा और पादरी हैं, तो क्या हमें कुछ कम करना चाहीए (ग पतरस २:९)? आईए हम पवित्र शास्त्र को लिखना अपने जीवन का मुख्य भाग बनाऐ।

पढ़ाई

यूनानी / पाश्चिमी

"मानसिन इंद्रियों का उपयोग कर ज्ञान को प्राप्त करना। (वैबस्टर)

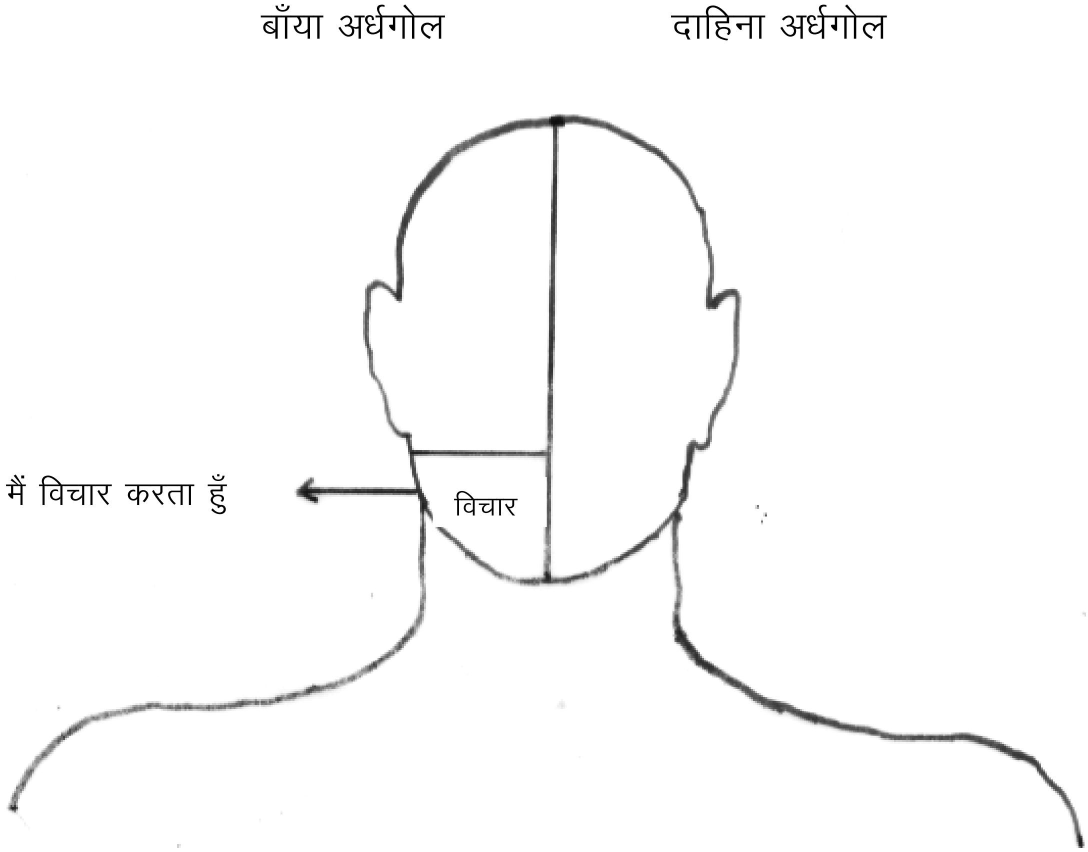

पढ़ाई (मेरे दिमाग के एक अर्धगोल के एक भाग का उपयोग)

१. क्या कहीं पवित्रशाश्त्र में कहीं नहीं लिखा गया है (२ तिमोथी २:१५ के जे वी बाईबल में यह गलत अनुवाद है)

२. क्या स्वंय कार्य कर रहा है (मानवत एक झूठा परमेश्वर)

३. क्या स्वंय विवेक बुद्धि का प्रयोग कर रहा है (हेतुवादी एक झुठा परमेश्वर)

४. ज्ञान के नतीजे नीचे से - सांसारिक स्वभाविक, शैतानी (याकूब ३:१५)। उदहारण के, लिए, विवेक बुद्धि ने पतरस को परमेश्वर की इच्छा को विरुध किया (यूहन्ना १८:१०,११)

पढ़ाई बाईबल के इन सिद्धांतो को तोड़ती है

१. गलतीयों २:२० मैं स्वंय को सूली परा चढ़ाता हुँ और वह अब जीवित नहीं है।

२. रोमियों १२:१ मैं अपनी इंद्रियों को परमेश्वर को सौपंने के बजाए स्वंय अपने योग कर रहा हुँ।

३. यशायाह १:१८ मैं स्वंय से विवाद कर रहा हुँ, बनिसबत इस के की परमेश्वर से विवाद करूँ।

४. उत्पती ३:५ अदन की वाटिका के लालच का शिकार मैं बान गया हुँ क्योंकी मैं सही और गलत जानता हुँ"।

ध्यान

इब्रानी / लामाड

" बड़ बड़ाना; स्वंय से बात करना उस कारण तेज़ बोलना; बात चीत, बकबाद, नातुनीपन, अस्पष्ट अच्चारण, गुराना, विलाप करना, बड़ बड़ान की आवाज़ निकालना से संगीत की धुन; पढ़ना, विचारना, दिमाग मे छुमाना, सोचना, प्रार्थना करना, प्रार्थना, प्रतिबिम्ब, भक्ति। "

(स्ट्रांगस एकसांह एगसाहसटिव का नकोर्डेंस)

बाँया अर्धगोल दाहिना अर्धगोल

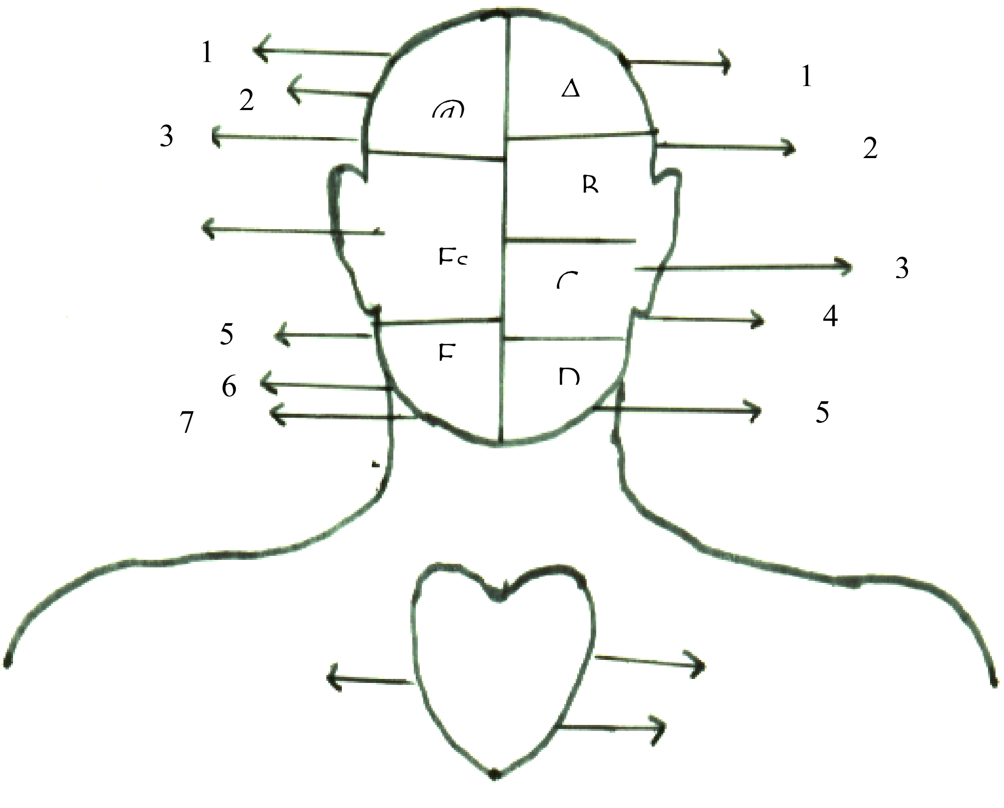

बाया अर्धगोल

बात चित - बोलना, बातचित करना ब्रातुनीपन, स्वंय से बोलना, बड़बड़ाना, अस्पष्ट उच्चारण, गुराना।

लिखित भाषा - "देखीए" लिखने के माध्यम से (व्यवस्था १७:१८)

विवेक - पढ़ाई, चित्रों शांति व बहाव द्वारा दिमाग मे धुमांना, परमेश्वर के "साथविवाद" लूका १:१-३;११ तिमोंथी ३:१६)

दाहिना अर्ध गोल

संगीत - संगीत बनाना

कला की जानकारी - विलाप (भावमय उत्तर)

अंतर्ज्ञान - विचारना, ध्यान करना दर्शन देखना।

भक्ति जताना

प्रार्थना   बड़बड़ाना अन्य भाषा बोलना

ध्यान (मेरे दिमाग के दोनो अर्धगोनो के हर भाग के परमेश्वर द्वारा उपयोग, जब वह उन्हे भरे और उसकी आत्मा जो मेंरे हृदय द्वारा बहे। :

१. के जे वी बाईबल मे १८ बार लिखा गया हैं।

२. क्या परमेश्वर व्यात्ती के अंदरकार्य करता है।

३. हृदय और दिमाग जो परमेश्वर को सौंपे गए हैं, क्या वह उन्हें दैवी प्राकशन दे रहा है।

४. उपर्युक्त से ज्ञान के नतीजे - शुद्ध, शांतीमय, नम्र (याकुब ३:१७)

ध्यान लगाना बाईबल के निम्म सेद्धातों का प्रयोग :

१. गलतीयों २:२० मैं मसीह को मेरे द्वारा जीवित रखता हुँ।
२. रोम १२:१ मैं अपनी बाहारी इंद्रियों को अंदर बास कर रही आत्मा को सौंपता हुँ (बहना - यूहन्ना ७:३८)

३. यशा ११:१२ - जब परमेश्वर से विवाद करता हुँ, तो मै, ज्ञान समझ और बुद्धि की आत्मा पाता हुँ।

४. यूहन्ना ५:१९.२०,३०, - मैं उस तरहा जी रहा हुँ जैसे यीशु जीया करते थे, दैवी प्रेरणा के द्वारा, वह करते हुए जो मैं अपने पिता को करते देखता हुँ।

@µ³yù	\ÛËÁÕÁÌÞ -sË³ØgRiª«sVV	xqsLi.	NSÌÁª«sVV	ÇÁLRiVgRiV xqsLixmnsVÈ
11	Aµ¡¶NSLi²R¶ª«sVV 1c10 @µ³yù ¸ R¶Vª«sVVÌÁV	2008	Aµ¡¶NSLi²R¶ª«sVV (4004 úNUP.xmsp) ©«sVLi²T¶ @úËØ¥¦¦ª«sVV ÇÁ©«s©«sª«sVV ª«sLRiNRPV (1996 úNUP.xmsp)	¿RÁL¡iú»R½ ª«sW »R½©«s©«sV ALSµ ÍÜ[ÊÁ²R¶ ÇÁ©yLigRiª«sV ©µ¶[ª«so²R ªyLiÀÁLi¿RÁ
865	Aµ¡¶NSLi²R¶ª«sVV 12 IIµ¡¶©«s ª«sX»yòLi»R½ª«sVVÌÁV, NSª«sù LRi¿RÁ©«sª«sÌÁV ª«sVL¡i ¸ R¶VV úxmsª«sNRPòÌÁV	1469	@úËØ¥¦¦ª«sVV zmsÌÁVxmso ©«sVLi²T¶ (1946 úNUP.xmsp) ®©sÊÁWNRP©µ¶õÇÁLRiV Â¿Á[»R½ Â¿ÁLRi xmsÈíÁÊÁ²T¶, ¹ ¸ ¶VLRiWxtsQÛÍÁ[ª«sVV 477 úNUP.xmsp.ÍÜ[©yaRP©«sª«sVgRiV ª«sLRiNRPV	@-s®µ³¶[¸ R¶V úxmsÇÁÌÁ xqsª
53	FsúÇØ, ®©sx¤¦¦¦ª«sWù, Fs}qsòLRiV, x¤¦¦gæRiLiVV, ÛÇÁNRPLSù, ª«sVÍØNTP ª«sVL¡i ¸ R¶VV 400 xqsLiª«s»R½=LRiª«sVVÌÁ ª«s°©«s NSÌÁª«sVV	422	426 úNUP.xmsp. ©«sLiµR¶V N]{[Li{xtsv ©µ¶[ªyÌÁ ¸ R¶Vª«sVV xmso©«sL` ¬sLSøßãª«sVV©«sNRPV xqsª«sVø¼½LiÀÁ©«sµ¡¶ ©ªsVVµR¶ÌÁVN]¬s 4 úNUP.xmsp. ©«sLiµR¶V úNUPxqsVò ÇÁ©«s©«sª«sVV ª«sLRiNRPV	
89	©yÌÁVgRiV xqsVªyLRiò xmsoxqsòNRPª«sVVÌÁV	33	úNUPxqsVò ÇÁ©«s©«sª«sVV ©«sVLi²T¶ ª«sVLRißãª«sVV ª«sLRiNRPV	

171	@F~.NS. ©«sVLi²T¶ úxmsNRPÈÁ©«s ª«sLRiNRPV.	+1972	(¹, ¶W¥¦¦¦©«sV 20iM22) 29 úNUP.aRP. ©«sVLi²T¶ úNUPxqsVõ ¦LiLi²R¶ª«s LSNRP²R¶ xmsLRiùLi»R½ª«sVV	ª«sV©«s-sVLiNR @ÈÁVª«sLiÉ úaRPª«sVÌÁ FsµR¶VL]ä©«sV¿RÁ (L] [ª«sW.11iM

बाईबल का उत्तम पूर्ण दृष्य :

बाईबल को खोलने के लिए अधीक चाबीयाँ

अ) उत्पदक - परमेश्वर (२ तिमो ३:१६, १७; ११ पतरस १:२०,२१)

ब) कारण (११ तिमो ३:१६,१७)

१. शिक्षा के लिए
२. निन्दा के लिए
३. शोधन के लिए
४. धार्मित्त्का में उपदेश के लिए, ताकी परमेश्वर का हर व्यक्ति थोग्य हो और हर अच्छे काम के लिए तैयार रहे।

स) लेखक - ३५-४० अलग अलग व्यक्ति

द) लेखकों के लिखने की अवधि - १६०० वर्षों से अधिक

इ) सूचना

१. इतिहास में सारे व्यात्तियों से, अधिकतर, पाठ, यीशु के बारे में बताते हैं।

२. तीन चौथाई (८७६) बाईबल के पाठ पुथ्वी के एक चौथाई (१४६९) वर्षौं के इतिहास को बताते हैं।

पुराने नियम का उत्तम पूर्ण दृश्य :

<table>
<tr><th>##</th><th>पुस्तक का नाम</th><th>लिखन् का दिनांक</th><th></th><th></th></tr>
<tr><td>1.</td><td></td><td></td><td rowspan="5">मूल न्याय</td><td rowspan="17">न्याय और इतिहास</td></tr>
<tr><td>2.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>3.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>4.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>5.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>6.</td><td></td><td></td><td rowspan="9">जंगल में जाने से पहले का लेखा</td></tr>
<tr><td>7.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>8.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>9.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>10.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>11.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>12.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>13.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>14.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>15.</td><td></td><td></td><td rowspan="3">जंगल में जाने के बाद</td></tr>
<tr><td>16.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>17.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>18.</td><td></td><td></td><td rowspan="5">भितरी जीवन</td><td rowspan="5">पध्य</td></tr>
<tr><td>19.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>20.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>21.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>22.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>23.</td><td></td><td></td><td rowspan="3">मुख्य भविष्यवक्ता</td><td rowspan="3">भविष्यवाणि</td></tr>
<tr><td>24.</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>25.</td><td></td><td></td></tr>
</table>

26.				
27.				
28.				
29.				
30.				
31.				
32.				
33.			छोटे भविष्यवक्ता	
34.				
35.				
36.				
37.				
38.				
39.				

पुराने नियमा को खोलने के लिए अधिक चाबीयाँ।

अ) उत्पादक - बीस जाने हुए और कई अनजाने ।

ब) लिखने का दिनांक - १००० वर्षों से अधिक, १४०० बी. सी. से ४०० बी सीतका

स) विषयसूची - इस्त्राएल का इतिहास

द) कारण - पापी मनुष्य को अपने पास वापस ले आने के परमेश्वर के शुरूआती कार्य।

पुराने नियम की समय रेखा

zms»R½LRiVÌÁV Būry¹, ¶[VÌÁV ®µ¶[aRPª«sVV©«sV |¤¦¦¦¿RáèLjiLi¿RÁVÈÁ	xq ª«sVW¹, ¶[VÌÁViM ūxmsª«sNRPòÌÁ A®µ¶[aRPª«sVV @ª«sVÌÁVNRPV µk¶ORPQ \®ªsË³ÏÁª«sª«sVV	LSÇÁùª«sVV -sË³ÏÁÑÁLi¿RÁVÈ Â¿ÁLRixmsÈÏÁÊÁ²R¶VÈÁ xmspLRi*zqós¼½NTP Â¿ÁLRiÍÜ[70 ª«s¿R xqsLiª«s»R½=LR ª«sV Â¿ÁLRixmsÈÏÁÊÁ²R¶VÈÁ
ūNUP.xmsp. 4000 ūNUP.xmsp.	1450 1000	700 400
Aµyª«sVV, ©¯ªyx¤¦¦¦$ AūËØ¥¦¦¦ª«sVV Bry=NRPV ,R¶WN][ÊÁV ¹, ¶[Vlqsxmso ®ªsV}tsQ	©yù, R¶Wµ³¡¶xms»R½VÌÁV, ūxmsª«sNRPòÌÁV, LSÇÁÙÌÁV (@F~.NS.13M 20, 21)	ÊÁÊÁVÍÜ[©«sVÍÜ[lLiLi²R¶V g][ū»R½ª«sVVÌÁNRPV Â¿ ,R¶VWµy 70 xqsLiª«s»R½=LRiª«sVVÌÁV

ÛÍÁ[ÅÁ©«sª«sVV I - VIII µy*LS ËØx¤¦¦¦ù xmsLjibdP

ÛÍÁ[ÅÁ©«sª«sVV µy*LS I, C NSÌÁª«sVV xmsLi¿RÁ NSLi²R¶ª«sVVÌÁV xqsLiÊÁLiµ³¡¶LiÀÁ©«s-s.	C NSÌÁª«sVV ÛÍÁ[ÅÁ©«sª«sVV II ©«sLiµR¶V GNUPNRPX»R½ LSÇÁùª«sVV, ÛÍÁ[ÅÁ©«sª«sVV IV ©«sLiµR¶V NSª«sù LRi¿RÁ©«sÌÁV B-sV²T¶ D©«sõ-s.	ÛÍÁ[ÅÁ©«sª«sVV µy*LS -sË³ÏÁÑÁLi¿RÁÊÁ LSÇÁùª«sVV, ÛÍÁ[ÅÁ©«sª«sVV lmsµôR¶ ūxmsª«sNRPòÌÁ

xmsoxqsòNRPª«sV
B-sV²T¶ D°«sõ-s.

ûNUPxqsVò bPaRPVª«sogS ÇÁ¬søLiÀÁ©«s BûaS¹, ¶[VÌÁ
¿RÁLjiû»R½

टिप्पणीयाँ

उत्पत्ती

##			वर्ष		टिप्पणीयां
1.		आदम	930+	अब्राह्म के पूर्वज	उत्पादक : मूसा (लूका २४:४४) लिखने की तिथी:१४५२ ई.पू. विषय: प्रारम्भ की पुस्तक समय सीमा: मनुष्यों के समय में बताई गयी है वर्षों में नहीं। पुस्तक ४००४ ई.पू. से १६३५ ई.पू. का समय पीरा करती है। मुख्य शब्द: प्रारम्भ, पीढीयां, वाचा अब्राह्म से वाचा: १. विशाल राज्य २. संसार को आशिषित कर ३. भूमि ४. एक
2.					
3.					
4.					
5.					
6.		नूह	950		
7.					
8.					
9.					
10.		राश्ट्रों का जन्म			
11.					
12.		अब्राह्म	175	अब्राह्म का परीवार	
13.					
14.					
15.					
16.					
17.					
18.					
19.					
20.					
21.					
22.					
23.					
24.		इस्साक			
25.					

26.					पुत्र ५. खतना व्दारा दृढ करना मुक्तिः यह आवश्यक है यह तराका है इसके पूरा होने का क्रम शुरू हो गया है - यह प्रकाशितवाक्य में अन्त के विपरित है।
27.					
28.					
29.					
30.					
31.					
32.		याकूब			
33.					
34.			145		
35.					
36.					
37.					
38.					
39.					
40.					
41.					
42.					
43.					
44.		यूसुफ			
45.					
46.			110		
47.					
48.					
49.					
50.					

विवाद के प्रश्न - उत्पत्ती

१ अ) उत्पती के पहले पाठ में से उन चीज़ो को लिखी जिन्हें परमेश्वर ने सिर्जा जिसके

विपरित "बनाया" या पृथ्वी को उत्पन्न करने दिया । (सिर्ह का अर्थ है की किसी चीज़ को पैदा करना । बनाने का अर्थ है की जो उपस्थित है उस में से कुछ व्यवस्थापन करना।)

ब) किसी परिणाम या निरुपण को लिखीए।

२. उत्पत्ती ३:१-६ में हव्वा के प्रलोभनों को जाँचीए।

अ) २:१६,१७ मे परमेश्वर के कहे हुए शब्दो को और किस तरहा शैतान और हव्वा ने उन का अशुद्ध उद्धारण किया, लिखीए।

ब) शैतान, किस तरहा ललचाता है, उन सिद्धातों को लिखीए।

स) ललचाने वाले को जवाब देने में हव्वा ने कई गलतीयाँ करीं जिसके कारण उस ने पाप किया। वचन तीन और छः को ध्यान से देखीए और कुछ सिद्धातो बताईए जिन से हम प्रलोभन मे आ सकते हैं या बच सकते हैं।

३. उत्पत्ती २:२१-२४ हमें पहले आदम और उसकी दुल्हन के बारे में बताती हैं। मसही को अन्तिम आदम कहा गया (१ कुरि १५:४५) और कलीसिया, उसकी दुल्हन (इफी ५:२४-३२)। इन रिश्तो की उन पर वाद विवाद करीए, जितना हो सके उतना पवित्रशास्त्र का उपयोग कर के उन विचारो को जोड़ीयों: एक योग्या दुल्हन की कमी, एक साथ राज करना और इस तरहा कुछ और ।

४. पवित्रशास्त्र मे " जीवन के वृक्ष" को दूँढीए, अपने विरुपणों और परीणामों पर विवाद करीए।

५. मुक्तिदाता संम्बधि भविष्यवाणीयों को खोजीए।

६. उत्पत्ती ३:१५ पहली मुक्तिदाता संम्बंधित भविष्यवाणी है और यह "स्त्री के वंश" (मसीह) और शैतान के बीच जो बैर चला आ रहा है उसे दर्शाता है। पूरी उत्पत्ती मे इस बैर को खोजीए। (आने वाले हफ्तों में हम उसे पूरी बाईबल में खोजेगे)। उदहारण के लिए उन वृतातों, बुरे व्यक्ति और/ या देशों पर ध्यान दीजीए, जिन का उपयोग कर शैतान उन

लोगो को नाश करना चाहता है जो वंश को ले कर चल रहे हैं।

प्रकाशितवाक्य १२:१-५ हमे शैतान और इस्राएल (स्त्री) में चल रहे यूद्ध के बारे में बताता है ।

७. उत्पत्ती २२:१-१८ में अबराह्म की परिक्षा की कहानी को ध्यान से पढीए।

अ) इस परिक्षा का कारण क्या था?
वचन १२ और मत्ती १०:३७, २२:३७, ३८ को ध्यान से पढीए। इन से आप को जवाब मिलने में आसानी होगी।

ब) पूरी परिक्षा मे अब्राहम का स्वभाव केसा था ? (देखीए इब्रानीयों ११:१७-१९ और अत्पत्ती २२:५,८)

८. इसहाक और इश्माएल की तुलना कीजीए। गलतीयों ४:२२-३१ और दूसरे उपयुक्त संदर्भों को देखीए। न्याय और अनुग्रह, स्वंय प्रयत्न और दैवी प्रारंम्भ आदी के बीच के अंतर पर भी ध्यान दीजीए।

९. उत्पत्ती की पुस्तक कयों पूरे २००० वर्षों में सार मनुष्यों मे केवल छः व्यक्तियों को अलग कर उन की कहानीयाँ बताती हैं?

१०. यह बात बतायी गयी है की परमेश्वर या तो सब का प्रभु है या तो वह प्रभु नही है। इस वाक्य को और रोमियों ८:२८ को युसुफ के जीवन से मेल कर के देखीए। इस मे उत्पत्ती ४५:४-९ और ५०:२० को जोड़ोए।

११. यूसुफ के जीवन और यीशु के जीवन मे समान्ताऐं देखना दिल्चस्प है। जितनी मिल सकती है उतनी लिखीए, जितना हो सके उतने संदर्भ का प्रयोग करीए (युसुफ को एक प्रकार का मसीह कहा गया है)

१२. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

निर्गमन

<table>
<tr><td>##</td><td></td><td></td><td></td><td>वर्ष</td></tr>
<tr><td>1.</td><td></td><td rowspan="6">मूसा की तैयारी</td><td rowspan="18">परमेश्वर का मिस्त्र से बचाये जाना</td><td rowspan="12">१५७१ ई.पू.

१४९१</td></tr>
<tr><td>2.</td><td></td></tr>
<tr><td>3.</td><td></td></tr>
<tr><td>4.</td><td></td></tr>
<tr><td>5.</td><td></td></tr>
<tr><td>6.</td><td></td></tr>
<tr><td>7.</td><td></td><td rowspan="6">दस विपत्तियां</td></tr>
<tr><td>8.</td><td></td></tr>
<tr><td>9.</td><td></td></tr>
<tr><td>10.</td><td></td></tr>
<tr><td>11.</td><td></td></tr>
<tr><td>12.</td><td></td></tr>
<tr><td>13.</td><td></td><td rowspan="2">निर्गमन</td><td rowspan="12">१४९१</td></tr>
<tr><td>14.</td><td></td></tr>
<tr><td>15.</td><td></td><td rowspan="4">विरान का अनुभव</td></tr>
<tr><td>16.</td><td></td></tr>
<tr><td>17.</td><td></td></tr>
<tr><td>18.</td><td></td></tr>
<tr><td>19.</td><td></td><td rowspan="2">गुण दोष न्याय</td><td rowspan="6">परमेश्वर का सिनाए पर्वत पर न्याय बनाना</td></tr>
<tr><td>20.</td><td></td></tr>
<tr><td>21.</td><td></td><td rowspan="4">जाब्ता दिवानी</td></tr>
<tr><td>22.</td><td></td></tr>
<tr><td>23.</td><td></td></tr>
<tr><td>24.</td><td></td></tr>
</table>

25.		विधिपूर्वक न्याय		
26.				
27.				
28.				
29.				
30.				
31.				
32.		न्याय का तोडा जाना और दुबारा दिया जाना		
33.				
34.				
35.		वाचा के तम्बू का बनाया जाना		
36.				
37.				
38.				१४९० ई.पू.
39.				
40.				

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियां :

उत्पादक : मूसा (१७:१४; २४:४)

विषय : इस्राएलियों का मिस्र के बंदुत्व से छुटकारा

मुख्य शब्द : मुक्ति

मुख्य वाक्य : जैसा की मूसा को परमेश्वर ने आज्ञा दी

विवाद के प्रश्न - निर्गमन :

१. फसा की भेड को हमारे उद्धारकर्ता मसीह का एक प्रकार समझ कर विवाद करीए। निर्गमन १२:१-२८, यूहन्ना १:२९, १कुरिंथियों ५:६,७, १ पतरस १:१८,१९ का प्रयोंग करीए और इन के अलावा और जो भी आप दूढ सकते है। प्रकार एक व्यक्ति या वस्तु है पुराने नियम मे जीस के बारे में नया नीयम बताता है की वह उस व्यक्ति या वस्तु का पहलेसे बताया गया है। पुराने नियम के प्रकार को एक शिल्पकार के नक्शो की तरहा बताया गया है और नये नियम में उस बात का पूरा होना, एक इमारत को पुर्ण रुप बना लेना के रुप मे दर्शाया गया है।

२. मसीह के वंश को नाश करने की शैतान की कोशिश को खोज को जारी रखीए।

३. परमेश्वर के और उस के सेवको के विरुद्ध, इस्राएलीयों के बड़बड़ाने की सूची बना लीजीए, परमेश्वर के उन को दिए गए जबावो को भी लिख लीजीए। संदर्भ दीजीए और अपने मसीही जीवनों में उन का प्रयोग की जीए। (यह क्रिया गिनतीयों तक चलेगी)।

४. परमेश्वर ने न्याय क्यो दिया?

(गलतीयों पाठ तीन और चार देखीए; रोमियों ९:३० - १०:११ और मत्ती ५:१७-२० के साथ साथ और अन्य संदर्भ भी देखीए)

५. पवित्रस्थान और उसके आंगनों का चित्र बनाऐं, हर भाग की चल सामग्री भी बताईए (निर्गमन २५-२८, ३५-४०)।

६. पवित्रस्थान की हर वस्तु के कई महत्वपूर्ण अर्थ निकलते है (उदहारण के लिए वे परमेश्वर की ओर हमारे नज़रीय हो सकता है या मसीह के कई व्यक्तित्व और कार्य भी हो सकते है)। एक संम्भव अर्थ को चुनिए और साराश में चल सामग्री के हर भाग पर विवाद करीए और जो अर्थ आपने निकाला है उस से इस का क्या अर्थ निकलता है।

७. परिज्ञानों विचारों प्रश्नों और निजी उपयोंग जो पवित्रात्मा आप को जीवन में कर रहा है, इन सब को लिख लीजीए।

निर्गमन के चकित कर देने वाले सच :

गिनती १:४५,४६ = बीस के ऊपर के आदमी ६००,००० थे।
आदमी ६००,०००
स्त्रीयाँ ६००,०००
बच्चे २,४००,०००

कुल मिलाकर ३,६००,०००

अगर हर परिवार ने छः जानवर लिए हों तो उनकी संख्य ३,६००,००० हो जाती है।

अधिक्रित क्षैंत्र

५०'X ५०' परीवार
५०'X ५०' परीवार के पशुओं का समुदाय
कुल = १०.५ X १०.५ मील

लाल समुद्र को टापना दो सौ की कतार, २.५ मील प्रती घण्टा = १२ घंटे, १५

मिनट

सेना की टुकड़ी ३०.७५ मिल तक जंगली स्थान तक फैली हुई थी।

मन्ना

हर व्यक्ति को एक ओमेर (लगभाग एक किलो ग्रमों)
कुछ आधिक भी रह गया था, तो हम देखते हैं।

मनुष्यों के लिए	= १२३, ००० कयु विक फीट
अधिक (अंदाजा)	= ६१, ५०० क्यु बिक फीट
कुल	= १८४, ५०० क्यु बिक फीट
पशुओं को जोड़कर	= ४६१, २५० क्यु बिक फीट

(अंदाज २.५ हर व्यक्ति)   ६४५, ७५० क्युबिक फीट

कुल या १६० डिब्बे भरी कारें

पानी - कम से कम

तीन गैल्लन / हुरदिन / हर व्याक्ति छः गैलन / हर दिन/ पशु १०,०००,००० गैलोन स/ हर दिन = १०८० रेल सड़क की टैंक गाडीयाँ

अन्त

इस्त्राएलीयों को हर दिन खाना और पानी देने के लिए एक गाडी जिस में १,२४० डिब्बे हो जो ९.५ मील लम्बी हो

परमेश्वर ने यह सब ४० वर्षों तक दिया

हमार परमेश्वर कितना महान है?

टिप्पणीयाँ

लैव्यव्यवस्था

##	पाठ शीर्षक				वर्ष
1.		दान के प्रकार	सेवा व्दारा परमेश्वर की ओर जाना	अराधना की छोटी पुस्तक	१४४० ई.पू. (सिनाए पर्वत पर एक माह)
2.					
3.					
4.					
5.					
6.		दान के न्याय			
7.					
8.		पादरीपन			
9.					
10.					
11.		शुध्दिकरण के न्याय			
12.					
13.					
14.			अलगाव व्दारा परमेश्वर के साथ चलना		
15.					
16.		प्रायश्चित का दिन			
17.		पवित्रता के न्याय			
18.					
19.					
20.					
21.					
22.					
23.		त्योहार			
24.		जाब्ता दिवानी			

25.					
26.					
27.					

पुस्तक को खोलने के लिए कुछ और चाबीयाँ :

उत्पादक : मूसा (रोमियो १०:५)

लिखने की तिथी : १४५२ बी.सी

विषय: पवित्रता (१५० बार कहा गया)

मुख्य विचार: पाप, मृत्यू, अपराध, अंगीकार, क्षमा, सहाचर्य

दान (बली), पाप बली, दोष बली : जब परमेश्वर और मनुष्य का रिरता बिगड़ जाए।

होम बली, अन्न बली, मेल बली : जब परमेश्वर के साथ मेल हो।

विवाद के प्रश्न - लैव्यव्यवस्था

१. भेटों की सूची बनाईए और उन की आवश्यक्ता या विषेश्ता बताईए। अपने जीवन में किस की आवश्यक्ता है। इन मे से जिस को मसीह ने पूरा किया वह बताईए और आप ने जो खोज निकाला है उस के सदंर्भ भी लिखीए।

२. त्योहारो और विषेश वर्षो की सूची बनाईए और उनकी आवश्यक्ता या विषेश्ताऐ बताईए। अपने निजी जीवन मे इन मे से किस की आवश्यक्ता है। व्यवस्थाविवरण १६ को भी देखीए। आप जो भी खोजते है उन के संदर्भ लिख लीजीए।

३. परिज्ञानो निरूपणो, प्रश्नो और कुछ निजी विचारों को जो पविप्रात्मा आप के जीवन मे

कर रही है लिख लीजीए।

४. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

गिनती

##	पाठ शीर्षक			वर्ष
1.		डेरा डालने का क्रम	सिनाए के पास डेरा	१४९० ई.पू.
2.				
3.		लेवी		
4.				
5.		न्याय		
6.				
7.		अराधना करने की व्यवस्ता		
8.				
9.				
10.		चलते हुए	सिनाए से मोआब के समतलों तक	
11.		. आठ शिकायतें		
12.				
13.				
14.				३९ वर्ष
15.				
16.				
17.				
18.				

<table>
<tr><td>19.</td><td></td><td rowspan="3"></td><td rowspan="3"></td><td rowspan="18">१४५२
ई.पू.</td></tr>
<tr><td>20.</td><td></td></tr>
<tr><td>21.</td><td></td></tr>
<tr><td>22.</td><td></td><td rowspan="3">बलाम</td><td rowspan="15">मोआब के
समतलों पर</td></tr>
<tr><td>23.</td><td></td></tr>
<tr><td>24.</td><td></td></tr>
<tr><td>25.</td><td></td><td rowspan="12">वादा किए
गए देश में
प्रवेश करने
की तैयारी</td></tr>
<tr><td>26.</td><td></td></tr>
<tr><td>27.</td><td></td></tr>
<tr><td>28.</td><td></td></tr>
<tr><td>29.</td><td></td></tr>
<tr><td>30.</td><td></td></tr>
<tr><td>31.</td><td></td></tr>
<tr><td>32.</td><td></td></tr>
<tr><td>33.</td><td></td></tr>
<tr><td>34.</td><td></td></tr>
<tr><td>35.</td><td></td></tr>
<tr><td>36.</td><td></td></tr>
</table>

पूस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयाँ:

उत्पादक: मूसा (लूका २४:४४)

लिखने की तिथी : १४५२ बी.सी

विषय सूची : इस्राएलीयों का जंगल मे भटकना (१४:३३)

मुख्य शब्द : बड़ बड़ाना

टिप्पणी : इस पुस्तक का मूल, जातीयों की गिनती से है।

विवाद के प्रश्न - गिनती

१. जो निर्गमन में शुरू किया उन बड़बड़ाने की खोज को जारी रखीए।

२. इस्राएली डेरे का चित्र बनाईए - सदंर्भ के साथ

३. हम मसीहो को अपने विश्राम की भूमी पर पहुँचना है ठीक उसी तरहा जिस तरहा इस्राएल को विश्राम की भूमी तक जाना था। संदर्भों का प्रयोग करे और जितना हो सके उतना विषेश बन कर, बताईए की इस्राएल अपने विश्राम तक क्यूँ नही पहुचँ पाया और एक मसीही के लिए विश्राम का जीवन क्या है। इब्रानीयों तीन और चार पर ध्यान लगाईए, और कुछ और इस से मेल खाते वचनों पर भी।

४. परिज्ञानों, निरूपणो, प्रश्नो और कुछ निजी विचारो को जो पवित्रात्मा आप के जीवन मे कर रही है, लिख लीजीए।

५. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

व्यवस्थाविवरण

##	पाठ शीर्शक			वर्ष
1.		एतिहासिक पुनर्निरिक्षण	बीते दिनों की यादें	१४५२ ई.पू. (लगभग एक माह)
2.				
3.				
4.				
5.		गुण दोष न्याय	वर्तमान के लिए आज्ञाऐं	
6.				
7.				
8.				
9.				
10.				
11.				
12.		व्यवसायी न्याय		
13.				
14.				
15.				
16.				
17.		अदालती न्याय		
18.				
19.				
20.				
21.				
22.				
23.				
24.				
25.				
26.				

<table>
<tr><td>27.</td><td></td><td rowspan="4">वाचा की आशीषें और शाप</td><td rowspan="4">भविष्य के बारे में</td><td rowspan="8"></td></tr>
<tr><td>28.</td><td></td></tr>
<tr><td>29.</td><td></td></tr>
<tr><td>30.</td><td></td></tr>
<tr><td>31.</td><td></td><td colspan="2" rowspan="4">मूसा के अन्तिम वचन</td></tr>
<tr><td>32.</td><td></td></tr>
<tr><td>33.</td><td></td></tr>
<tr><td>34.</td><td></td></tr>
</table>

पुस्तक को खोलने कि कुछ और चाबीयाँ :

उत्पादक : मूसा (३१:२४)

लिखने की तिथी : १४५२ ई. पू.

विषय सूची : आज्ञाओं का पुनर्निरिक्षन (१:३) । प्रेम और डर जैसे पर महत्वपूर्ण कारणों पर निर्धारित, परमेश्वर के प्रति कर्तव्य पालन की लम्बि दलील ।

मुख्य शब्द : स्मर्ण रखना , शिक्षा देना

स्थित : मोआन के देश में इन वचनो को कहा गया ।

टिप्पणी : कर्तव्यापालन - आशीष

कर्तव्यपालन न करना : श्राप (शाप)

इतिहास को अल्प व्यय सम्बंधी, कुल सम्बंधी या भूगोल विषेयक आंकड़ो पर आंका जा सकता है । बाईबल अध्यात्माविधा सम्बंधी पहलूक बताती है। मुख्य तौर से पाठ २८ देखें ।

विवाद के प्रश्न - व्यवस्थाविवरण :

१. अपने छः उपदेशों में मूसा लोगों को क्या बताना चाहता था ? (चित्र में हर बड़ा हिस्सा एक उपदेश है । संदर्भ देते हुए विशेषता बताएं ।

२. विशेष संदर्भो और बचनों की सूची बनाईए जो आप के जीवन से बात करती हैं या जो आप के लिए विशेष रूप से कुछ अर्थपूर्ण हो।

३. परिज्ञानो. निरूपणों, प्रश्नों ओर कुछ निजी विचारो को जो पवित्रात्मा आप के जीवन में कर रही है, लिख लीजीए ।

४. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

यहोशु

##	पाठ शीर्कें			वर्ष
1.		तैयारी	देश में प्रवेश करना	१४५१ ई.पू. .
2.				
3.		यरदन को पार करना		
4.				
5.		लडाई की तैयारी		
6.		पहला युध्दकाल	देश पर विजय पाना	
7.				
8.				
9.		दीसरा युध्दकाल		
10.				
11.		तीसरा युध्दकाल		
12.		साराश		
13.		यरदन के पूर्व की ओर	देश की स्थिती	
14.		यरदन के पश्चिम की ओर		
15.				
16.				

17.				
18.				
19.				
20.				
21.		पूरे देश में		
22.				
23.				
24.		यहोशु की मृत्यु	अन्त	१४३४ ई.पू..

पूस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक : यहोशु (२४:२६)

लिखने की तिथी : प्राय: शुद्ध रूप से १४३४ ई.पू

विषय : भूमी को प्राप्त करना, उत्कर्श २१:४३ मे

मुख्य शब्द : प्राप्त करना

मुख्य वाक्यशैली : दृढ बनो और हिम्मत रखो

टिप्पणी : यहोशू नाम का अर्थ है "बचाने वाला"

इन के जीवन की सामान्ताऐं :

मुसा		यहोशू	
कार्य	**पाठ**	**कार्य**	**पाठ**
लाल समुद्र -	निर्ग १४	यरदन नदी	---------
मुसा कादैवी दर्शन -	निर्ग ३	यहोशु का दैवी दर्शन	----------
दुश्मनो को हराया -	निर्ग १५	यहोशु की जीत	----------
गुप्तचरों को भेजा -	गिन १३	यहोशु के गुप्तचर	----------
बिदाई उपदेश -	व्यवस्था ३४	बिदाई उपदेश	----------
वाचा दुबारा बांधि गयी -	व्यवस्था २९	वाचा दुबारा बांधी गयी	----------
अमलेक के विरूध विजय पाने के लिए हाथों को उठाया गया -	निर्ग १७	अई के विरूध विजय पाने के लिए हाथों को उठाया गया	---------

विवाद के प्रश्न - यहोशु :

१. निम्न वचनो को पढ़कर, यहोशु का मूसा के साथ नाता और सेवा को बताईए। निर्गमन १७:८-१६, २४:१२,१३ ३३:११, गिनती १३:१-१६, १४:६-१०, २६-३५, २७:१८-२३, व्यवस्थाविवरण ३४:९१

अ) प्रशिक्षण काल से नायकत्व तक के मुख्य वृतान्तों को लिखिए।

ब) यहोशु के चरित्र का चित्र बनाईए, और बताईए की किन विशेषताओं के कारण वह महान नेता बने। संदर्भों को भी लिखिए।

२. किनारी संदर्भों की मदद से रहाब का बाईबल रूपी चित्र बानाईऐ। इस बात पर ध्यान दीजीए की उस की विनाशता से भुक्ति हमारी मुक्ति से कैसे मेल खाती है।

३. अ) चिट्ठी के डाले जाने के विषय मे नीत्तीवचन १६:३३ और १८:१८ क्या शिक्षा देते हैं।

ब) संदर्भों सहित यह बताईए की यहोशु मे कौन सी चिडठीयों का प्रयोग किया गया।

स) इस तरहा का चलन क्यो गलत नही था?

द) एक अच्छी सादृश्य का प्रयोग कर बताईए की बाईबल मे आखरी बार चिट्ठी कब डाली गयी थी। इस का महत्व क्या है?

४. पाठ २० मे शरण लेने के शहरो के वारे मे बताया गया है। बताआए की यह तरीका किस तरहा कामयाब हुआ। निर्गमन २०:१३ में ग्रत्थि है। (ध्यान दीजीए की इस वचन का सही अर्थ है "तू खून न करना।") क्या "खून करना" और "मारना" मे कुछ भिन्नता है ? आज्ञा के किसी भी स्थिती पर ध्यान दीजीए। अपने चवावो में दुसरे वचनो का प्रयोग कीजीए।

५. परिज्ञानो, निरुपणो, प्रश्नो और कुछ निजी विचारो को जो पवित्रात्पा आप के जीवन में कर रही है लिख लीजीए।

६. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

न्यायियों

##	पाठ शीर्श्क	दुशमन	वर्ष	न्याय	वर्ष
1.		परिचय			
2.					
3.		मेसोपोटामिया	8	ओथनिएल	40
4.					
5.					
6.					

7.					
8.					
9.		जाब्ता दीवानी		तोला जेर	23 22
10.					
11.		अमोनाईट	18	जेफताह	6 25
12.					
13.					
14.					
15.					
16.					
17.		व्याकुलता और अशासन			
18.					
19.					
20.					
21.					

पुस्तक को खोलने की कुछ और चावियाँ :

उत्पादक - प्राय : शमुएल

लिखने का दिनाक: प्राय : १०४५ ई.पू

विषय : १२ न्यायियों के समय इस्राएल का इतिहास । उन दिनों इस्राएलियों के कोई राजा न था; जिस को जो ठीक जान पड़ता था वही करता था।

मुख्य वर्णन :

इस्राएल ने वह किया जो बूरा था।
परमेश्वर का क्रोध भड़क उठा।

इस्राएल परमेश्वर की ओर रोने लगा।
परमेश्वर ने न्यायीयों को भेजा, जो उन्हे उनके दुश्मनों के हाथों से बचा लाऐ।

निरूपण :

१. पाठ १-२ मे हमे आरम्भीक तत्व से हमें यह मिलता है:

अ) यहोशु के बारे मे एक सारांश १:१-२:१०

ब) न्यायीयों के बारे मे एक सारांश २:११-३:७

२. यह पुस्तक १४३४ ई.पू से १०८० ई.पू का इतिहास तैय करती है। इस समय के तिहाई समय तक लोग दासत्व थे। इन विनाशमय परिस्थितीयों में भी परमेश्वर की महीमा उन के साथ थी।

३. इस समय को चित्रांकण रूप से देखना हो तो भजन १०६:३४-३६ मे पढीये।

४. यहोशु और न्यायीयों की प्रारम्भिड्ढ वचनों की तुलना कीजीए।

विवाद के प्रश्न - न्यायीयों :

१. चित्र के रिक्त स्थानों को भर लीजीए।

२. अ) न्यायीयों २:८-११ मे क्या हुआ, उस को लिख लीजीए।

ब) व्यवस्थाविवरण ११:१३-२५ के अनुसार क्या होना चाहिए था।

स) बैसली ने इस बात की टिप्पणी की है की सामान्यता उद्धार तीसरी पीड़ी तक नहीं चलता है। हमे क्या सबक सीखना चाहीए और अपने निजी जीवन और गिरजाघरों मे इन का प्रयोग करना चाहीए.

३. अ) परमेश्वर ने वादा कीए गए देश मे रहने वालो के लिए क्या आदेश दिए?

संदर्भ दीजीए।

ब) वह इतने कठोर क्यों थे?

स) १ कुरिंथियों पाँच, विशेष तौर से छः वचन को और अन्य संम्बन्धित वचनो की तुलना कीजीए।

द) वर्तमान दिनों मे उसे प्रयोग मे लाऐं।

४. अ) न्यायीयों २:३ और किनारी संदर्भो को देखे।

ब) कुछ वेदान्तीयों का मानना है की पुराने नियम के कुछ संदर्भ, २ कुरिं १२:७ मे पौलुस के "शरीर मे काँटें" को समझने के लिए उस पर रौशनी डालते है। इस तरहा पवित्रशास्त्र को समझने के लिए पवित्रशास्त्र का उपयोग किया जाता है, पौलुस के काटे के बारे मे अन्त में क्या विचार आऐ? पौलुस के जीवन और लेखो पर जो आप की समझ है उस का प्रयोग करीए।

५. परिज्ञानों, निरूपणो, प्रश्नो और कछ निजी विचारों को जो पवित्रात्मा आप के जीवन मे कर रही है लिख लीजीए।

रूत

<table>
<tr><th>#</th><th></th><th></th><th></th></tr>
<tr><td>1.</td><td></td><td>मोआब में</td><td rowspan="2">विश्वास का चुनाव</td></tr>
<tr><td>2.</td><td></td><td>बेतलेहम में</td></tr>
<tr><td>3.</td><td></td><td>इस्राएल में जाते हुए</td><td>विश्वास का साहस करना</td></tr>
<tr><td>4.</td><td></td><td>राजकीयता में प्रवेश</td><td>विश्वास का फल</td></tr>
</table>

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयां :

उत्पादक : अंजान

लिखने की तिथी : प्रायः ९६० ई.पु.

विषय : दाऊद की नास्तिक पितृश्रेणी, और इस कारण मसीह (४:१८फफ)

इतिहासिक स्थान : न्यायीयों के समय की घरेलू स्थीतीयों को दर्शाता है; प्राय आठ साल का समय को तैय करता है।

विवाद करने का प्रश्न - रूत

१. इतिहास सिखाता है की मुक्त करने वाला सम्बंधी (बोआज) कि कुछ योग्यताऐं और कार्य सम्पादन होनी चाहीए। उदहारण के लिए :

अ) उस का खून का रिश्ता होना चाहिए।

ब) उस के पास इतना पैसा होना चाहिए की वह दण्डित पैतृक धन खरीद सके।

स) दण्डित पैतृक धन को खरीदने की इच्छा होनी चाहीए।

द) मरे हुए सम्बंधी की पत्नी से शादी करने के लिए इच्छुक होना चाहीए।

मसिह को मुक्त करने वाला सम्बंधी की तरहा विवाद करीए।

२. परीज्ञानों, निरूपणों, प्रश्नों और कुछ निजी विचारों को जो पवित्रात्मा आप के जीवन में कर रही है, लिख लीजीए।

३. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

१ शमूएल

##				वर्ष
1.		शिलोह का पवित्र तम्बू	शमूएल की युवाव्सथा और न्याय	१०७५ ई.पू.
2.				
3.				
4.		वाचा का संदूक		
5.				
6.				
7.				
8.		राजा की मांग		
9.		शाऊल चुना गया	शाऊल का अभिषेक और धुतकार	
10.				
11.		राज की स्थापना		
12.				
13.				
14.		शाऊल की लडाई		
15.				
16.		दाऊद गडरीए के रूप में	शाऊल व्दारा दाऊद उपद्रव	
17.				
18.		दाऊद इन्सान के रूप में		
19.				

20.		दाऊद भगोडे के रूप में		९६० ई.पू.
21.				
22.				
23.				
24.				
25.				
26.				
27.				
28.				
29.				
30.				
31.				

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयां :

उत्पादक : प्रायः प्रारंम्बिक २४ पाठ शमूएल ने लिखे होंगे, २५:१ में उन की मृत्यु होने तक। फिर नाथन और गैड ने इसे पूरा किया (१शम १०:२५; १ इति २९:२९)।

लिखने की तिथी : प्रायः ९८० ई.पू. - ९२० ई.पू.

विषयः शमूएल, शाऊल और दाऊद की जीवनीयां।

मुख्य वचन : "और यहोवा ने शमूएल से कहा, वे लोग जो कुछ तुझ से कहे उसे मान ले; क्योंकी उन्होने न तुझ को नहीं परन्तु मुझी को निक्कमा जाना है, कि मैं उनका राजा न रहुं।" (८:७); "परन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, न तो सके रूप पर दृष्टि कर और न उसके डील की ऊंचाई पर, क्योंकी मैंने उसे अयोग्य जाना है; कयोंकी यहोवा का देखना मनुष्य सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।" (१६:७)

एतिहासिक पृष्टभूमी : शमूएल, एल्काना और हन्ना का पुत्र था (१:१९,२०)। कई बार उन्हें भविष्यवक्ताऔं में पहला माना गया है, जैसे की प्रेरित ३:२४ में "और शमूएल से लेकर उसके बाद वालों तक जितने भविष्यव्दक्ताओ" (प्रेरित १३:२०, इब्रा ११:३२)। शमूएल का चरित्र, न्यायीयों और दाऊद के राज्य के बीच, पुल का कार्य करता है। (पढीए प्रेरित १३:२०,२१ इन शब्दों पर विषेश ध्यान दीजीए: भविष्यवक्ता, न्यायीयों, राजा।)

विवाद के प्रशन - १ शमूएल

१. जैसा की १ शमूएल के प्रारम्बिक पाठो में देखा गया है, हन्ना और ऐली के बीच माता पिता होने का भेद देखीए। माता पिता होने का नाते उन की जीत और हार देखीए और उन के कारण बताईए। संदर्भ दीजीए और विशिष्ट रूप बताईए। 1:28; 2:12, 17, 19, 21 - 26, 29, 34, 45; 3:1, 19 - 21 भी जाडीए।

२. शाऊल के अन्त के कारणों को बताते हुए संदर्भ दीजीए। हमें अपने व्यक्तिगत जीवन में जांचना होगा।

३. दाऊद और गोलियत की कहानी को दुबारा पढीए (पाठ १७)। उस स्थिती को किस तरहा दाऊद ने देखा और यह उनके भाईयों के और अन्य सेना के नजरीए से कैसे भिन्न था। वह लडाई करने कयों गया और क्यों विजयी हुआ? अपने जवाहों को विषेश बनाने के लिए संदर्भ दीजीए। अपने जवाबों को अपने निजी मसीही जीवनों की लडाई से जांचीए। (१कुरिंथीयों १०:१३ और २कुरिंथीयों १२:१० मदद कर सकती हैं)

४. परीज्ञानों, निरूपणों, प्रश्नों और कुछ निजी विचारों को जो पवित्रात्मा आप के जीवन में कर रही है, लिख लीजीए।

५. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

२ शमूएल

<table>
<tr><th>तकर</th><th></th><th></th><th></th><th></th><th>वर्ष</th></tr>
<tr><td></td><td></td><td rowspan="10">दाऊद की विजय</td><td rowspan="10">राज्य का एकीकरण</td><td rowspan="4">दाऊद यहूदा पर राजा</td><td rowspan="24">९६० ई.पू.

९२० ई.पू.</td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td><td rowspan="20">दाऊद समस्त इस्राएल पर राजा</td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td><td rowspan="2">दाऊद के पाप</td><td rowspan="8">राजनैतिक लडाई</td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td><td rowspan="12">दाऊद की मुसीबतें</td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td><td rowspan="6">राज्य की दुबारा स्थापना</td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
</table>

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयां :

उत्पादक : प्राय नाथन और गैड (१ इति २९:२९)

लिखने की तिथी : प्रायः ९२० ई.पू.

विषय : दाऊद का धार्मिक राज्य

टिप्पणी : इस पुस्तक में राजा शब्द २७८ बार मिलता है, इस कारण २ शमूएल को अकसर राजा की पुस्तक कहा गया है।

विवाद के प्रश्न - २ शमूएल :

१. अ) परमेश्वर उज्जा से क्यों इतने क्रोधित थे (६:१-११)?

ब) १ शमूएल ६:१३-२० में सामान्य स्थिती पर ध्यान दीजीए। इन यहूदीयों पर परमेश्वर ने इतनी कठोरता क्यों दिखाई (१ शमूएल ६:१९) जबकी फिलिस्तीनीयों पर कुछ कम दंड मिला (१ शमूएल ५-६)? गिनतीयों ४: ५-२०, लूका १२:४७,४८ और याकूब ४: १७ को भी ध्यान दीजीए।

स) क्या कहीं इस बात का चिह्न दिखाई देता है की दाऊद ने अनुभवों से सीखा?

२. अ) मपिबोशेत की कहानी अपने शब्दों में लिखीए (२ शमूएल ४:४ और पाठ नौ)।

ब) दाऊद ने उस के साथ उस तरहा का व्यवहार क्यों किया? विषेश संदर्भ दीजीए। (पाठ ९:१ से विपरीत संदर्भों को देखीए)।

स) इस बात को याद रखीए की परमेश्वर के साथ हमें वाचा में बांदने के लिए मसीह हमारा मुख्य प्रतीनिधि है (१ कुरि ११:२५)। आप अपने जीवनों और परिस्थितीयों में और मपिबोशेत में क्या सामान्ताऐं देखते हैं।

३. प्रेरित १३:२२ हमें यह बताता है की दाऊद परमेश्वर के मन के अनुसार व्यक्ति था। इसे पढीए और साथ में पुराने नियम के उस संदर्भ को भी जो वह बता रहा है। २ शमूएल में जैसे की दाऊद के जीवन को बताया गया है, ध्यान लगाईए (या कुछ और संदर्भों पर) और बताईए की यह क्यों सही था। अपने व्यक्तिगत जीवन से जांचीए।

ब) दाऊद के पिता बनने कि स्थिती और कार्य किस तरहा ऐली के समान थे (१शमूएल २:२९)?

स) उस के पुतरों के साथ क्या होना था? (देखीए लैव्यवस्था १८:९, २९; गिनतीयों ३५:१९ और व्यवस्थाविवरण 19:11, 12; 21:18-21; 22:23-29.) तुलना कीजीए की असल में उन के साथ क्या हुआ। (कहानी १८:३३ में समाप्त होती है)।

द) १४:१४ में तकोनी किस विषय के बारे में कह रही थी? किस हद तक वह सही थी?

इ) चाहे पुराने नियम के समय से लेकर आज तक बच्चों को पालने का तरीका बदल गया हो, परन्तु सिध्दांत नही बदले हैं। इस बारे में यदी पवित्रात्मा आप को आपके निजी जीवन का विषय में यदी कुछ बता रहा हो तो उसे लिखलें।

५. परीज्ञानों, निरूपणों, प्रश्नों और कुछ निजी विचारों को जो पवित्रात्मा आप के जीवन में कर रही है, लिख लीजीए।

१ राजा

				वर्ष
		सुलेमान की अच्छि शुरूआत	सुलेमान के राज का इतिहास	९२० ई.पू.
		घर और मंदिर का निर्माण		
		सुलेमान का बुरा अन्त		
				८८०
		रीहोबोम और जेरोबोम	यहूदा और इस्राएल का इतिहास	
		नौ राजा		
		एलीयाह और अहाब		
				८०० ई.पू.

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयां :

उत्पादक : अनजान; यिर्मयाह कहता है की यहूदी पुराण

लिखने की तिथी : ४७७ ई.पू. - ४२६ ई.पू.

विषय : राज्य का बनना और गिरना

कुछ समय के मिलन के बाद इस्राएल इन में बंट जाता है :

यहूदा : दो जातीयां दक्षिण में (यरूशलेम और बिनयामिन); यरूशलेम राजधानी बना।

इस्राएल : दस जातीयां उत्तर सें; सामरीया राजधानी बना।

सुलेमान के राज्य से समस्याऐं :

राज्य शुल्क, बाध्यकारी मजदूर, विशाल राजगृह, उदार धर्म, विदेशी रिश्ते, राजवंश सम्बंधी लालसा, इन कारणों से राज्य का बंटवारा।

१. सुलेमान की शक्ती और कमजोरीयों को देखते हुए उसके स्वभाव के बारे में लिखीए। अपने वाक्यों को सही साबित करने के लिये संदर्भ दीजीए। वह कौनसा पाप था जिसके कारण राज्य का बंटवारा हुआ और राज्य छूटा? क्या इस तरहा का दण्ड अनुभव करने के लिए उनके पास कोई कारण थ`?

२. उत्तप्ती 15:5, 18-21; 22:16-18 में परमेश्वर का अब्राहम के साथ वाचा में करे गये वादों को याद करीए। निम्न विपरित संदर्भों और १ रादा ४:२०-२४ की टिप्पणी यह बताते हैं की सुलेमान के राज्य के अंत तक कौनसा भाग पूरा हुआ। कौनसे वादे अभी पूरे होने बाकी थे? वे कब तक पूरे होंगे ?

३. याकूब ५:१७ कहता है "एल्लीया भी तो हमारे समान दुःख सुख भोगी मनुष्य था"। आप जो इस वक्त पढ रहे हैं उसमें सह बात को पहचानीए।

४. मलाकी ने कहा की एल्लीयाह फिरसे आएगा (मलाकी ४:५)। विपरीत संदर्भों सहित इस भविष्यवाणि की पूरती को बताईए।

५. निम्न पन्ने पर दिये गये चित्र को पूरा कीजीए। आप को पवित्रशास्त्र हर राजा के बारे में क्या कहता है वह संदर्भ लिखना है, एक शब्द जो उनके चरित्र को बताता है और उनका शासनखाल। यह कार्य आप को २ इतिहास तक करना है।

६. परीज्ञानों, निरूपणों, प्रश्नों और कुछ निजी विचारों को जो पवित्रात्मा आप के जीवन में कर रही है, लिख लीजीए।

७. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

इस्राएल के राजा (उत्तरी)　　　　　यहूदा के राजा (दक्षिणी)

राजा	राज्य के वर्ष	चरित्र/संदर्भ			राजा	राज्य के वर्ष	चरित्र/संदर्भ	
				१				
				२				
				३				
				४				
				५				
				६				
				७	अथेलिया (रानी)	६	बुरी	२राजा ८-११ २इति २२-२३
जेहोआज	१७	बुरा	२राजा १३:१-९					

				१७				
				१८				
				१९				
				२०				

कुल = १९ इस्राएल के राजा

कुल = २० यहूदा के राजा

*जब आप २ इतिहास में आऐं तो इस राजा के हारे में दूसरा संदर्भ देखें

टिप्पणीयां

२ राजा

				वर्ष
		एलिय्याह	यहूदा और इस्राएल का सह इतिहास	७९९ ई.पू.
		एलिशा		
		जेहू		
		जोआश		
		यहूदा और इस्राएल के राजा		
			इस्राएल का बंधुआ बनाया जाना	६११
		यहूदा के १५ राजा	यहूदा का गिरना	
			यहूदा का बंधुआ बनना	
				४७७ ई.पू.

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयां :

उत्पादक : अनजान; यिर्मयाह कहता है की यहूदी पुराण

लिखने की तिथी : ४७७ ई.पू. - ४२६ ई.पू.

विषय : राज्य का बनना और गिरना

टिप्पणी : इस पुस्तक में दिये गये काल में सब छोटे बडे भविष्यवक्ताओं ने भविश्यवाणी करी है।

विवाद के प्रश्न - २ राजा :

१. इस्राएल और यहूदा के राजाओं के नाम भरते जाईये।

२. २ राजा पाठ सात में चार कोडीयों की कहानी को पढीए।उनके अनुभव और हमारे मुक्ती के अनुभवों की सामान्यताओं को देखीये।

३. भजन संहीता ७५:६,७ और रोमियों १३:१,२ की शिक्षा को बताईए। बताईए की किस तरहा परमेश्वर की परमप्रधानता को २ राजा में लगातार दिखाया है।

४. इस्राएल का बडा उत्तरी राज्य ८८० ई.पू. से ६११ ई. पू. यानी २६९ वर्षों तक चला, जबकी यहूदा का छोटा, दुर्बल राज्य ८८० ई. पू. से ४७७ ई.पू. यानी कुल ४०३ वर्षों तक चला। प्रार्थना पूर्वक जांचीए की क्या बाईबल इन राज्यों का उठने और गिरने का कारण बताती है। (संकेतः राजाओं पर अपना चित्र देखीए)।

५. परीज्ञानों, निरूपणों, प्रश्नों और कुछ निजी विचारों को जो पवित्रात्मा आप के जीवन में कर रही है, लिख लीजीए।

१ इतीहास

				वर्ष
		आदम से शाऊल		४००४ ई.पू.
			वंशावली	
		शाऊल की मृत्यु		
		सिंहासन तक पहँचना		
		वाचा का संदूक		
		धार्मिक कार्य		
		लडाईयां		
			दाऊद का राज्यकाल	
		घरेलू		
		धार्मिक कार्य		९२० ई.पू.

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयां :

उत्पादक : प्रायः ऐज्रा (२ इतिहास ३६:२२, २३; ऐज्रा १:१,२)

लिखने की तिथी : प्रारंम्भिक ४०० ई.पू.

विषय : राज्यों का पवित्र इतीहास

मुख्य विचार : परमेश्वर का प्रभुत्व

टिप्पणी : मौलिक इब्रानी हस्तलेख में एक ही पुस्तक १ और २ इतिहास। यह १ और २ शमूएल और १ और २ राजाओं का परिशिष्ट है।

१ और २ शमूएल - राजाओं १ और २ इतिहास

१०२ पाठ
६५ पाठ
५९८ वर्ष
५३४ वर्ष
इतिहास धार्मिक लेखा
यहीदा-इस्राएल यहूदा

१. परमेशवर की सेवा स्तूती और आराधना से करणे के बारे में १ इतिहास क्या बताता है?

२. यह बात कही गयी है की इतिहास हमें इस्राएल का इतिहास, परमेश्वर की दृष्टी से बताता है जबकी शमूएल और राजाओं की पुस्तकें मनुष्य की दृष्टी बताती हैं। उन वारदातों को लिखीए (संदर्भो सहित) जो सामान्य या मनुष्य व्दारा बनाई हुई लगे, परमेश्वर के सीधे कार्य से अलग। आप जो भी ढूंढते हैं उसे अपने जीवन से मिलाईए।

३. परीज्ञानों, निरूपणों, प्रश्नों और कुछ निजी विचारों को जो पवित्रात्मा आप के जीवन में कर रही है, लिख लीजीए।

२ इतीहास

				वर्ष
		सुलेमान का राज्य	संयुक्त राज्य	९२० ई.पू.
		रिहोबोआम	यहूदा के राजा	
		अबिजा		
		असा		
		जेहोशाफट		
		जेहोराम से अहाज		
		यहेजकियाह		

		मनास्से से जोस्सया		
		बंधुआ तक		४२६ ई.पू.

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयां :

उत्पादक : प्रायः ऐज्रा (२ इतिहास ३६:२२, २३; ऐज्रा १:१,२)

लिखने की तिथी : प्रारंम्भिक ४०० ई.पू.

विषय : राज्यों का पवित्र इतीहास

मुख्य विचार : परमेश्वर का प्रभुत्व

टिप्पणी : मौलिक इब्रानी हस्तलेख में एक ही पुस्तक १ और २ इतिहास। यह १ और २ शमूएल और १ और २ राजाओं का परिशिष्ट है।

विवाद के प्रश्न - २ इतीहास :

१. १:७-१२ में सुलेमान की विनती और परमेश्वर के संतुष्ट जवाब को देखीये। पवित्रशास्त्र से कुछ और सामान्स संदर्भ लेकर बाईबल के इस सिधांत को जो यहां पाया जाता है विस्तारता से लिखीए।

२. सिलेमान के मंदिर का एक चित्र बनाईए। जंगल के पवित्र स्थान से तुलना करें।

३. इस्राएल और यहूदा के राजाओं के नाम भरते जाईये।

४. यह बात बताई गयी है की इतिहास हमें इस्राएल का इतिहास, परमेश्वर की दृष्टी से बताता है जबकी शमूएल और राजाओं की पुस्तकें मनुष्य की दृष्टी बताती हैं। उन वारदातों को लिखीए (संदर्भों सहित) जो सामान्य या मनुष्य व्दारा बनाई हुई लगे, परमेश्वर के सीधे कार्य से अलग। आप जो भी ढूंढते हैं उसे अपने जीवन से मिलाईए।

५. ध्यान लगाईए की परमेश्वर ने इस पुस्तक को बाईबल से क्यों जोडा। कोनसे सबक वह चाहता था की हम सीखें? अपने जीवन से मिला कैसे सकते हैं?

६. निस्न दिये गये उध्दारों को जांचीएः यहोशापात - पाठ २०, योआश- पाठ २३, २४, हिजकिय्याह- पाठ २९-३१, योशिय्याह- पाठ ३४, ३५। विवाद करीएः

अ) उध्दार किन त्तवों के कारण मिलता है?

ब) उध्दार का असर मनुष्य और समुदाय पर क्या पडता है?

स) हमें उध्दार पाने के लिए क्या करना चाहिए?

द) क्या कोई सर्वदा उध्दारता में रह सकता है?

7. परीज्ञानों, निरूपणों, प्रश्नों और कुछ निजी विचारों को जो पवित्रात्मा आप के जीवन में कर रही है, लिख लीजीए।

<u>ऐज्रा</u>

					वर्ष
		लोगों की वापसी	जेरूबाबेल के वक्त	बंधि से वापसी	४२६ ई. पू.
		निर्माण			
		एज्रा	एज्रा के वक्त		
		बदलाव			
					४०३ ई. पू.

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयां :

उत्पादक : ऐज्रा

लिखने की तिथी : ४०० ई.पू.

विषय : अवशेष की वापसी

मुख्य वचन : क्योंकी ने यहोवा की व्यवस्था का अर्थ बूझ लेने, और उसके अनुसार चलने और इस्राएल में विधी और नियम सिखाने के लिये अपना मन लगाया था। (७:१०)।

टिप्पणी : ऐज्रा और नहेमीया एक ही समय पर दोनों ने स्थान ग्रहण किया और यहूदीयों का मानना है की यह एक ही पुस्तक है। विध्वान इस बात से सहमत नहीं है की दोनों पुस्तकें एक समान हैं।

विवाद के प्रश्न - ऐज्रा :

१. ऐज्रा के चरित्र का चित्रण कीजीए.

२. ऐज्रा हमें ४०३ ई.पू. ले जाता है जोकी पुराने नियम के इतिहास का अन्त है। कविता और भविष्यवाणी की किताबें उस इतिहास में पाई जाती हैं जिसे हम जांच चुके हैं। ध्यान लगाने का बाद यह बताईए की आपने इनके बारे में क्या सीखाः

अ) मनुष्य

ब) परमेश्वर

स) परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का लिए इस्राएल ने क्या किया।
अपने जवाबों को व्याखया व्दारा दीजीए।

३. परीज्ञानों, निरूपणों, प्रश्नों और कुछ निजी विचारों को जो पवित्रात्मा आप के जीवन में कर रही है, लिख लीजीए।

नहेमाया

				वर्ष
		प्रार्थना	शहर का दुबारा बनाया जाना	४५५ ई.पू.
		दीवारों पर कार्य		
		विरोध		
		पहला बदलाव	लोगों का पुनर विकास	
		परमेश्वर के साथ वाचा		
		देश में स्थापित होना		
		दूसरा बदलाव		४०३ ई. पू.

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयां :

उत्पादक : प्रायः नहेमाया

लिखने की तिथी : ४०० ई.पू.

विषय : यहूदा में राजनीति की वापसी

मुख्य वचन : "...मैं तो भारी काम सें लगा हुँ, वहां नहीं जा सकता, मेरे इसे छोडकर तुम्हारे पास जाने से वह काम क्यों बन्द रहे।" (६:३)

विवाद के प्रश्न - नहेमाया :

१. परमेश्वर ने नहेमाया और यहूदीयों को जो काम करने को दिया था उसे रोकने के लिए कई प्रयास किये गये। इन रूकावटों को और उन पर जय पाने के लिए जो कदम उठाए गये उन को लिख लीजीए।

२. नहेमाया के चरित्र का चित्रण कीजीए।

३. फिर से, नहेमाया हमें पुराने नियम के इतिहास ४०३ ई.पू. के अन्त में ले जाता है। उत्पत्ति ३:१५ देखीये और जो आपने उत्पत्ति और निर्गमन में अन्वेशण किया मसीह और शैतान और शैतान का लगातार प्रयास वंश को मिटाने का। इस्राएल के इतिहास की घटनाओं पर ध्यान लगाईए और इस लडाई जो जारी है उन घटनाओं को भी लिख लीजीए।

४. परीज्ञानों, निरूपणों, प्रश्नों और कुछ निजी विचारों को जो पवित्रात्मा आप के जीवन में कर रही है, लिख लीजीए।

एस्तेर

					वर्ष
		अबैसकस की दावत		यहूदीयों का गम्भीर भय	४८९ ई. पू.
		पाप	एसतेर की दावत		
		न्याय			
				यहूदियों की महान मुक्ति	
		विजय			
		पुरिम की दावत			
					४७७ ई. पू.

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयां :

उत्पादक : अनजान; होसकता है की मोरडेकाई हो।

लिखने की तिथी : ४०० ई.पू.

विषय : पुरिम के खाने की स्थिती

मुख्य वचन : "क्योंकी जो तू इस समय चुपचाप रहे, तो और किसी न किसी उपाय से यहूदीयों का छुटकारा और उध्दार हो जाएगा, परन्तु तू अपने पिता के घराने समेत नाश होगी। फिर क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिये राजपद मिल गया हो।" (४:१४)

एतिहासिक पृष्टभूमी : एस्तेर जिसके अर्थ है सितारा, पुराने नियम के इतिहास का अन्त करता है। क्षयर्ष राजा ही जेरजेस था, पर्शिया का राजा। उस वक्त यहूदी पर्शिया में वनवास में रह रहे थे।

विवाद के प्रश्नेंं :

१. एस्तेर के चरित्र का चित्रण कीजीए।

२. एस्तेर की तुलना रूत के साथ करीए।

३. चाहे इस पुस्तक में न तो परमेश्वर का और न ही शैतान का वर्णन है परन्तु उनके प्रभाव का अनुभव किया जा सकता है। एस्तेर में उन सामान्य घटनाओं की सूची बनाईए जो आप के अनुसार आत्मिक मूल की हैं। अपने जीवन में इन का असर देखीये।

४. इस कहानी की घटनाओं की सूची बनाईए, यहूदीयों के विरूध बडती विरोध, बदलाव का केंद्र और विरोध का हटाना।

५. परीज्ञानों, निरूपणों, प्रश्नों और कुछ निजी विचारों को जो पवित्रात्मा आप के जीवन में कर रही है, लिख लीजीए।

न्याय और इतिहास पर पुणर निरिक्षण का पन्ना :

बाईबल के भविष्य के मन्न के वक्त यह बहुत ही मददगार होगा की आप इस पन्ने में जो कहा गया है उसे भर लें। अन्तिम परिक्षा के समय भी यह आप की मदद करेगा।

	पुस्तक का नाम	विषय	मुख्य व्यक्ति या घटना

यह भी करीए की पिछले पाठों में जो सीखा है उस में से दस वचन याद करके लिखलें, संदर्भों सहित।

अय्यूब

<table>
<tr><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td><td colspan="2">समस्या</td></tr>
<tr><td></td><td></td><td rowspan="30">एलिफज बिलदाद और जेफर का अय्यूब के साथ वार्तालाप</td><td rowspan="30">बुरी सलाह</td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
</table>

<table>
<tr><td></td><td></td><td rowspan="6">एलिहु बोलता है</td><td rowspan="10">अच्छि सलाह</td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td><td rowspan="4">परमेश्वर बात करता है</td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td><td colspan="2">प्रायश्चित और पुणर निर्माण</td></tr>
</table>

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयां :

उत्पादक : अनजान;

लिखने की तिथी : अनजान;

विशय : अय्यूब की पीडा की समस्या

स्थान : उज देश

टिप्पणी : अय्यूब ४२:७-९ में परमेश्वर एलीपज, बिल्दद और सोपरकी सलाह को विषेश रूह से ठुकराता है। परन्तु एलिहू की सलाह को परमेशवर ने स्वीकार किया और अय्यूब से वार्तालाप के समय उसका प्रयोग भी किया।

विवाद के प्रश्न - अय्यूब :

१. अ) अय्यूब बिमार कैसे पडा?

ब) उसके दोस्तो ने क्या कारण सोचा?

स) क्या आज भी उस तरहा की सलाह दी जाती है?

२. किसी सादृश्य और अपने पवित्रशास्त्र के ज्ञान का उपयोग कर, विवाद करीए:

अ) आपकी सेहत और बिमारी के विषय परमेश्वर की इच्छा (व्यवस्थाविवरण २८ का उपयोग करें)।

ब) जितना हो उतने बहाने बताईए की आप क्यों बिमार पडना चाहते हैं।

स) यदी आप बिमार पडते है तो आप क्या करेंगे।
इस बात का ध्यान रहे की आप जो भी कहें उसको पवित्रशास्त्र का सहारा दें।

३. अय्यूब १:८ और २:३ में परमेश्वर कहता है की अय्यूब "खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला" है। परन्तु ४२:५,६ में जब परमेश्वर उससे बात करके हटता है तो अय्यीब धूली और राख में पश्चताप किया। इस लिए पाठ २ और ४२ के बीच अय्यीब पाप में गिर गया। ढूंढीये और लिखीये की वह पाप क्या थे।

४. आप के नये नियम के ज्ञान से यह बताईये की क्या परमेश्वर आज के समय में भी वही होने देता है जो अय्यूब के वक्त हुआ? अगर हाँ, तो हम इस का सामना कैसे करें?

५. परीज्ञानों, निरूपणों, प्रश्नों और कुछ निजी विचारों को जो पवित्रात्मा आप के जीवन में कर रही है, लिख लीजीए।

भजन संहिता :

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयां :

उत्पादक : तिहत्तर भजन दाऊद ने लिखे, जिसे इस्राएल का मधुर भजन लिखने वाला कहा गया (२ शमूएल २३:१)। दूसरे उत्पादक हैं: कोराह, असफ, सुलेमान, ऐथन, हरसन और मूसा।

लिखने की तिथी : १००० ई.पू. - ५०० ई. पू.

विषय : भजन मनुष्य के दिल की पुकार है जो परमेश्वर तक पहुँचती है। इसलिए यह बहुत

व्यवहारिक है और इन्हें अपने जीवन में लागू कर सकते हैं। यह बातों को ध्यान में रख कर पढीए।

टिप्पणी : इब्रानियो में भजन संहिता का अर्थ स्तुती गीत है। युनानी में इस का अर्थ है गीत जिन्हें तार वाले साजों के साथ गाया जा सके।

यह भी, जब आप भजन पढें तो आप कई तरहा के भजन पाऐंगे :

१. शिक्षा देने वाले

२) इतिहास

३) स्तुती और धन्यवाद

४) पापों का स्वीकारना

५) विनती ६) मसीहत

७) प्राकृति में परमेश्वर का हाथ

८) वे भजन जो यहूदीयों के मंदिर को जाते हुए दर्शाते हैं (१२०-१३४)

९) शापयुक्त या निन्दा करने वाले भजन।

विवाद के प्रश्न - भजन संहिता

१. भजन ५१ दाऊद के चरित्र के बारे में क्या बताता है?

२. परमेश्वर की उपस्तिथी में जाने के बारे में क्या शिक्षा देते हैं भजन।

३. प्रार्थना पूर्वक इन विचारों पर जो भजन में मिलते हैं ध्यान लगाईए: आराधना, अंगीकार और

बंधुत्व।

४. तरक्की के बारे में भजन क्या बताते हैं?

५. परमेश्वर जो प्राकृति में उपस्तित है, उस के बारे में भजन क्या बताते हैं?

६. परमेश्वर के वचन के महात्व के बारे में भजन क्या बताते हैं?

७. शत्रु से मुक्ति के बारे में भजन क्या बताते हैं?

८. परीज्ञानों, निरूपणों, प्रश्नों और कुछ निजी विचारों को जो पवित्रात्मा आप के जीवन में कर रही है, लिख लीजीए।

नीतिवचन

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयां :

उत्पादक : सुल्मान मुख्य उत्पादक हैं (१:१)

लिखने की तिथी : प्रायः ८८० ई.पू.

टिप्पणी : नीतिवचन संक्षिप्त में बुध्दि की बातें हैं जिन के व्दारा हम अपने जीवन पर राज्य और शासन कर सकते हैं। माना जाता है की नातिवचन स्वर्ग से पृथ्वी को भेजे गये दैवी न्याय हैं।

विषय : इस पुस्तक में संक्षिप्त नीतिवचन हैं जो हमारे जीवन के कई क्षेत्रों के लिए न्याय बताते हैं। निम्न दिये गये क्षेत्रों में नीतिवचन का संदर्भ देते हुए, अपनी एक निजी

सूची बनाईए :

१. बुध्दी क्या है? (बुध्दी को स्पष्ट करीए)।

२. बुध्दि कैसे पाई जा सकती है - उसका मूल बताईए।

३. बुध्दि की बहुमूल्यता (और मूर्खता से उसकी तुलना)।

४. दोस्तों के विषय में बुध्दि।

५. परमेश्वर के विषय में बुध्दि।

६. अपराध और निर्दयता के विषय में बुध्दि।

७. लालसा, व्यभिचार और वेश्यवृति के विषय में बुध्दि।

८. अनुशासन, निर्देश और शोधन के विषय में बुध्दि।

९. पैसे के विषय में बुध्दि।

१०. जीभ के विषय में बुध्दि (प्रलाप, झगडा, गाली)

११. अच्छे चरित्र के विषय में बुध्दि।

१२. कोमलता, कठोरता और गुस्से के विषय में बुध्दि।

१३. मदिरा पीने के विषय में बुध्दि।

१४. आल्सय और मेहनत के विषय में बुध्दि।

१५. एक धार्मिक स्त्री के विषय में बुध्दि।

विवाद के प्रश्न - नीतिवचन

१. आपके इस समय के जीवन में जो नीतिवचन अर्थ रखता हो उसकी सूची बनाईए। हर नीतिवचन को लिख कर बताईए की वह आपके हृदय से क्या कह रहा है।

२. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

सभोपदेशक

<table>
<tr><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td><td rowspan="4">सब कुछ निःसारता है</td><td rowspan="12">सुलेमान व्दारा जीवन में अर्थ की खोज</td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td><td rowspan="7">जीवन के निःसारता पर नीतिवचन</td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td></td><td>अन्त</td></tr>
</table>

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयां :

उत्पादक : सुल्मान मुख्य उत्पादक हैं (१:१)। एक व्यक्ति जिसके पास वह सब कुछ था जो दुनिया उसे दे सकती थी: पैसा औरतें, प्रसिध्दि और हर संतोष। एक वर्ष में उसने ३० करोड डालर का सोना पाया (२ इतिहास ९:१३)

लिखने की तिथी : सुलेमान के शासनकाल में (९२० ई.पू. - ८८० ई.पू.)

विषय : दुनिया की दृष्टि से सुलेमान का जीवन के साथ संघर्श।

मुख्य वचन : "अन्त की बात यह है की परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर।" (1:13; 12:13)

मुख्य शब्द : अभिमान (३७ बार), परिश्रम (२३ बार), बुराई (२२ बार)

मुख्य वर्णन : आत्मा का क्लेश (९ बार), सूर्य के नीचे (२९ बार)

टिप्पणी ': इस पुस्तक का नाम यूनानी भाषा में पुराने नियम से लिया गया है और इस का अर्थ है एकत्रित करने वाला।

विवाद के प्रश्न - सभोपदेशक :

१. सुलेमान ने जीवन में अर्थ खोजने के लिए क्या किया जो की बेअर्थ निकला?
अपने जिवन में इसे लागू करीए: क्या आपने कभी जीवन का अर्थ खोजना चाहा या खोज रहे हैं परन्तु जो राह आप अपना रहे हैं उस से कोई मार्ग नहीं निकलता?

२. जीवन में अभिमान के बारे में सुलेमान कौन सा नीतिवचन बताता है जो आप को अच्छा लगता है? सतर्क रहें - कुछ नीतिवचन परमेश्वर की बुध्दि से नहीं परन्तु मनुष्य की बुध्दि से लिखे गये हैं।

३. दाऊद की दृष्टि से जीवन और उस के पुत्र सुलेमान की दृष्टि की तुलना कीजीए। उनके भाग और भाग्य की भी तुलना कीजीए। उन सच्चाई में से क्या कुछ आपके जीवन में लागु होती है।

४. परीज्ञानों, निरूपणों, प्रश्नों और कुछ निजी विचारों को जो पवित्रात्मा आप के जीवन में कर रही है, लिख लीजीए।

श्रेष्ठगीत

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयां :

उत्पादक : सुल्मान (१:१)।

लिखने की तिथी : सुलेमान के शासनकाल में (९२० ई.पू. - ८८० ई.पू.)

विषय : सुलेमान ने अपनी दुल्हन के लिए जो शुध्द प्रेम अनुभव किया।

लाक्षणिक दृष्टि : क्योकि यह एक दुल्हे और दुल्हन के प्रेम के बारे में बताता है, यह परमेश्वर का उसके दुल्हन के प्रति प्रेम को भी दर्शाता है, जो इस्राएल है (यर्मयाह ३:१) और मसीह का उसके दुल्हन के प्रति जो गिरजाघर है (२ कुरि ११:२; प्राकाशित १९:६-९)।

टिप्पणी : पुस्तक की स्थिती कुछ सप्षट नहीं है क्योंकी यह तीन बोलने वालों के मध्य तेजी से घूमती है :

१. दुल्हन जो की शुलामाईट है

२. राजा, सुलेमान

३. महल में औरतों का समूह जिन्हें यरूशलेम की पुत्रीयां कहा गया है।
निम्न बोलने वालों की पहचान दी गयी है।

1:1	नामलेख	5:2-8	दुल्हन
1:2-5a	दुल्हन	5:9	यरूशलेम की पुत्रीयां
1:5b	सुलेमान	5:10-16	दुल्हन
1:6-7	दुल्हन	6:1	यरूशलेम की पुत्रीयां
1:8-11	सुलेमान	6:2,3	दुल्हन
1:12,13	दुल्हन	6:4-10	सुलेमान
1:14-17	सुलेमान	6:11,12	दुल्हन
2:1	दुल्हन	6:13a	यरूशलेम की पुत्रीयां
2:2	सुलेमान	6:13b	दुल्हन
2:3-3:5	दुल्हन	6:13c-7:9	सुलेमान
3:6-10	यरूशलेम की पुत्रीयां	7:10-8:4	दुल्हन
3:11	दुल्हन	8:5a	यरूशलेम की पुत्रीयां
4:1-15	सुलेमान	8:5b	सुलेमान
4:16	दुल्हन	8:6-8	दुल्हन
5:1a	सुलेमान	8:9	सुलेमान
5:1b	यरूशलेम की पुत्रीयां	8:10-14	दुल्हन

विवाद के प्रशन - श्रेष्ठगीत

१. आपने परमेश्वर की दृष्टि से विवाहित प्रेम के बारे में केया सीखा और उसके मुखय तत्व क्या हैं?

२. क्योंकि गिरजाघर मसीह की दुल्हन है, तो कौन से सच आप के मसीह के साथ रिश्ते को दर्शाते हैं?

२. परीज्ञानों, निरूपणों, प्रश्नों और कुछ निजी विचारों को जो पवित्रात्मा आप के जीवन में कर रही है, लिख लीजीए।

भविष्यवक्ताओ का परिचय :

१.भविष्यवक्ताओ के समय के तीन दुनिया का राज्य

१. असीरिया का राजः असीरिया के राज की राजधानी निनयानवे थी, ६११ ई.पू. में इस्राएल की दस जातीयों बंधुआ बनाया। यह कभी वापस नहीं आयीं और ईन को खोयी हुई जातीयां कहते हैं।

२. आधुनिक बाबुल राज्य - कालदीनों

बाबिलियों (आधुनिक बाबुलीयों) ने असीरियों का नाश किया और वे अगले दुनिया के राज्य बनें। नबूकदनेस्सर ने दक्षिण की दो जातीयों को बंधुआ बनाया ४७७ ई.पू. में।

३. मेदो - परसियन राज्य

यहूदा के ७० सालों के बंधुआ के बाद बाबुल परसिया के राजा के सामने गिर गया जिसने यहूदीयों को यरूशलेम वाहस जाने दिया।

भविष्यवक्ताओ का जीवन काल	**इस्राएल**	**यहूदा**	**गैर यहूदी**
चार बडे भविष्यवक्ताओ और	होशे	यशायाह	योना
१२ छोटे भविष्यवक्ताओ ने ६९०	आमोस	यिर्मयाह	नहूम
ई.पू. से ३७५ ई.पू. तक ३१६	मीका	योएल	हबकूक
वर्षो तक भविष्यवाणी करी, उन	सपन्याह	ओबध्दया	
का प्रचार मुख्य रूप से इन		यहेजकेल	
समूहों पर थाः		दानियल	
		हाग्गै	
		जकर्याह	
		मलाकी	

भविष्यवक्ता वह है जिसे परमेश्वर बुलाता है की वह उसका वचन आदमी तक पहुंचाए। इसने भविष्य बताने का रूप धारण किया, जिस में भविष्य बताना भी था। भविष्यवक्ताओ को परमेश्वर के लोग, सिध्द पुरूष, और यहोवा का सेवक कहा गया है। परमेश्वर की दृष्टी में यह दुनिया इन लोगों के लायक नहीं थी, वे रेगिस्तानों और पहाडियों पर, और गुफाओं और पृथ्वी की दरारों में भटकते फिरे। (इब्रा ११:३८)।

भविष्यवक्ताओ के उपदेश निम्न विलक्षण से पहचाने जाते थे :

१. परमेश्वर और मनुष्य की महान सच्चाईयों के बारे में निर्देश।

२. जो पाप में जीवन व्यतीत कर रहे हैं उनके लिए चेतावनी और प्रार्थना।

३. जो परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं उनके लिएआस्वासन और प्रोत्साहन।

४. होने वाली घटनाओं की भविष्यवाणि।

५. परमेशवर की पवित्रता की समझ।

úxmsª

JÊÁµvù

R¶Vx¤

1 ¶W®ªs

[ÌÁV

1 ¶Vxt

ÛÇÁx

mns©vù

ÛCÁ

A®ªsW

!x¤!!

एङ्घच्ध्र्श्झ्र्जर्ह्यिज

1 ¶\/ 1ËÆ

x¤¦Ü[}tsQ

म्ल्मडघ्ख्त्ह्मह्यम्र्व

न्ष्ह्मत्र्श

@xt‹swLRiVNRPV

ढ़टझ्रस्डहय्ह्मज्ज

1 ¶W/{ts

DÑêÁ¸R¶

ª«sV©«

¦¦z¤¦¦¦Ñ

@®ªsW

N]][Li[xt

A®µ¶[aS©

R¶VWµv

70

1 ¶Vx¤¦Ü[R¶W¥!!!CÁÙ. 1 ¶Vx¤¦Ü[R¶WNUP©«sV. ÛCÁNRPLSù. xtsQÌvÁWª«sVVÌÁ

यशायाह

##				वर्ष
1.		यहीदा और यरूशलेम के विष्य में भविष्यवाणी	न्याय के विष्य में भविष्यवाणी (बन्दी बनाने से पहले)	६४९ ई.पू.
2.				
3.				
4.				
5.				
6.				
7.				
8.				
9.				
10.				
11.				
12.				
13.		आस पास के राजयों के विष्य में भविष्यवाणी		
14.				
15.				
16.				
17.				
18.				
19.				
20.				
21.				
22.				
23.				
24.		भविष्य में न्याय और परमेश्वर का		
25.				

26.		राज्य		
27.				
28.		इफरीया और यरूशलेम पर दःख के विष्य में भविष्यवाणी		
29.				
30.				
31.				
32.		धार्मिक राजा का वादा		
33.				
34.				
35.				
36.		एतिहासिक अनुवाद / हिजकिया		
37.				
38.				
39.				
		मुक्ति का वादा (सीरिया और मसीह)	आश्वासन के विष्य में भविष्यवाणी बंदि बनाए जाने से लेकर आगे तक	
		मसीह के व्दारा मुक्ति		

				५८८ ई. पू.
		भविष्य का राज		

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयां :

उत्पादक : यशायाह (१:१)

लिखने की तिथी : प्रायः ५८० ई.पू.

विषय : मसीह की महान भविष्यवाणि

मुख्य विचार : धार्मिक राजा

एतिहासिक पृष्ट भूमि : यशायाह ने उज्जियाह, योताम, आहाज और हिजकिय्याह राजाओं के राज्य में भविष्यवाणि करी। इस समय के प्रारंम्ब में यहूदा और इस्राएल राजनैतिकता में और मितव्ययता में सफल थे, जिस के कारण सामाजिक और नैतिक बुराई फैल गयी। यशायाह ने भविष्यवाणि करी की इस्राएल पर असीरियाह और यहूदा पर बाबुल राज्य करेगा।

टिप्पणी : यशायाह को पुराने नियम की इंजील कहा जाता है।

मुख्य : इस बात पर ध्यान दीजीए की भविष्यवाणि पहले भविष्यवक्ता के समय की होनी चाहिए और

बाद में अगर आवश्यक्ता हो तो आने वाले समय की।

विवाद के प्रश्न : यशायाह

१. व्यवस्थाविवरण के पाठ २८ में लोगों के लिए परमेश्वर की वाचा की, आशीष की और शापों की सूची है।

विवाद के प्रश्न - यशायाह

व्यवस्थाविवरण पाठ २८ में उसके लोगों के लिए, परमेश्वर के वाचा की आशिष और शाप कि सूची है

अ) परमेश्वर की आशीषों की सूची बनाईए जो वह उसका आदेश मानने वालों को देना चाहता है।

ब) जो आदेश न मानने पर मिलने वाले शापों की सूची बनाईए
(२ कुरि १:२० भी देखें)

स) क्या आप मानते हैं की जो अमेरिका का इतिहास है वह उस पाठ के वादे का कार्य है?

द) इस बात पर ध्यान दीजीए की आने वाले महिनो मे भविष्यवक्ताओ ने आने वाले महिनों में कैसे बताया की इस्राएल का इतिहास, व्यवस्थाविवरण २८ के वादो का कार्य है।

२. यशायाह की एतिहासिक पृष्ट भूमि के लिए राजा १५:१-२०:२१ और २ इतिहास २६:१-३२:३३ मे पढिए।

अ) जब यशायाह भविष्यवाणी कर रहे थे तो उस समय इस्राएल और यहुदा में जो घटनाऐं हो रही थीं उन की सूची बनाईए।

ब) क्या यशायाह ने इस्राएल और /या यहूदा के बंदुआ होने से पहले, होते वक्त या होने के बाद भविष्यवाणी करी थी।

स) किस तरहा के लोगो (देशों) के लिए यशायाह मूल रुप से भविष्यवाणी करते थे?

३) यशायाह ६:१-९ में यशायाह का भविष्यवक्ता के रुप में तैयार होना और बुलाया जाना बताया गया है उन बातों को लिख लीजीए जो आप समझते है की परमेश्वर के प्रचारक के रुप में तैयार होने में मदद करते हैं।

४. पाठ एक से बारह में यशायाह, इस्राएल और यहूदा के विरुध परमेश्वर के न्याय की

भविष्यवाणी दे रहे है।

अ) उन दुर्भाग्यों की सूची बनाईए जो परमेश्वर इस्राएल और यहूदा पर लाने जा रहा था।

ब) इन्हें उन वाचा से तुलना करीए जो परमेश्वर ने इस से पूर्व कही थी की, यदी वे उसे छोड देंगे तो वह उन के साथ करेगा। व्यवस्थाविवरण २८ या जो भी वचन आप चाहते है प्रयोग करीए।

५. जब आप पढ़ रहे हों तो इस पुस्तक का भाग निम्न दीए गए श्रेणीयों में आता है, लिखीए।

अ) लिखने के समय से ले कर बंधुआ होने तक।

ब) बंधआ होने से ले कर मसीह के जन्म तक।

स) मसीह के जन्म से लेकर दुबारा आने तक।

द) मसीह के दुबारा आने के बाद।

जितना हो सके बाईबल की भविष्यवाणीयों को जो पूरी हुई हैं बताईए और जो आप समझते है की मसीहत के युग से संम्पर्क रखती है। संदर्भ देखीए और चार सूचीयों के साथ एक समतल पृष्ट खोलीए।

६. पाठ १३-२३, में यशायाह इस्राएल के चारों और के देशों के विरुध परमेश्वर के न्याय की भविष्यवाणी कर रहा है।

अ) चित्र बनाईए १) देश जिन्हें शाप दिया जा रहा है;
२) न्याय के विशेष कारण, यदि दिए गए हों,
३) शाप के मुख्य तत्व

ब) चित्र बनाने के बाद देखीए की क्या उन में से कुछ आप के देथ के लिए है। इस क्रम का प्रयोग करें

देश	**कारण**	**शाप**

७. यशायाह ३५:८ पवित्रता की प्रधान सड़क के बारे में बताता है। यह विचार पूरी किताब में पाया जाता है। दूसरे संदर्भों और वचनो का प्रयोग कर के इस विचार को जो प्रधान सड़क मार्ग और रास्ते के बारे मे बताता हो लिख कर इस पर विवाद करीए (यशायाह २६:७, ४२:१६ और ४३:१९ भी देखीए)

८. पाठ ३५ में, यशायाह भविष्य की आशीष को इन माध्यमों के द्वारा दर्शाया गया है (दूसरी चीज़ो में) जैसे रिगिस्तान में नदीयाँ और खिला हुआ रेगिस्तान। इस पाठ और यशायाह ४४:३ के कुछ संदर्भों का प्रयोग कर के इस विषय को पूरे यशायाह में खोजे। इन रुपकों का आर्थ मालुम कर उस पर विवाद करें और पवित्राशास्त्र में इसे पूरा होते देखीए।

९. यशायाह के कई पाठों में परमेश्वर के साम्राज्य के बारे मे बताया गया है।

अ) प्रार्थनापूव्रक यशायाह १०:५-१९, ४५:१-२५, और ४६:८-११ पर ध्यान लगाईए।

ब) उन वाक्यों और वचनों को लिखलें जो कई लोगो और घटनाओं पर परमेश्वर का नियंत्रण बताते हैं।

स) इन वाक्यों से क्या सिधांत बनते है?

द) यह सच्चाईयां आप के जीवन पर क्या प्रभाव डालती है

१०) यशायाह ४५:१५ परमेश्वर के स्वभाव के बारे में एक मुख्य स्च्चाई बताता है। दुसरे वचनों का प्रयोग कर इस के अर्थ और प्रमुख्या पर विवाद करीए। (२ इतिहास १५:१५, भजन ११९:१८ नितिवचन २५:२, यर्मायाह २९:१२-१४, मत्ती १३:१०-१६ और इफिसियों १:१७,१८, भी देखीए)

११. यशायाह, जिन्होंने मसीह के जन्म के ६०० वर्ष पहले भविव्यवाणी की थी, हमे मसीह के जीवन की कई बाते बताती है। इन चार भविष्यवाणीयों पर ध्यान लगाईए और यशायाह मसीह के बारे में क्या कहता है उसे लीखीए: ४२:१-४, ४९:१-१३, ५०:४-११, ५२:१३, ५३:१२। जितना हो सके बताईए की यह बाते मसीह के जीवन मे किस तरहा पूरी हुईं।

१२. यशायाह ५६:१-६ में। ऐसा लाता है जैसे परमेश्वर उन की आवश्यक्ताओं को जिन्हे वे आशीष देना चाहते है संक्षीषत मं बता रहे हैं। एक वाक्य जिस का प्रयोग बार बार किया गया है जो विश्राम दिन को अपवित्र करने से बचे रहते हैं। नए नियम में सबत दिन के विश्राम के संदर्भ में नए वाचा की इस आवश्क्ता पर विवाद करीए। (इब्रानियों चार भी देखें)। अपने जीवन में इस का प्रयोग करें।

१३. सारी बाईबल में से, यशायाह ५८ में, उपवास पर बहुत ही मुख्य शिक्षा दी गयी है। इस पाठ पर ध्यान लगाईए और निम्न दिए गये प्रश्नों के उत्तर दीजीए।

अ) वचन तीन में, इस्राएल परमेश्वर से पूछता है, क्या कारण है की हम ने तो उपवास रखा, परन्तु तू ने इसकी सुधी न ली? अपने अत्तर में जो परमेश्वर ने कहा वह उपवास क्या है?

ब) अपने शब्दों मे लिखीए की, परमेश्वर किस तरहा के उपवास की इच्छा रखता है?

स) एक सही उपवास का प्रतिफल, परमेश्वर का क्या वादा है (उन शब्दो मे लिखीए जो अर्थपूर्ण हों)

द) आपके जीवन में जो सही है उसे अपनाऐं।

१४. परिज्ञानों विचारों प्रश्नों और निजी उपयोंग जो पवित्रात्मा आप को जीवन में कर रहा है, इन सब को लिख लीजीए।

यिर्मयाह

##	पाठ शीर्शक			वर्ष
1.		स्थापना	यिर्सयाह की नियिक्ति करी	५२० ई.पू.
2.		जन संदेश		

3.			गयी:	
4.				
5.				
6.			१. उखाडने का लिए	
7.				
8.				
9.			२. तोडने का लिए	
10.				
11.				
12.				
13.			३. नष्ट करना	
14.				
15.		भविष्यवाणि और निजी अनुभव	४. गिरा देना	
16.				
17.				
18.			५. निर्माण	
19.				
20.				
21.			६. स्थापित करना	
22.				
23.				
24.		बंदी बनना निश्चय के भविष्यवाणि		
25.				
26.				
27.				
28.				
29.				
30.		पणर्निर्माण के विष्य भविष्यवाणि		
31.				
32.				

<table>
<tr><td>33.</td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td>34.</td><td></td><td rowspan="5">बंदि बनाए जाने से पहले अन्तिम घटनाऐं.</td><td rowspan="19">यिर्मायाह १:१०</td><td rowspan="19">४४० ई.पू. .</td></tr>
<tr><td>35.</td><td></td></tr>
<tr><td>36.</td><td></td></tr>
<tr><td>37.</td><td></td></tr>
<tr><td>38.</td><td></td></tr>
<tr><td>39.</td><td></td><td rowspan="6">Âबंदि बनाया जाना और मिस्त्र को जाना</td></tr>
<tr><td>40</td><td></td></tr>
<tr><td>41.</td><td></td></tr>
<tr><td>42.</td><td></td></tr>
<tr><td>43.</td><td></td></tr>
<tr><td>44.</td><td></td></tr>
<tr><td>45.</td><td></td><td>बरूच</td></tr>
<tr><td>46.</td><td></td><td rowspan="6">आस पास के राज्यों के विष्य में भविष्यवाणि</td></tr>
<tr><td>47.</td><td></td></tr>
<tr><td>48.</td><td></td></tr>
<tr><td>49.</td><td></td></tr>
<tr><td>50.</td><td></td></tr>
<tr><td>51.</td><td></td></tr>
<tr><td>52.</td><td></td><td>परिशिष्ट</td></tr>
</table>

इस पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयाँ :

उत्पादक : यिर्मयाह (१:१) रोता हुआ भविष्यवक्ता (विलापगीत ३:४८, ४९) परमेश्वर ने यिर्मयाह को विवाह करने से रोका (१६:२) या खुशी या भोजन के घर में जाने नही दिया (१६:८)

लिखने की तिथी : पूस्तक के कुछ अंश ४९५ ई.पू. मे लिखे गए (३६:१)

विषय : विरोधि यहूदा के न्याय और बंधुआ बनाने की भविष्यवाणीयां। यिर्मयाह के प्रचार के मुख्य तत्व मे से, चार, गिरा देने वाले है, और दो पूर्ण निर्माण के (१:१०)

मुख्य वचन : तलवार, आकाल, महामारी

एतिहासिक पृष्ठ भूमी : २ राजाओं २२-२५ और २ इतिहास ३४-३६। करीबा १०० वर्ष पूर्व असीरिया ने इस्राएल को बधुंआ बनाया था। यहूदा पाप करता रहा और परमेश्वर के न्याय का समय उस पर आत्मिक गया हैं। पुस्तक के कुछ भाग मे नबूकेदनज़र जो की बाबुल के राजा थे, यहूदा को बंधुआ बना लिया है। परन्तु, परमेश्वर नबूकेदनज़र की बुराईयों की सजादिए बिना नहीं रह सकता। अन्त के कुछ पाठों में, बाबुल के न्याय के बारे मे भी बताया गया है।

टिप्पणी : यिर्मयाह कालक्रम के अनुसार नहीं लिखा गयौ है।

विवाद के प्रश्न :

१. २ राजाओं २२-२५ में सिर्भयाह पुस्तक की पृष्ठ भूमि के बारे मे पढ़ीयों। उन घटनाओं की सूची बनाईए जो यिर्मयाह की भविषयवाणी के समय यहूदा मे हो रही थी।

२. १:४-१० मे यिर्मायाह के बुलाए जाने पर ध्यान लगाऐं और २०:७-९ भी देखें।

अ) यिर्मयाह के प्रचार के बारे में आप क्या सच्चाई सीखते है?

ब) परमेश्वर के द्वारा बुलाए जाने में आप किन शिद्धातों को अपने ऊपर लागू करेंगे ?

३. यिर्मयाह की पुस्तक में परमेश्वर कई "वस्तु के पाठों" का प्रयोग करते हैं। आप पढ़ते समय जो वस्तु पाते हैं उन की सूची बनाईए और उन का अर्थ लिखिए। (उद्धहारण १:११,१२,१३-१६)

४. यिर्मयाह ११:१-१० पढ़ीए। उन आशिर्वाद और शापो की सूची से जो आप

ने यशायाह के पहले प्रश्न मे बनाई थी, बताईए की पूरी यिर्मयाह की पुस्तक में परमेश्वर किस तरहा व्यवस्थाविवरण २८ के वादों को निभा रहा है।

५. यिर्मायाह पाठ १० का प्रयोग कर, मूर्ती और सच्चे परमेश्वर की तुलना करीए। प्रार्थनापूर्वक भेदों पर ध्यान दीजीए और अपने ध्यान के नतीजों को लिख लीजीए। (आप यिर्मयाह ५१:१४-१८ और यशायाह ४४ और कुछ और संदर्भों का प्रयोग कर सकते हैं)

६. न्याय और इतिहास की पुस्तक मे परमेश्वर की लंम्बी पीड़ी साफ दिखाई पढ़ती है।भविष्यवक्ता उस को धार्मीक न्याय के बारे में बताते हैं। निम्न वचनों पर ध्यान लगाईए और बताईए की वे परमेश्वर के प्यार और न्याय के बारे में क्या बताते हैं:यिर्मयाह ७:१६;११:१४,१४:१०-१२,१५:१,१८:१-११,२६:१,२ और इन के अलावा और जो भी संदर्भ आप जोड़ना चाहते हों।

७. यिर्मयाह अच्छे और बुरे चखाह के बारे में क्या बताता है? (पाठ २३ पहली से आठवीं आयत तक देखीए और साथ में जुड़े हुए कुछ और संदर्भ-भी) आज के लिए कुछ अपनाया जा सकता है।

८. यिर्मयाह २०:९ और १३:९-४० मे सच्चे और झठे भवीव्यवक्ताओं के बोर में क्या कहता है? कुछ और संदर्भों का प्रयोग कर आज के लिए अपनाईए।

९. पाठ २९-३३ इस्राएल के दुबारा लौटाए जाने के बोर में है। इन में से कई भविष्यवाणीयाँ मसीह और गिरजाघर में पूरी होती हैं।

अ) प्रार्थनापूर्वक उन पाठो पर ध्यान लगाईए इन बातो को मध्यनज़र रखते हुए और उन वचनों की सूची बनाईए जो इस वर्ग मे आती हैं।

ब) नए नियम का प्रयोग कर, इन के पूरे होने पर विवाद करें।

१०. यिर्मयाह में परमेश्वर को कई तरहा से चित्रांकण किया गया है।

अ) निम्न वचनों में किस तरहा चित्रांकण किया गया है लिखिए:

२:१३,२३:५,६; ३०:९, ३१:१० और ५०:३४।

ब) जितना अधिक हो सके, एक नए नियम का वचन लिखीए जो यह बताता हो की मसीह में यह पूरा हुआ।

स) हर चित्र का आप पर क्या प्रभाव डला इस बात को ध्यान में रखते हुए अपने जीवन मे इसे अपनाईए।

११. यिर्मयाह के कई वचनों में परमेश्वर के साम्राज्य के बारे में बतोया गया है

अ) यिर्मयाह २५:९,२७:६,४३:१०,११, ५०:१८,४५, ५१:१,२,६,११,२०-२६ रोमियों १३:१,२, और कोई भी जो आप जोड़ना चाहें, ध्यान लगाईए।

ब) उन वाक्यों और वचनों को लिखीए जो, लोगों और घटनाओं पर परमेश्वर का नियोंत्रण बताते हैं।

स) उन वाक्यों से क्या सिद्धांत बनते हैं।

द) अपने जीवन में अपनाईए।

१२. यिर्मयाह में वह कौन सा विषय है जो बार बार दोहाराया गय है? आप क्या समझते हैं की परमेश्वर इन विषयों को दोहानें में इतना समय क्यों लगा रहे हैं?

१३. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

विलायगीत

##	पाठ शीर्स्क		वर्ष
1.		दुःखि सिओन	४७७ ई.पू. .
2.			
3.		पिढित सिओनवासी	
4.			
5.			

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ:

उत्पादकः यिर्मयाह, रोता हुआ भविष्यवक्ता (विलाप ३:४८,४९) परमेश्वर ने यिर्मयाह को विवाह करने से रोका (१६:२) या खुशी या भोजन के घर में जाने नहीं दीया (१६:८)

लिखने की तिथी : प्रायः ४७७ ई.पू.

विषय : सियोन के दुःख और उस के चले गए लोगो की तकलीफें।

मुख्य शब्द : विलाप, दुःख, रोना

एतिहासिक पृष्ठ भूमी : यूनानी भाषा की बाईबल में यूँ लिखा गया है। और "इस तरहा हुआ की जब इस्राएल को बंधुआ बना कर ले जाया गया तो यिर्मयाह बैठ कर रोने और विलाप करने लगा और यरूशलेम पर इस विलापगीत से विलाप किया"।

टिप्पणी : विलापगीत को एक शोकगीत के श्रृखंला के रुप में डाला गया है, यह उस तरहा लिखा गया है जैसे की राष्ट्रीय अन्त्येष्टी, क्रीया हो रही हो, जिस में इस्राएल की गिरफतारी और बरबादी है। इब्रानी पवित्रशास्त्र मे पाठ एक, दो और चार में २२ वचन है और हर वचन इब्रानी के २२ अक्षरों में से हर एक अझर से क्रम के साथा शुरु होती है। पाठ तीन में, पहले तीन वचन अलेफ से शुरु होते है,

अगले तीन बेत से और इस तरहा। पाँचवें पाठ में २२ वचन है, परन्तु -----------------नहीं है।

विवाद के प्रश्न

१. अ) इब्रानियों की शिक्षा को बताईए १०:२६, २७, ३१.

ब) विवाद करीए की किस तरहा विलापगीत इस शिक्षा का उदहारण है।

स) उन चीज़ों की सूची बनाईए जो, यदी हम इच्छापूर्वक पाप करें तो, परमेश्वर हमारे विरोद मे इस्तेमाल करेगा (जिस तरहा विलापगीत में लिखा गया है।)

द) इस सच्चाई में अपने जीवन की तुलना कीजीए। यदी परमेश्वर आप के साथ अनुशासन के द्वारा बात चीत करे।

२. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

यहेजकेल

##	पाठ शीर्षक				वर्ष
1.		बुलावा और स्थापना	भविष्यवक्ता की तैयारी	महिमा प्रकट होती है	४८४ ई.पू. ७ वर्ष
2.					
3.					
4.		यरूशलेम के विनाश के विषय भविष्यवाणि हुई	यरूशलेम के अवरोध के पहले भविष्यवाणि	महिमा लुप्त हो जाति है	
5.					
6.					
7.					
8.		पाप के विषय दर्शन और न्याय			
9.					
10.					
11.					
12.					
13.					
14.					
15.					
16.					
17.					
18.					
19.					
20.					
21.					
22.					
23.					
24.					

25.		विदेशी राज्यों के विरुध्द भविष्यवाणि	अवरोध के समय		
26.					
27.					
28.					
29.					
30.					
31.					
32.					
33.					
34.		इस्राएल का पुणर्निर्माण	पुणर्निर्माण जो होने वाला है	मपिमा वापस लौट आई	४७७
35.					
36.					
37.					
38.		दुश्मन का विनाश			
39.					
40		मुक्त किया गया समूदाय			१५ वर्ष
41.					
42.					
43.					
44.					
45.					४६२ ई.पू.
46.					
47.					
48.					

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीचाँः

उत्पादक : यहेजकेल, जो की एक याजक था, बूजी का पुत्र (१:३)

लिखने की तिथी : प्रायः ४५० ई.पू

वीषय : पाप के न्याय की भविष्यवाणी और पूर्वावस्था की प्रप्ति जो आने वाली है।

मुख्य वाक्य : मनुष्य का पुत्र (१३ बार) परमेश्वर का वचन मेरे पास आया (४९ बार) वे जान जाऐगे की मैं ही परमेश्वर हुँ - या इसके सामान्य (७० बार); प्रभू परमेश्वर (२०० बार)

एतिहसिक पृष्ठ भूमि : बाबूल ने यहूदा को कई निर्वासन में बंधुआ बना कर लेगए (यिर्मयाह ५२:२७-३०)। पहली बार ४९६ ई.पू. मे, दूसरी बार ४८९ ई.बू. में, और तीसरी बार - जीस समय मे यरूशलेम की बरबादी है - ४७७ ई.पू. में।

यहेजकेल ने २२ बर्षौं तक भविष्यवाणी करी जब बाबूल के बंधन में थे, ४८४ ई.पू. से प्रारम्भ कर के, जब राजा जेहोईयचिन को दूसरे निवासन में बाबूल कैद कर के ले गए थे,उसके केवल पाँच वर्ष बाद। यरूशलेम अभी स्थिर खड़ा था और उस वक्त यहेजकेल ने बाबूल के हाथों उसकी बरबादी के भविष्यवाणी करी थी, और उन के साथी यिर्मयाह यरूशलेम से ही उसकी बरबादी का प्राचर कर रहे थे।

टिप्पणी - यहेजकेल ने कई बार चार जीवित प्राणीयों का दृष्य जो वह पा रहा था उस को बारीकी से बताया। ऐसे लगता है जैसे उन प्राणीयों की ना तो आप तुलना कर सकते हैं और न ही इन की व्याख्या कर सकते है; परन्तु इसे परमेश्वर की और उस के सेवकों की महीमा, मनुष्य के तौर से बताया गया है (यहे १:२८)

विवाद के प्रशन - यहेजकेल

१. क्योंकी यहेजकेल, यिर्मयाह का सहपाठी था, आप यिर्मयाह के पहले प्रश्न पर दूबारा जा कर, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखीए।

२. पाठ एक से तीन में यहेजकेल के बुलाए जाने पर प्रार्थनापूर्वक ध्यान लगाईए।

अ) यहेजकेल के प्रचार के बारे में आप क्या सच्चाई सीखते है।

ब) परमेश्वर द्वारा आप को बुलाए जाने पर कौन से सिद्धांत आप पर लागू होते है।

३. यहेजकेल मे परमेश्वर कई "बस्तु के पाठों" का प्रयोग करते हैं। पढ़ते समय जो आप को मिलते हैं, उन की सूची बनाईए, और उन का अर्थ लिखीए।

४. उन वचनों को लिख लें जहाँ पर, "तब तुम (या वे) जान जाऐंगे मैं परमेश्वर हुँ", दोहराया गया है, और इस पर विवाद करीए की वह क्या है जिस से लोग परमेश्वर के साम्राज्य को समझेंगे।

ब) आप की दुनिया में, परमेश्वर के साम्राज्य के बारे में आप की समझ क्या है?

५. अ) जैसे की पाठ १४ में लिखा गया है, परमेश्वर के चार कठोर (या बुरे) न्याय क्या हैं?

ब) क्या यह सच्चाई, आप के दुनिया की दुर्गती या सामान्य जीवन पर की दृष्टी पर असर करती है? क्यों या क्यों नहीं? अपने जवाबों को सहारा देने के लिए पवित्रशास्त्र का प्रयोग करें।

६. जब आप पढ़ते है, तो पहचानीए की कौन से वाक्य या वचन मुक्तिदाता संम्बंधी हैं। उन्हे लिख लीजीए, और उन के अर्थ भी और जितना हो सके नए नियम से प्रमाणित कर लीजीए

७. यहेजकेल ९:१०, ११:२१, २२:३१ और रोमियों ९:२४-३२ पर ध्यान लगाईए।

अ) इस बचन में जो सच्चाई बताई गयी है, उस पर विवाद करे

ब) शाखाओं मे विभाजन कर इस बात पर विवाद करे की यह केसे इन पर लागू होंगे: आप के जीवन में

२. एक पश्चताप न करने वाले पापी के जीवन में और

३) राष्ट्र में।

८. पाठ २५-३३ में, यहेजकेल भविष्यवाणी कर रहा है परमेश्वर के न्याय की जो इस्राएल के चारों ओर के राष्ट्रों के लिए है।

अ) इन राष्ट्रों की सूची बनाईए और उन पर परमेश्वर के न्याय के कारण बताईए।

ब) इस के कारण विदेशी राष्ट्रों से हमारा व्यवहार कैसा होना चाहीए जो मूर्तीपूजा के कारण परमेश्वर के शाप का फल भुगत रहे हैं?

९. यहेजकेल ३४ चरवाहे पर विववाद है।

अ) इस्राएल के चरवाहों ने क्या किया (या क्या नही किया) जिस के कारण वे परमेश्वर की दृष्टि में बूरे ठहरे

ब) अच्छा चरवाहा क्या करेगा?

अ) इन सच्चाईयों को नए नियम के चरवाहे के प्रचार या पादरीत्व पर लागू करीए।

१०. यहेजकेल ३७ सूखी हड़्ड़ीयों की तराई के बारे में दृष्य है। विवाद करीए की यह दृष्य आप की दृष्टि मे किस बात को दर्शाता है, इसके लिए आप पवित्रशास्त्र से कोई भी संदर्भ ले सकते हैं।

११. यहेजकेल ४०-४८ में एक मंदिर का और उस से अंम्बंधित विधियों का
लम्बा दृष्य किस बात को बता रहा है। आवश्यक संदर्भों का प्रयोग करीए पवित्रशास्त्र से अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए (प्रकाशितवाक्य पाठ २१ और २२ मदद कर सकती है)

१२. यहेजकेल ४०-४८ में विधि पर ज्यादा दबाव डाला गया है। यरूशलेम के गिरने से पहले, यशायाह ने परमेश्वर की घृणा के बारे में बताया। इस वचन में क्यों इसे दुबारा डाला गय है? आप के जीवन मे इन में से कुछ लागू करीए।

१३. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

दानियल

<table>
<tr><th>##</th><th>पाठ शीर्षक</th><th></th><th></th><th>वर्ष</th></tr>
<tr><td>1.</td><td></td><td rowspan="4">नबिकदनस्सर</td><td rowspan="6">मुख्यता
एतिहासिक
घटनाऐं</td><td rowspan="12">४९५ ई.पू.

४२४ ई.पू.</td></tr>
<tr><td>2.</td><td></td></tr>
<tr><td>3.</td><td></td></tr>
<tr><td>4.</td><td></td></tr>
<tr><td>5.</td><td></td><td>बेलशस्सर</td></tr>
<tr><td>6.</td><td></td><td>दारियुस</td></tr>
<tr><td>7.</td><td></td><td rowspan="2">दुनिया के राजयों का भविष्य</td><td rowspan="6">मुख्यता भविष्य में होने वाली घटनाओं के दर्शन</td></tr>
<tr><td>8.</td><td></td></tr>
<tr><td>9.</td><td></td><td rowspan="4">इस्राएल का भविष्य</td></tr>
<tr><td>10.</td><td></td></tr>
<tr><td>11.</td><td></td></tr>
<tr><td>12.</td><td></td></tr>
</table>

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ:

अत्पादक : दानियल (१२:४) । पहले निर्वासन के वक्त यहूदी बंधुओ में यह भी था। बंधुआ काल के पूरे ७० वर्षों तक वह बाबुल में रहे।

लिखने की तिथी : प्राय: ४०५ ई.पू

विषय : दुनिया के साम्राज्यों की महान भविष्यवाणीयाँ

मुख्य वाक्या : सबसे उच्च वह है जो मानवता के राज्यो पर राच्य करता है

एतिहासिकता : बाबुल के बंधुआ बनने का समय। चार राजा जो उस पुस्तक में मुख्य भाग में है; आधुनिक बाबुल साम्राज्य से नबूकदनस्सेर और बलशस्सेर और दारा और सीरीया जो की मध्य फारस के साम्रज्यों के राजा थे। मध्य फार्सीयों ने

आधुनिक बाबिलोन को हरा दिया और सीरियो ने यहूदियों को इस्राएल वापस जाने दिया।

दानियल की भविष्यवाणीयों की एतिहासिक ऊपरी दृष्य :

पाठ - २ चार राज्य (बाबिलोन, मध्य- फारस, यूनान और रोमी) और फिर परमेश्वर का हमेशा का राज्य।

पाठ- ७ फाठ २ का क्रम, मुख्य रुप से रोमी साम्राज्य के बारे में। इस तरहा दानियल को चिड़िया की दृष्टि से दुनिया के इतिहास उस के समय से मसीह के समय तक का बताया गया।

पाठ - ८ दुसरे और तीसरे दुनिया के साम्राज्यो की जानकारी, मध्य फारस और यूनान।

पाठ - ९ सत्तर हफ्तों मे दानियल से लेकर मसीह तक का समय पूरा किया गया, ६९ हफ्ते समाप्त हुए २६ ईष्वी में जब यीशु ने अपना प्रचार शुरु किया और बलिदान जो की समाप्त हुआ ७० वे हफ्ते के मध्य में यीशु ३ १/२ वर्ष बाद मसीह के क्रूस पर चढाए जाने के बाद २९वीं ईष्वि में। ङफ्ते का शेष भाग दानियल ९:२७ में कुछ स्पष्टता से नहीं बताया गया।

पाठ-११ पवित्र भूमि की परेशानियों पर है जिसे यथा मृत्युलेख (इच्छा पत्र) समय, ४०० ई.पू से ४ ई.पू तक

पाठ-१२ अन्तिम समय के चिन्ह।दानिएल की एतिहासिक पूर्णता की पूर्ण एव सक्षिपत पढाई के लिए हैलीज़ हैण्डबुक में दानिएल के भाग को पढ़िए।

विवाद के प्रश्न - दानिएल

१. दानिएल का एक मुख्य विष्य "जो सबसे उच्च है वह जो मानवत के राज्यों पर राज्य करता है"

अ) पुस्तक पर ध्यान लगाईए और उन वाक्यों और वचनो को लिख लीजीए जो मनुष्य के कार्यों पर परमेश्वर के साम्राज्या और नियंत्रण को बताता है।

ब) परमेश्वर के साम्राज्य को देखने के बाद, हमारे मन, रोमियों ११:३३-३६ में पौलुस के परम आनन्द से गूंज उठते हैं।

२. दानिएल २:३१-४५ में नबूकदनेस्सर के स्वपन और उसके अर्थ के बारे में बताते है। इस अजीब मुक्तिदाता की भविष्यवाणी को अपने शब्दो में
बताईए।

३. दानिएल १:२ में, दानिएल अपनी 'बाईबल' (भविष्यवक्ता) पर ध्यान लगा रहे हैं और जान जाते हैं की वह समय आ गया है जब परमेश्वर ने कहा की वह कार्य करेंगे।

अ) इस खोज को मध्यनज़र रखते हुए इस वचन पर प्रार्थना पूर्वक ध्यान दीजीए, और परमेश्वर के वादे पर, दानिएल के जवाब पर विवाद करीए।

ब) आप के जीवन में कुछ आवश्यक संदर्भो को लागू करीए।

स) ९:४-२० में जो मध्यस्थता प्रार्थना है, उस पर ध्यान लगाईए, और उसकी मुख्य बातों को लिख लीजीए।

द) यदि कुछ सामान्य सिद्धांत दिखते हों तो लिख लीजीए।

४. इस पुस्तक में दानिएल को धार्मिक पुरुष बताया गया है जिसे परमेश्वर ने भविष्य के रहस्यों को दिखाया। दानिएल के चरित्र का चित्र बनाईए, साथ मे संदर्यों के साथ बताईए की परमेश्वर, ने किस तरहा के मनुष्य को इस तरहा प्रयोग किया।

५. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे
कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

चार महन भविष्यवक्ताओं की तुलना :

	यशायाह	यिर्मयाह	यहेजकेल	दानियल
भविष्यवक्ता का स्थापन				
किस के विषय भविष्यवाणि की गयी				
राजनैतिक दृश्य				
धार्मिक स्थिती				
बैविलोनि बंदि बनने की समय स्थिती				
विषय				

मुख्य वचन और वाक्य				

होशे

##				वर्ष
1.		परमेश्वर के प्रेम का चिन्ह	होशै की लाक्षनिक शादी	६८९ ई.पू.
2.				
3.				
4.		पापों को धुत्कारा गया	लाक्षनित्का को इस्राएल पर लागू किया गया	
5.				
6.				
7.				
8.				
9.		दंड बताया गया		
10.				
11.				
12.				
13.				
14.				611 ई.पू.

पुस्तक को खोलने की कुछ और चीबियाँ :

उत्पादक : होशे

लिखने की तिथी : प्राय : ६११ ई.पू.

विषय : पिछड़े इस्राएल के लिए परमेश्वर का दैवी प्रेम

मुख्य शब्द : दया, प्रेम, वापसी, इस्राएल।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : होशे अकेला भविष्यवक्ता था जो इस्राऐल के लिए आखरी भविष्यवक्ता था, और वह उस वक्त प्रचार कर रहा था जब आसीरीयों ने इस्राएल पर विजय प्राप्त तरी थी।

विवाद के प्रशन - होशे

१. २ राजाऔं १४-१७ में एतिहासिक ढाँचा मिलता है जब होशे भविष्यवाणी करते थे। इन पाठों को पढिए और इस समय के मुख्य बृतांतो को लिख लीजीए।

२. होशे एक से तीन में जो होशे की पत्नी और बच्चो के बारे मे बताया गया है उस पर विवाद करीए।

३. होशे ४:६ अ में पाठ चार और पाँच के विषय हैं।

अ) इस विषय को बताईए।

ब) बताईए किस तरहा इस विषय को इन अध्यायों में विस्तार से बताया गया है, विषेश, चित्रांकणो और घटनाओ के माध्यम से लिखीए (संदर्भो का प्रयोग करे)

स) विवाद करीए की किस तरहा रोमियो १०:२ और आस पास के वचन इस विषय से मेल खाते हैं।

द) अपने जीवन में इसे और दूसरे स्थीतीयों को लागू करीए।

४. होशे १३:४-६ पर प्रार्थना पूर्वक ध्यान लगाईए।

अ) वृतांतो को क्रम में लिख लीजीए।

ब) छः वचन इस्राएल के इतिहास के नमूने को संक्षिप्त मे बताता हे जो की बार बार

दोहराया गया है। इतिहास की पुस्तक से एक विशेष उदहारण बताईए।

स) इन वृतांतों के क्रम से अपने जीवन के रिश्ते को जाँचीए आप अपने आप को किस स्तर पर देखते है।

योएल

##				वर्ष
1.		यहूदा (वर्तमान) नया इस्राएल (भविष्य)	परमेश्वर का दिन	४८८ ई.पू. ४७७ ई.पू.
2.				
3.				

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक : योएल, पतुएल का पुत्र (१:१)

लिखने की तिथी : प्राय :४७७ ई.पू.

विषय- परमेश्वर के दिन की भविष्यवाणीयाँ

मुख्य वाक्य : परमेश्वर का दिन

एतिहासिक पृष्टभूमि : योएल की स्थिती के विषय में कई विचार हैं। हम इसे ४८८ ई.पू - ४७७ ई.पू. के बीच रखते है. जिसका अर्थ यह है की बाबिलोन का एक निर्वासन हो चुका था, परन्तु यरुशलेम नही गिरा था।

विवाद के प्रश्न

१. परमेश्वर का दिन का अर्थ योएल की भविष्यवाणीयों के माध्यम से बताईए (संदर्भों की

मदद से आप अधिक समक्ष पाऐंगे)

२. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

आमोस

##			वर्ष
1.		राज्यों के विरुध न्याय	६८९ ई.पू.
2.			
3.			
4.			
5.			
6.			
7.		लाक्षनिक दर्शन	
8.			
9.		आशिर्वाद	६८७ ई.पू. .

इस पुस्तक को खोलने कि कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक : आमोस, तकोआ का एक चरवाह (१:१)

लिखने की तिथी : प्राय ६९० ई.पू

विषय : परमेश्वर को मिलने के लिए तैयार रहें।

मुख्य वाक्य : तीन क्या वरन चार अपराधों के कारण मे उसका दण्ड न छोड़ूगाँ।

विवाद के प्रश्न

१. एतिहासिक पृष्टभूमि के लिए, होशे का पहला प्रश्न देखीए।

२. अ) पाठ चार मे, उन न्यायों की सूची बताईए जो परमेश्वर इस्राएल के पाप के कारण, उसके विरुध लाता है।

ब) क्या आप उस तरहा की परिस्थिती आज की दुनिया में देखते है?

३. आमोस ५:२१-२७ पढ़ीए

अ) इस वचन में परमेश्वर किस से घृणा करता है?

ब) क्यों?

स) वह क्या चाहता है?

द) अपने जीवन में उसे अपनाईए।

४. पाठ सात से नौ तक में आमोस पाँच दृष्य पाता है टिडडीयाँ, साहुल, धूपकाल के फल, वेदी के पास परमेश्वर। इन सब के पीछे क्या उपदेश है?

५. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

ओबद्याह

पुस्तक को खोलने की कुछ चाबियाँ:

उत्पादक : ओबद्याह (१:१)

लिखने का दिनांक : प्राय : ४८० ई.पू.

विषय : एदोम का विनाश

मुख्य विचार : एदोम को पाना

एतिहासिक पृष्टभूमि : एदोम के लिए लिखा गया जो की यहूदा के दक्षिण पूर्व मं एक बैरी राज्य है। उन का शहर ढालूहा पहाड़ीयों के मध्य बसा हुआ था जिस के कारण उन मे सैनिक अंहकारिता और स्वंयम साहासी अवस्ता भी। ओबद्याह ने ४८२ ई.पू.मे भविष्यवाणी करी।

विवाद के प्रश्न

१. एदोम निवासीयों के विरुद पापों और उन के नतीज़ो की सूची बनाईए।

२. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

योना

##				वर्ष
1.		पहला निर्माण	योना नीनवे के लिए भविष्यवाणि करता है	६९० ई.पू.
2.				
3.		दूसरा निर्माण		
4.				

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक : योना, अमितै का पुत्र (१:१)

लिखने की तिथी : प्राय: ६९० ई.पू

विषय : नासतिक लोगों के लिए परमेश्वर की करुणा।

मुख्य शब्द : महान, तैयार, पश्चताप

मुख्य वाक्य : परमेश्वर का वचन

एतिहासिक पृष्टभूमि : योना वह भविष्यवक्ता था जिसे सबसे पहले लिखा गया, आमोस और होशे से एक या दो वर्ष पहले। तीन मुख्य भूगोल बिषयक बाते यह है

१) इस्राएल : योना की मात्र भूमि;
२) तरशिश : वह जगाह जहाँ वह भाग जान चाहता था; स्पेन में दक्षिण पश्चिम में; और
३) निनवे : एक महान शहर, गलील समुद्र से ५०० मील की दूरी पर उत्तरपूर्व की ओर, टिगरिस नदी के तट पर। निनवे असीरया की राजधानी थी।

विवाद के प्रश्न

१. पाठ चार में परमेश्वर ने योना को जो सबक सिखाया उस पर विवाद करीए।

२. योना पुस्तक की तुलना व्यवस्थाविवरण १८:२२ से करीए (यिर्मयाह १८:१-१० भी मदद करेगा)।

३. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

मिका

##				वर्ष
1.		मुख्यता न्याय	परमेश्वर की अच्छाई और कठोरता (रोमियों ११:२२)	६३२ ई.पू. .
2.				
3.				
4.		मुख्यता मसीहि राज्य		२९ वर्ष
5.				
6.		वाचा के प्रतिवाद		
7.				६०३ ई.पू.

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक : मोरेशेतवासी मिका (१:१)

लिखने की तिथी : प्राय :६०० ई.पू

विषय : पाप का न्याय और मसीह का राज्य

मुख्य शब्द : सियोन, धार्मिकता, सुनना, चलना, अवशेष एतिहासिक पृष्टभूमि - मिका भविष्यवाणी कर रहे है इस्राएल के गिरने से पहले, गिरते वक्त और गिरने के बाद, असीरिया को। भविष्यवाणीयाँ मुख्य रुप से इस्राएल के लिए है, परन्तु कुछ यहूदा के लिए भी हैं।

विवाद के प्रश्न

१. मीका, यशायाह और होशे के सहपाठी थे। इसलिए, एतिहासिक पृष्टभूमि के, लिए होशे के पहले प्रश्न को देखे।

२. मीका की भविष्यवाणीयों जो यीशु में या गिरजाघर में पूरा होती हैं उन की सूची बनाईए। पवित्रशास्त्र का प्रयोग कर बताईए की यह कैसे पूरा होता है।

३. प्रार्थनापूर्वक मीका ६:८ पर ध्यान लगाईए और कुछ और संदर्भों या पवित्रशास्त्र जो इस से मेल खाता हो। अपने ध्यान लगाने के नतीजों को लिख लीजीए।

४. प्रार्थनापूर्वक मीका 7:१८ पर ध्यान लगाईए और कुछ और संदर्भों या पवित्रशास्त्र जो इस से मेल खाने हों। अपने ध्यान लगाने के नतीजों को लिख लीजीए।

नहूम

##				वर्ष
1.		नीनवे का विनाश	नीनवे को शाप	६०३ ई.पू.
2.		नीनवे पर चढाई		
3.		नीनवे का विनाश		

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ:

उत्पादक : एल्कोशवासी नहूम (१:१)

लिखने की तिथी : प्राय : ६०० ई.पू

विषय : असीरीया राज्य का गिरना

मुख्य वाक्य : मैं तुम्होर विरुद्ध हुँ।

एतिहासिक पृष्टभूमि : योना का अन्तफल, मुख्यरुप से निनवे के लिए लिखा गया उसका पतन बताते हुए। निनवे असीरिया की राजधानी था, वह देश जो इस्त्राएल को बंधुआ बना कर ले गया, करीब सात साल पहले। निनवे पर बाबिलोन, मेद और सीथिएत ने विजयपाई और उसे बरबाद कर दिया था, नहूम की भविष्यवाणी के बाद। प्रसंगवश, टिगरिस नदी में बाड के कारण शहर की दिवार गिर गयी थी जिस के कारण उस पर विजय पा सके (देखिए नहूम १:८ और २:६) असीरीयों को यह गर्व था की निनबे दुर्जय था क्योंकी जो दिवार उस शहर की चारों ओर से घेरे हुए थी, वह इतनी चौड़ी थी की उस पर छः रथ एक साथ चल सकते थे।

विवाद के प्रश्न

१. प्रार्थनापूर्वक परमेश्वर के गुस्से के बारे मे ध्यान दीजीये (या उसका कोई अंश या वस्तु)। नहूम १:२,३ से शुरु करीए।

२. इस बात पर ध्यान दीजीए की परमेश्वर न्याय के समय भी धर्मी को दया और आशा देता है। इस सच्चाई का संदर्भ दीजीए।

३. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

हबक्कूक

##				वर्ष
1.		हबक्कूक की शिकायत	धर्मि उस के विश्वास में जीवित रहेंगे	५१८ ई.पू. .
2.		परमेश्वर का जवाब		
3.		हबक्कक की स्तूती		

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयाँ :

उत्पादक : हबक्कूक, एक भविष्यवक्ता (१:१)

लिखने की तिथि : प्राय:५०० ई.पू

विषय : कसदीयों के राज्य का अन्त

मुख्य शब्द : क्यों

टिप्पणी : कसदी बाबीलोनी हैं।

विवाद के प्रश्न

१. २ राजाओं २२-२५ में हबक्कूक पुस्तक सी एतिहासिक पृष्टभूमी के बारे में पढीये। जब हबक्कूक भविष्यवाणी कर रहे थो तो यहूदा में जो घटनाऐं हो रहीं थी, उनकी सूची बनाईए।

२. निम्न दिए प्रश्नों का जवाब देकर हबक्कूक पुस्तक की विचार धारा को धूढींयें :

अ) कौन बोल रहा है? (परमेश्वर और हबक्कूक के बीच बात हो रही है)

ब) हर एक की बात चीत के विषय का साराश लिखीये।

स) आज उस प्रयोग करीए।

३. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

सपन्याह

##			वर्ष
1.		यहूदा पर गुस्सा	
2.		राज्यों पर न्याय	
3.		यरूशलेम को शाप	
		बचे हुओं को मुक्ति	५१८ ई.पू.

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयाँ :

उत्पादक : सपन्याह (१:१)

लिखने की तिथी : प्राय :५०० ई.पू

विषय : यहूदा का उजड़ना और पुणर विकास

मुख्य शब्द : उजाड़ना

मुख्य वाक्य : परमेश्वर का दिन

विवाद के प्रश्न

१. उस एतिहासिक चित्ररेखा को समझने के लिए, जब सपन्याह लिख रहा था तो आप अपना जवाब की तुलना हबक्कूक के पहले प्रश्न से करीए.

२. बचे हुए अंश के वादे पर जो सपन्याह की भविष्यवाणी है, उस पर ध्यान लगाईए। बताईए की एक स्तर पर बह गिरजाघर में केसे पूरा होते हैं।
संदर्भ दीजीए।

३. अ) सपन्याह ३:१-५ में जो पाप बताए गए है उनकी सूची बनाईए।

ब) क्या वैसे पाप आज भी पाए जाते है?

४. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे

कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

हाग्गै

##			वर्ष
1.		मंदिर का पुणर्निर्माण (हग्गै १:८)	४१० ई.पू.
2.			

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयाँ :

उत्पादक : हाग्गै (१:१)

लिखने की तिथी : प्राय :४०० ई.पू.

विषय : मंदिर का दूबारा बनाना

मुख्य वाक्य : अपने चाल चलन पर सोचो

विवाद के प्रश्न

१. एज्रा एक से छ तक पढ़ीए और उन पागें. की मुख्य धटनाओं की सूची बनाईए ताकी आप को हाग्गै की भविष्यवाणी की पृश्टभूमी की समझ हो जाए।

२. विवाद करीए की किस तरहा पहले पाठ की धटनाऐं, व्यवस्थाविवरण २८ के सिद्धांतों से बह निकली हैं।

३. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

जकर्याह

<table>
<tr><th>##</th><th></th><th></th><th></th><th>वर्ष</th></tr>
<tr><td>1.</td><td></td><td rowspan="6">आठ दर्शन</td><td rowspan="8">मंदिर के बनाए जाने के समय</td><td rowspan="14">४१० ई.पू.

४०३ ई. पू.</td></tr>
<tr><td>2.</td><td></td></tr>
<tr><td>3.</td><td></td></tr>
<tr><td>4.</td><td></td></tr>
<tr><td>5.</td><td></td></tr>
<tr><td>6.</td><td></td></tr>
<tr><td>7.</td><td></td><td rowspan="2">वर्तमान के आदेश</td></tr>
<tr><td>8.</td><td></td></tr>
<tr><td>9.</td><td></td><td rowspan="6">भविष्यवाणि</td><td rowspan="6">मंदिर के बनाए जाने के बाद</td></tr>
<tr><td>10.</td><td></td></tr>
<tr><td>11.</td><td></td></tr>
<tr><td>12.</td><td></td></tr>
<tr><td>13.</td><td></td></tr>
<tr><td>14.</td><td></td></tr>
</table>

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयाँ :

उत्पादक : भविष्यवक्ता जकर्याह (१:१)

लिखने की तिथी : प्राय : ४०० ई.पू

विषय : मसीह के राज्य की भविष्यवाणीयाँ

मुख्य शब्द : शाखा, राजा, चरवाह

टिप्पणी : बहिष्कारी से लौटे हुए के लिए जकर्याह लिखा गया

विवाद के प्रश्‍ङ्

१. जकर्याह की भविष्यवाणी की एतीहासिक पृष्टभूमी की समझ के लिए पढीए हाग्गै का पहला प्रश्न और एज्रा १० पढते हुए, मुख्य घटनाओं की सूची बबाईए।

२. इस पुस्तक को पढ़ते समय उन भविष्यवाणीयों की सूची बनाईए जो मसीह मे या गिरजाघर (मसीहत) में पूरी हुई। संदर्भों का प्रयोग करें।

३. जकर्याह ने परमेश्वर से आठ दर्शन पाऐ। इन दर्शनों की सूची बनाते हुए संदर्भ दीजीए और उन का विषय भी लीखीए और जकर्याह को यदी उन का अर्थ बताया गया हो तो, वह भी लिखीए।

४. जकर्याह पाठ सात और आठ पर ध्यान दीजीए। हमारे जीवन के लिए जो आदेश दिए गए हैं उन की सूची बनाईए। आप के जीवन से उन्हें बात करने दें।

५. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

मलाकी

##			वर्ष
1.		नियमनिष्टता को धुत्कार	
2.			
3.			
4.		मसीह का आना	३७४ ई.पू.

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयाँ :

उत्पादक : मलाकी (१:१)

लिखने की तिथी : प्राय : ३६० ई.पू

विषय : नियमनिष्ठता की निदां करना

मुख्य वाक्य : कहाँ तुम कहते हो

एतिहासिक पृष्ठभूमि : वहिष्कारीयों के लिए परमेश्वर का अन्तिम संदेश जो ४०० वर्ष की चुप्पी के बाद इस्राएल लौटे।

विवाद के प्रश्न

१. अ) उन पापों की सूची बनाईए जिन के लिए पादरीयों और लोगो की निदा की गयी।

२. पद्य पर ध्यान दे और भविष्यवक्ताओं पर जब वे अपने संदेश के विषय और सच्च को तै कर रहे हो। आपने परमेश्वर, मनुष्य, और मनुष्यों पर परमेश्वर के कार्यों के बोर में और इस दुनिया के बोर में क्या सीखा? अपने नतीजों को उदहारणो और पवित्रशास्त्र की मदद से लिखीए।

३. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

४. निम्न पृष्ठ पर जो सारोश परचा है उसे भरीए।

सारांश परचा - पुराना नियम

	##	पुस्तक	मूल विषय
न्याय	1.		
	2.		
	3.		
	4.		
	5.		
इतिहास	6.		
	7.		
	8.		
	9.		
	10.		
	11.		
	12.		
	13.		
	14.		
	15.		
	16.		
	17.		
पद्य	18.		
	19.		
	20.		
	21.		
	22.		
मुख्य भविष्यवक्ता	23.		
	24.		
	25.		
	26.		
	27.		

छोटे भविष्यवक्ता	28.		
	29.		
	30.		
	31.		
	32.		
	33.		
	34.		
	35.		
	36.		
	37.		
	38.		
	39.		

नए नियम का उत्तम पूर्ण दृश्य

##	पुस्तक का नाम		
1.		इंजील	एतिहासिक
2.			
3.			
4.			
5.		प्रेरितों के काम	
6.		१३ पौलुस की पत्रीयां	पत्र सम्बंधी (कलीसियाई युग)
7.			
8.			
9.			
10.			
11.			
12.			
13.			

14.			
15.			
16.			
17.			
१८.			
१९.			
२०.			
२१.			
२२.		आठ सामान्य (सर्व साधारण)	
२३.			
२४.			
२५.			
२६.			
२७.		चेलों से सम्बंधित	भविष्य

नए नियम को खोलने के लिए कुछ और चाबीयाँ :

उत्पादक : प्रायः नौ - मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना, पौलुस, याकूब, पतरस, यहूदा और इब्रानियों का लिखने वाला।

लिखने की तिथी : ४८ ईश्वी (गलतीयों): ९५ ईश्वी (प्रकाशितवाक्य) किसके लिए

लिखा गया : वे जो गिरजाघर के युग में हैं या अन्तिम दिनों में हैं।

आवश्यक्ता : नए नियम (तोप) को नाप दण्ड की तरहा उपयोग किया गया शुरूआती गिरजाघरों के लिए, ताकी वे अपने समय की तत्तवरूपी शिक्षा का खण्डन कर सकें।

विषय : मुक्ति पर परमेश्वर का विशेष दैवी प्रकाशन, जो यीशु मसीह के अनुग्रह द्वारा मिलता है और यह गिरजाघर युग के महान भेद खोलता है।

मत्ती

##				
1.		कहानी	प्रारम्भिक जीवन	३० वर्ष
2.				
3.			गलील में राजा का प्रचार	
4.				एक वर्ष
5.		शिक्षा		लोकप्रियता का वर्ष
6.				
7.				
8.		कहानी		
9.				
10.		शिक्षा		
11.		कहानी		
12.				
13.		शिक्षा		
14.		कहानी		
15.				
16.			फोनेशिया	विरोध का वर्ष
17.			डेकापौलिस	
१८.		शिक्षा	गलीली	
१९.		कहानी	पेरिया	
२०.				
२१.			यहूदिया	एक सप्ताह
२२.				
२३.		शिक्षा		
२४.				

२५.				
२६.		कहानी		
२७.				
28.				

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयाँ :

उत्पादक - मत्ती (लेवी भी कहते है) एक चुंगी लेने वाला था, वह एक गलीली था, वह थोड़ा स्वतंत्र विचार वाला और अच्छा पढ़ा लिखा, यहूदी था।

लिखने की तिथी - ६० ईष्वी

आवष्यक्ता - अवीश्वासी यहूदीयों को यह बताने के लिए की यीशु ही पुराने नियम का संकेतित क्रीस्ट है।

यीशु मसीह को राजा के रूप मे प्रस्तुत किया गया।

मसीह का चिन्ह - सिंह (यहेज १:१०, प्रकाशित ४:६,७)

मुख्य शब्द - राज्य (५२ बार)

मुख्य वाक्य - स्वर्ग का राज्य (३४ बार)

टिप्पणी - यह इंजील क्रम के अनुसार रखी गयी है और यह पाँच मुख्य सामग्रीयों के बारे में बताती है। मत्ती को दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक कहा गया है।

पाँच मुख्य शिक्षा देने वाले पाठ और विषय बताईए:
१
२
३
४

५

विवाद के प्रश्न - मत्ती

1. यदि जो लिखी गयी उन में मत्ती पहली पुस्तक नहीं थी तो फिर उसे नए नियम की पहली पुस्तक क्यों बनाया गाया।

२. पहाड़ी पर उपदेश का विषय क्या है?

3. मत्ती को यहूदीयो की मसीही इंजील कहा गया है। कुछ सबूत खोजीए जो यह बताते हों की मत्ती यह साबित करना चाहता था की यीशु ही वादा किया गया मसीहा है।

४. मत्ती ५:३-१० मे आठ प्रकार के लोगों की सूची बनाईए, जिन्हें यीशु कहते है की धन्य है। इन में से तीन को चुन कर विस्तार से हर एक पर लिखीए, उसका गहरा अर्थ और आप से यह क्या कहता है। अपने निजी जीवन से एक उद्धहारण दिजीए और पवित्रशास्त्र से भी की यह तीन परमआनन्द जो आपने चुने है उन का क्या कार्य है। (यानी एक पुराने या नए नियम का चरित्र जो आप के विचार में इन मे एक उदहारण है)

५. अ) मत्ती की इंजील मे, स्वर्गीय राज्य का अर्थ क्या है (रोमीयों १४:१७ भी देखीए)

ब) आप स्वर्गीय राज में कैसे प्रवेश कर सकते हैं (पाठ १८)?

स) स्वर्गीय राज के नागरिक की जीवन चरिय कैसी है? (भजन १५ भी देखीए)

द) अपने निजी शब्दो में उस सच्चाई को लिखीए जो यीशु मत्ती १३ के दृष्टांतो के द्वारा बताते हैं।

६. एक दृष्टांत लिख कर कक्षा मे आईए ताकी दूसरे विद्यार्थीयों के साथ उसे बांट सके। उन्हे इस का अर्थ समझाने का अवसर दिया जाऐगा।

7 शताब्दियों से धर्म शिक्षकों ने हर इंजील को एक जानवर का रूप दिया है जो उस उत्पादक के लिए मसीह थे। मत्ती में मसीह का चिन्ह सिंह क्यों है।

८. मत्ती के लिए मसीह के जीवन काल का कौन सा समय सब से महत्वपूर्ण था? आप कैसे जानते है?

९. यीशु के अपने अपदेशो मे फक्की फरीसीयों के उपदेशों की पृष्ट भूमि थी। उनके छोटे और अशुद्ध विचारों को सच्चे और अंदरूणी दृष्टि मे बदल कर पेश करते थे। निम्न वचनो को पढीए और इन उपदेशों के भेदो पर ध्यान लगाईए:

अ) मत्ती ९:१-७ ब) मत्ती १२:१-१४ स) मत्ती १२:२२-३७

द) मत्ती १५:१-२० इ) मत्ती १६:१-४ फ) मत्ती २३:१-३६

१० (मत्ती १७:१-१३) में यीशु के रूपांतर की कहानी में जितने सिद्धांत ढूँढे जा सकते है ढूँढ़ कर लिखीए और विवाद करीए। पवित्रशास्त्र मे से और जीवन में से कुछ उदहारण निकाल कर इन सिद्धांतो को दृड बनाईए।

११. मत्ती १८:१५-३५ मे क्षमा और गिरजाघर के अनुशासन के सिद्धांत जो आप पाते है, उन को लिख कर, उस पर विवाद करीए।

१२. मत्ती ५:३१,३२ और १९:१-१२ मे तलाक के बारे में जो यीशु के उपदेश हैं उन पर विवाद करीए।

१३. तोडो के दृष्टांत (मत्ती २५:१४-३५) में जो सिद्धांत पाते हैं, उन्हें लिख कर विवाद करीए। यह आप के जिवन में किस तरहा लागू होते है?

१४. मत्ती २५:३१-४६ के उपदेश मे जो सिद्धांत मिलते है उन पर विवाद कर लागू करीए।

१५. बाताईए की अपनी मृत्यु और पुनरूथान से मत्ती २७:४० को कैसे पूरा किया। इब्रानियों१०:१९-२२ की तुलना कीजीए। इस की पूर्णता आप के जीवन पर क्या छाप छोडती है विवाद करीए।

१६. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

मरकुस

##				
1.		सेवक घोशित		एक वर्ष
2.		पूर्व गलीली	सेवक कार्य करते हुए	लोकप्रियता का वर्ष
3.				
4.				
5.				
6.		उत्तर गलीली		
7.				विरोध का वर्ष
8.				
9.			मृत्यु तक सेवा	
10.		पेरिया		
11.		यहूदिया		एक सप्ताह
12.				
13.				
14.				
15.				
16.		एक नया दिन		

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयाँ :

उत्पादक: मरकुस

लिखने की तिथी - ६० ईष्वी

लिखा गया : रोमियों के लिए

१. बहुत अभ्यासिक और न्याय और अनुशासन में दिलचस्पी
२. अमरीकी की तरहा, इसलिए अमरीकी इंजील

आवष्यकता: यीशु के मुक्ति देने वाले कार्यों को बताने के लिए। यीशु मसीह को एक सेवक के रूप मे बताया गया।

क्रीस्ट का चिन्ह - बैल
मुख्य शब्द : तुरन्त, एकदम, इसी वक्त

विवाद के प्रश्न - मरकुस :

१. विवाद करीए की मरकुस ने, वंशावली और यीशु के प्रारंम्भिक वर्षो को क्यों छोड़ दिया।

२. मरकुस मे क्रीस्ट का चिन्ह बैल क्यों है?

३. मरकुस १०:३५-४५ में (विशेष तौर से ४२-४५ वचन) यीशु ने राज्य के नेताओं के लिए एक सिध्दांत बताया है। इस नेता के चरित्र में और आज की दुनिया के नेता के चरित्र की तुलना कीजिए। सूची बनाईए की किस तरहा परमेश्वर ने प्रायोगिक रास्तों में इस सिद्धांत को सिखाया है या सिखा रहा है।

४. मत्ती और मरकुस के भेदो को लिखीए (लिखने का तरीका, विशिष्ट उच्चारण, आवशयकता, मसीह को प्रस्तुत करना, वगैराह)

५. उगने वाले बीज का दृष्टांत जो मरकुस ४:२६-२९ में मिलता है वह मरकुस की इंजील से अनोखा है। यह दृष्टांत आप के लिए क्या मायने रखता है।

६. यीशु ने अपने प्रचार मे शैतानी कार्यों का समना किया है। उन का अधिकार और शात्ती को कई लोगो ने देखा। निम्न दिए गए मरकुस के वचनों पर ध्यान दिजीए और जो प्रश्न दिए गए है, उन के जवाब दीजीए:

अ) मरकुस १:२३-२७,३९- शैतान आक्रमाणिक तौर से प्राणो की लड़ाई प्रारम्भ करता है। हमें अपनी आत्मिक लड़ाई में क्षतिकर होना चाहीए या रक्षातमक।

ब) मरकुस ७:२४-३० इच्छा ना करने वाले को क्या मुक्ति दी जा सकती है? इच्छा और सानुकूलता कितनी महत्वपूर्ण है (देखीए मत्ती १२:४३-४५)

स) मरकुस ९:१४-२९ - क्या कुछ मुक्तियाँ दूसरो से कठिन होती है? हमारे जीवन मे आत्मिक जीत के लिए क्या दीर्घ प्रयत्न की आवश्यक्ता है?

लूका

##	x				वर्ष
1.		प्रारम्भिक जीवन	३० वर्ष	सेवा से प्रचार	४ ई. पू.
2.					
3.					
4.		गलील में प्रचार	लोकप्रियता का वर्ष		
5.					
6.					
7.					
8.					
9.		तीसरी यात्रा	विरोध का वर्ष		
10.		गलील से यरूशलेम			
11.					
12.					
13.		पेरिया में प्रचार			
14.					
15.					
16.					
17.					
१८.		यरूश्लेम को			
१९.					
२०.		यरूश्लेम में	एक सप्ताह	दुःख और विजय	
२१.					
२२.					
२३.					२९ ईश्वी
२४.					

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयाँ :

उत्पादक - लूका

१. लूका एक इतिहास लिखने वाला है।

२. लूका की पुस्तक एक लंम्बी और विस्तृत इंजील है।
लिखने की तिथी - ६० वीं ईश्वि से ८० वी इश्वि तक
किसे लिखा गया - यूनानी आवश्यक्ता - सब बातो को क्रम अनुसार बताने के लिए (१:३) यीशु क्रीस्ट को मनुष्य के पुत्र के रूप मे बताया गया।

क्रीस्ट का चिन्ह - मनुष्य

मुख्य वाक्य - मनुष्य का पुत्र

टिप्पणी लूका को यह सब कहा गया।

१. प्रार्थना की इंजील - लूका ने प्रर्थना करते क्रीस्ट पर दबाव डाला।

२. पापी की इंजील (दूसरा मौका देती है/ विश्वव्यापक बनने पर दबाव)

३. गरीबों की इंजील

अ) पहले चरवाहों ने यीशु को देखा
ब) विदवा औरत, बच्चे यीशु को मंदिर में मिलती है
स) केवल लूका ही, अमीर व्यक्ति और लाज़रस और अमिर बेवकुफ का लेखा देता है।

४. बचपने और स्रीतव के बारे में इंजील

५. स्तूती और खुशी की इंजील

६. सबसे अधिक साहित्य संम्बंधि इंजील।

विवाद के प्रश्न - लूका

१. यह बताने के लिए की लूका एक इतिहास लिखने वाला है, इंजील में से सबूत बताईए।

२. यह बताने के लिए की लूका को "बाल्यावस्था की इंजील" और "स्त्रीत्व की इंजील" कहा जाता है, संदर्भ दीजीए।

३. अ) लूका ३:७-१४ मे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, बपतिस्मा लेने वालो से कहता है की उन से क्या उम्मीद किया जाता है। वह सामान्य रूप से उन सें क्या चाहते थे?

ब) लूका ३ :१०-१४ लूका इंजील के लिए अनोखा है। यहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला विशेष समूह के लोगो और व्यव्साय वालो को संम्बोदित कर रह है उन के विशिष्ट अवस्थाओ से अपनी इच्छाओ की सफाई दैते हुए। वे आप के व्यवसाय मे आप से क्या कह सकते है?

४. लूका को "प्रार्थता की इंजील" कहा गय है। निम्न वचन पर ध्यान दीजीए और प्रार्थना के सिद्धांतो की सूची बनाईए। लूका ११:१-१३, १८:१-८ और १८:९-१४।

५. दोनों मत्ती और लूका, मसीह के विरान मे परिक्षा के बारे में बताते है। लूक ४:१-१४ पढिए और इन प्रश्नो का उत्तर दीजीए।

अ) मसीह को विरान मे इतना समय क्यों काटना पढ़ा? (इब्रानियो ४:१५,१६) भी पढिए।

ब) दूश्मन को हराने के लिए आगे आकर उस से ललकारने की आवश्यक्ता है। (१यूहन्ना ३:८ पढीए) अपने प्रचार से पहले अपने जानी दूश्मन का सामना करके यीशु ने

क्या साबित किया?

स) यदि यीशु के उदहारण पर चलना है, तो हम इस वचन से क्या सबक सीखते है जो शैतान से हमारी लड़ाई मे काम आता है।

६. जब आप लूका की पूस्तक पर ध्यान लगाऐ, तो इस बात कोलिखीए जो यह बताती है की लूका चाहता था की पढ़ने वाले यह जान जाऐ की यीशु पूर्ण रूप से मनुष्य थे।

७. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

यूहन्ना

##	x					
1.				प्रस्तावना	गलील	
2.		1		अंधकार का वर्ष		
3.					यरूशलेम	
4.		2			सामरिया	
5.		3		लोकप्रियता का वर्ष	यरूशलेम	
6.		4,5	1		गलील	लोग
7.					यरूशलेम	
8.			2	विरोध का वर्ष		
9.		6				
10.			3,4			
11.		7	5			
12.						
13.				एक रात	उप्पर का कमरा	आत्मिय
14.			6			
15.			7		शहर को पार करते हुए	
16.						
17.						
१८.					गैतसमि	
१९.		चिन्ह	दावे	प्रायः एक सप्ताह	यरूशलेम	ग्रह सम्बंधि
२०.						
२१.						

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयाँ :

उत्पादक - यूहन्ना, एक अच्छा शिक्षित गलीली।

लिखने की तिथी - ९० वी इशी

किसे लिखा गया - पूरे संसार के लिए

आवश्यक्ता - ये इसलिए लिखे गए है की तुम विश्वास करो की यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उस के नाम से जीवन पाओ (यूहन्ना २०:३०,३१)

सात महान चिन्ह	**सात महान दावे**
१	१
२	२
३	३
४	४
५	५
६	६
७	७

यीशु मसीह को परमेश्वर के पुत्र के रूप मे बताया गया है।
मसीह का चिन्ह- बाज़

घोषणा - अविश्वास की वृद्धि, पाठ १-११, उत्कर्ष ११:५३ मे।
विश्वा की वृद्धि, पाठ १२-२०, उत्कर्ष २० मे।

"अभी मेरे समय नही आया" (२:४;७:८) "मेरा समय आ पहुँचा है" (१३:१च१७:१)

विवाद के प्रश्न- यूहन्ना :

१. मत्ती, लूका और यूहन्ना की वंशावली की तुलना करीए। जो भेद आप पाते है उस का महत्व बताईए।

२. पढीए यूहन्ना ४:१-२४

अ) संक्षिप्त मे यहूदी सामरी लोगो की लड़ाई की पृष्ठ भूमि बताईए (यानी वचन ९ - क्यों यहूदीयों का सामरीयों से कुछ लेना देना नही था।)

ब) आराधना के बारे मे यीशु क्या सच्चाई बताते है? "आत्मा और सच्चाई" से आराधना करना, आप के लिए क्या मायने रखता है?

३. अ) यूहन्ना के मुख्य वचन को याद कर लीजीए (आवश्यक्ता)

ब) यीशु साथ मुख्य दावो को याद कर लीजीए ("मैं...हुँ")

स) यीशु ने कहा, "मैं जगत की ज्योती हुँ।" "ज्योती" शब्द पर ध्यान लगाईए, और इस का प्रयोग यूहन्ना और नए नियम में किसी और जगाह पर किया हो ढूँढीए और तीन ऐसे उदहारण दीजीए जहाँ ज्योती को आत्मिक सच्चाई के रूपक में प्रयोग किया गया है। यह उदहारण को अपने जीवन पर लागू कर के देखीए।

४. यूहन्ना अपनी पुस्तक मे पाँच पाठो (१३-१७) मे मसीह के जीवन की एक रात को जिसे आखरी भोज कहा चाता है, बताते है। इन पाठो पर आप अपना ध्यान लगा कर, कम से कम तीन विषय ऐसे चुनिए जो यीशु ने उस शाम अपनी मृत्यु से पहले, अपने चेलो के साथ घनिष्टता से काटी थी। उन को सारांश मे अपने शब्दो मे लिखीए और इन की विशेषता अपने जीवन पर लागू करीए।

५. जब आप प्रार्थना पूर्वक यूहन्ना की पुस्तक पर ध्यान लगाए तो इस बात पर मन्न करे जो

यह बताती है की यूहन्ना ने यीशु की ईश्वरता को साबित करना ही अपना विषय समझा।

इंजील	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
उत्पादक				
लिखने की तिथी				
किसे लिखा गया				
आवश्यकता (मुख्य वचन)				
मुख्य शब्द या भाव				
यीशु को किस रूप में प्रस्तुत किया गया				
मसीह का चिन्ह				

@F~xqsVòÌÁ ¿RÁLRiùÌÁV, F¢ÌÁV xmsLji¿RÁLRiùi

प्रेरित 9 10 11 12 13c14 15 16c18 19c21 22c26 27c28
1c8

								तकर								तकर													
	3	3	3	3	3	3	[illegible]	2	3	3	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	5	5	5	5	5	5	5	5	5

प्रेरितो के काम

<table>
<tr><th>##</th><th></th><th>पूर्व</th><th>वर्ष</th><th></th><th></th><th></th></tr>
<tr><td>1.</td><td></td><td rowspan="2">कलीसिया का जन्म</td><td rowspan="7">२९ ईश्वि
32</td><td rowspan="7">यरूशलेम</td><td rowspan="7">यहूदी राज्य</td><td rowspan="12">पतरस</td></tr>
<tr><td>2.</td><td></td></tr>
<tr><td>3.</td><td></td><td rowspan="5">परिक्षा से वृध्दि</td></tr>
<tr><td>4.</td><td></td></tr>
<tr><td>5.</td><td></td></tr>
<tr><td>6.</td><td></td></tr>
<tr><td>7.</td><td></td></tr>
<tr><td>8.</td><td></td><td rowspan="2">महान उपद्रव</td><td rowspan="5">33
44</td><td rowspan="5">यहूदिया और सामरिया</td><td rowspan="5">परिवर्तन</td></tr>
<tr><td>9.</td><td></td></tr>
<tr><td>10.</td><td></td><td rowspan="2">गैर यहूदियों की इंजील</td></tr>
<tr><td>11.</td><td></td></tr>
<tr><td>12.</td><td></td><td>उपद्रव</td></tr>
<tr><td>13.</td><td></td><td rowspan="2">पहली यात्रा</td><td rowspan="4">45</td><td rowspan="4">पृथ्वि के अत्यंत भाग तक</td><td rowspan="4">गैर यहूदी काल</td><td rowspan="4">पौलुस</td></tr>
<tr><td>14.</td><td></td></tr>
<tr><td>15.</td><td></td><td>यरूशलेम</td></tr>
<tr><td>16.</td><td></td><td>दूसरी</td></tr>
</table>

17.		यात्रा				
१८.						
१९.		तीसरी यात्रा				
२०.						
२१.		यरूशलेम				
२२.						
२३.		केसरीया				
२४.						
२५.						
26.			59			
27.		रोम की ओर	60			
28.			c 62			
		पश्चिमी				

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबीयाँ :

उत्पादक - लूका, लूका ने दो ग्रंथ लिखे थे, पहला मसीह के जीवन के ३३ वर्षों की घटनाओं को बताता है, और दूसरा मसीह की मृत्यु के तुरन्त बाद के ३३ वर्षो को बताता है।

कुल - ८८ वर्षों का लेखा।

लिखने की तिथी - ६१ ईश्वि - ६४ ईश्वि

विषय - १, थियाफलुस को यह बताने के लिए कि मसीहत कैसे शुरू हुई और आगे कैसे उन्नती की।

२. पढने वालो को यह बताने के लिए की जब मसीहत उन्नती करने लगी तो, रोमियों के लिए यह खतरनाक धर्म नही था।

मुख्य वचन --" जब पवित्रात्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे, और यरुशलेम और सारे यहुदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे। (१:८)

प्रेरितो के काम की दो महान हस्तीयाँ - पतरस और पौलुस

पौलुस की प्रचार यात्रा शुरू हुई सीरीया के अंताकिया से।

पहली :४५ ईश्वी - ४८ ईश्वी

दूसरी :५० ईश्वी - ५४ ईश्वी

तीसरी :५५ ईश्वी - ५८ ईश्वी

टिप्पणी - यहूदी मसीही चाहते थे की गैर मसीहो पर भी मूसा के न्याय लागू कीए जाए।

विवाद के प्रश्न - प्रेरितो के काम :

१. १:८ को प्रेरितो के काम का मुख्य वचन क्यों कहा गया?

२. प्रेरित २:१-४ मे, पवित्रात्मा और गिरजाघर का नया रिश्ता, क्या हो जो यहले नही था? (लूका २४:४९, यूहन्ना १४:१७, २०:२१, २२ और प्रेरित १:८ की तुलना करीए)

३. फिलिप्पुस के जीवन मे प्रचार के कौन से सिद्धात मिलते है? यह आप के प्रचार के विचार पर क्या असर डालता है।

४. सताए जाने का असर प्रारंम्भिक गिरजाघर पर क्या हुआ?

५. पौलुस के प्रचार के तरीको को बताईए। यह आप के प्रचार के विचार को कैसे बदलता है?

६. "दुनिया को परमेश्वर के लिए बदलने मे" (१७:६ब) पौलुस के कौन से चरित्र ने उस की मदद करी?

7."स्थानिक गिरजाघर प्रभुत्व का विचार यह है की हर गिरजाघर अपने वृद्धो द्वारा शासन किया जाए बजाए इसके की कोई बाहार का व्यक्ति जो उन के शेत्र से बहार का हो वो आकर उन पर राज्य करे। क्या यरूशलेम की सभा ने स्थानिक गिरजाघर प्रभुत्व के विचार को तोडा है? (प्रेरित १५) अपने जवाब को स्पष्ट कीजीए।

५. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

रोमियों

##				
1.		दुनिया पाप में डूबि हुई	मत सम्बंधि	अध्यात्मविधया सम्बंधि महान कार्य
2.				
3.				
4.		मुक्ति उपलब्द		
5.				
6.		पवित्रता		
7.				
8.				
9.		परमेश्वर का साम्राज्य	यहूदियो का अविश्वास	
10.				
11.				
12.		सेवा	प्रायोगिक	
13.				
14.				
15.				
16.				

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक - पौलुस (१:१) एक पढ़ा लिखा यहूदी जिसने दमसकस को जाते समय एक दर्शन पा कर हुदय परिवर्तन किया।

लिखने की तिथी - ५६ इश्वी

किन के लिए लिखा गया - रोम के संतो के लिए

विषय - परमेश्वर की धार्मिक्ता प्रकट हुई :

मुक्ति - उसकी ज़ड़ (पाठ १-८) मुक्ति उस का फल (पाठ १२-१६)

मुख्य शब्द - पाप, न्याय, धार्मिक्ता, आज्ञापालन, विश्वास, आत्म

इस पत्र पर अभिप्राय:

"वर्तमान की अति व्युत्पन्न पुस्तक" - कोलरिड़ज

" नए नियम का मुख्य भाग और निपुण इजील। यदि कोई निष्ठूर शासक पवित्रशास्त्र को मिटाने मे कामयाब हो जाए और रोमियों और यूहन्ना की इंजील बच जाए तो मसीहत बच जाऐगी।" लूथर

विवाद के प्रश्न - रोमियों :

१. किस तरहा रोमियों ३:२३, आने पाले पाठो का सारांश है?

२. रोमियों पाठ सात और आठ में जों विश्वासी के जीवन मे तनाव बताया गया है और उस तनाव से छुटकारा के बारे में विवाद करीए।

३. रोमियों छः और दूसरे संदर्भों को लेते हुए, पानी के बपतिस्मे के सिद्धांत पर विवाद करीए।

४. सरकार के साथ विश्वाशि के रिश्ते को बताईए और कारण बताईए की अधिकारी के सामने हमे क्यों आज्ञाकरी बने रहना है?

५. विश्वास से मुक्ति के सिद्धात पर विवाद करीए।

६. भाग्य पर अपनी अवस्था को बताईए।

७. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

१ कुरिंथियों

##			
1.		परिचय	पौलुस को सेवकों व्दारा बताया गया
2.		कलीसिया के भाग	
3.			
4.			
5.		गुण दोष अव्यवस्ता	
6.			
7.		सामाजिक जीवन की समस्याऐं	पौलुस पूछ ताछ के पत्रों का उत्तर देता है
8.			
9.			
10.			
11.		समाजिक आराधना में उपद्रव	
12.		आत्मिक उपहार	
13.			
14.			
15.		पुणरूथान	
16.		समाप्ति	

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ:

उत्पादक - पौलुस (१:१) एक पढ़ा लिखा यहूदी जिसने दमस्कस के रास्ते मे दर्शन पा कर हुदय परिवर्तन किया।

लिखने की तिथी - ५६ ईश्वी

किस के लिए लिखा - कुरिंथ की कलीसीया को (१:२)

१. खलोए के घरान से कलीसीया में फूट के बरे में पता चला (१:११)
२. एक पत्र जो कुरिंथ के विश्वासीयों ने कई सवालो पर जवाब मांगते हुए लिखा था।

विषय - मसीही चरित्र

विवाद के प्रश्न - १ कुरिंथियों :

१. १ कुरिंथियों मे कलिसीया में फूट के क्या कारण बताए गए है? क्या पिछले २००- वर्षों मे सरीसिया ने पौलुस के निर्देशो का पालन किया है?

२. पौलुस, कुरिंथियों की कलीसीया को सांसारिक क्यों कहता है?

३. कलीसिया के अनुशासन कार्यों के विष्य पौलुस क्या बताता है?

४. १ कुरिंथियों पाठ आठ मे पौलुस मसीही चरीत्र के कौन से सिद्दात बताता है?

५. १कुरिंथियों पाठ १४ मे आत्मा के उपहारो के प्रयोंग के विषय मे क्या सिद्धात है।
६. हमारे और यीशु मसीह के देह के पुनरूथान के विषय मे क्या सबूत दिए गए है?

७. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

२ कुरिंथियों

##	x		
1.		परिचय	धन्यवाद और मेल मिलाप का भाग
2.		पौलुस की देरी को समझाया गया	
3.		पौलुस का चेले के रूप में प्रचार	
4.			
5.			
6.		पौलुस कुरिंथियों से अपना नाता फिर से जोडता है	
7.			
8.		यरूशलेम में गरीबों का एकत्रित होना	
9.			
10.		पौलुस का अपनि चेले के रूप में प्रचार का बचाव	कठोर भाग
11.			
12.			
13.			

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ:

उत्पादक - पौलुस (१:१), एक पढ़ा लिखा यहूदी जिसने दमस्कस के रास्ते मे दर्शन पा कर हुदय परिवर्तन किया।

लिखने की तिथी - ५७ ईश्वी

किस के लिए लिखा गया - कुरिंथ के मसीहों को (१:१)

विषय - पौलुस का चेलेपन का बचाव।

पौलुस का विवाद की वह सच्चा चेला है:

१. उस ने मसीह के लिए दूसरो से अधिक कठिन कार्य किए और कष्ट उठाए (पाठ १०,११)

२. परमेश्वर उन लोगो को दर्शन देता है जो महान है (उदहारण, पतरस) पौलुस ने भी दर्शन पाया (१२:१-७)

३. दूसरे चेलो की तरहा पौलुस भी अदभुत कार्य करता था : (१२:११,१२)

विवाद के प्रश्न - २ कुरिंथियों :

१. प्रेरित १९:२१-४१ पढ़ कर, पौलुस के एसिया के अनुभव को दोहराईए (२ कुरिंथियों १:८-१०)। अनुरूप सच्चाई को लिख ले।

२. २ कुरिंथियों मे पौलुस कलीसीया में अनुशासन के बारे मे क्या बताता है?

३. २ कुरिंथियों पाठ एक वचन तीन से सात को इस पुस्तक के मुख्य विचार कहा गया है

अ) मुख्य विचार को बताईए।

ब) इस विचार को पूरी पुस्तक मे खोजीए।

स) अपने जीवन पर लागू करीए।

४. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

गलतीयों

#			
१		सच्चा चेला	यहूदियों के सिध्दांतों से पौलुस लडता है
२			
३		सच्ची इंजील	
४			
५		सच्चे नीतिशास्त्र	
६			

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक - पौलुस (१:१), एक पढ़ा लिखा यहूदी जिसने दमस्कस के रास्ते मे दर्शन पा कर हुदय परिवर्तन किया।

लिखने की तिथी - ४८ ईश्वी से ६० ईश्वी (अलग अलग विद्धवानों ने अलग अलग समय बताया) कई ४८ ईश्वी कहते है, पौलुस की पहली प्रचार यात्रा के तुरन्त बाद, परूतु यरूशलोम सभा से पहले, क्योंकी यह विषय (भिन्न जाती की स्वतंत्रता) के बारे मे सभा मे विचार हुआ।

किस के लिए लिखा गाया - गलतीयों की कलीसीया को

विषय - अनुग्रह व्दारा मुक्ति

टिप्पणी - यहूदी मसीही चाहते थे की मूसा के न्याय भिन्न जाती के मसीहो पर भी लागू हौ।

विवाद के प्रश्न - गलतीयों :

१. गलतीयों में, घटनाओं के क्रम के बोर में कौन सी नयी बात है जो पौलुस की बात चीत से पता चलती है, जो प्रेरितो के काम मे नही है।

२. न्याय के बारे में पौलुस की शिक्षा का महत्व बताईए।

३. गलतीयों मे उन संदर्भों को बताईए जो यहूदीयों को अलग करते है।

४. फरीसीयों और यहूदीयों के लिए यह आम बात थी की वे परमेश्वर के न्याय में अपने निजी न्याय जोड़ दे।

अ) क्या आधुनिक युग में आप इस तरहा का उदहारण बता सकते है।

ब) आप अपने जीवन में उस से कैसे छुटकारा पा सकते है?

५. विश्वास से दोष शुद्धिकरण के विषय अपने विचारों को बताईए और बचाव करीए।

६. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

इफिसीयों

		उस में	मत सम्बंधि: हमारे अधिकार
		परमेश्वर हम में	
		चाल और सेवा	प्रायोगिक: हमारा उत्तरदायित्व
		चाल और लडाई	

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ:

उत्पादक : पौलुस (१:१), एक पढ़ा लिखा यहूदी जिसने दमस्कस के रास्ते मे दर्शन पा कर हुदय परिवर्तन किया।

लिखने की तिथी : ६० ईश्वी

किस के लिए लिखा गया : इफिसुस के क्षेत्र के पास रहने वाले संतो के लिए

विषय : आत्मिक विशेष आधिकार और कलीसिया का उत्तरदायित्व।

इफिसीयों :

१. कुलुस्सियों का जुड़वा

२. सबसे सामान्य पत्रि

३. कलीसिया की एकता पर दबाव

४. "स्वर्गीयता की पत्री" कहा जाता है।

मसीही - लड़ाई के लिए तैयार

१. टोप - उद्धार

२. झिलम - धार्मिङ्क ता

३. कमर कस - सच्चाई

४. तैयारी के - मेल के सुसमाचार

५. तलवार - आत्मा

६. ढाल - विश्वास

७. शक्ति की देन - प्रार्थना

विवाद के प्रश्न - इफिसीयों

१. इफिसीयों मे पौलुस किस रहस्य को बताता है?

२. संदर्भों के साथ बताईए की पौलुस किस तरहा इफिसुस की कलीसिया मे एकता रखने की बात कहता है?

३. इफिसियों को स्वर्गीयता कि पत्री कहा गय है

अ) उन घटनाओं को लिखीए जो पवित्रता या स्वर्गीयता या स्वर्ग के स्थानों में हुई है।

ब) यह सच्चाईयाँ आप के जीवन पर क्या प्रभाव डालती है?

४. एक भाष्यकार ने इफिसियों की पुस्तक को इतना छोटा कर दिया की वह तीन शब्दों मे

बताई जा सकती है: "बैठो, चलों, खड़े हो जाओ" पौलुस के आदेश के अनुसार इन शब्दों को वाक्यों मे बदलीए। विषेश संदर्भ दीजीए (संकत: बैठो - पाठ एक और दो, चलो - पाठ चार और पाँच, खड़े हो पाठ छा:) यह तीन आसन आप के जीवन मे क्या महत्व रखते है?

५. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

फिलिप्पियों

		एक आत्मिक प्रेम पत्र
तक		

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ:

उत्पादक : पौलुस (१:१), एक पढ़ा लिखा यहूदी जिसने दमस्कस के रास्ते मे दर्शन पा कर हुदय परिवर्तन किया।

लिखने की तिथी : ६१ ईश्वी

किसके लिए लिखा गया : फिलिप्पी मे मसीही (१:१) जिन्हे पौलुस प्रेरितो १६:१२, ४०,२०:२,६ मे मिलता है।

आवश्यक्ता : वित्त संम्बधि सहायता के लिए कृतज्ञता, व्यक्तिगत समाचार और अपदेश।

मुख्य शब्द : खुशी और आनन्द (१६ बार)

विवाद के प्रश्न :

१. किनोसिस अपदेश (२:५-११) में क्या चुनौतीयाँ दी गयी है और उन का प्रस्तावना जो वचन १-४ मे बताया गय है? (यूनानी में किनोसिस का अर्थ - है खाली या रिक्त")

२. फिलिप्पुस पाठ चार में प्रचुर जीवन की क्या चावियाँ बताई गयी हैं?

३. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

कुलुस्सियों

		मत सम्बंधि	मसीह कलीसिया का प्रमुख है
		उपदेश	

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक : पौलुस (१:१), एक पढ़ा लिखा यहूदी जिसने दमस्कस के रास्ते मे दर्शन पा कर हुदय परिवर्तन किया।

लिखने की तिथी : ६० ईश्वी

किस के लिए लिखा गया : कुलुस्से में मसीहो के लिए (१:२), एक कलिसीया जिन से पौलुस ने कभी भेट नही की। यह इस बात को बताती है की हर जगाह के मसीहों के लिए पौलुस चिन्तित था।

विषय : मसीह की उत्मता

महान रहस्य :

हर युगसे छुप हुआ; अब संतो को बताय जाता है;
इस का वर्णन कुलुस्सियों १:२७ मे है...

टिप्पणी : कुलुस्सियों इफिस्सियों की जुड़वा पूस्तक है (यानी इन दोनो में सामान्य विषय पाए जाते हैं)

विवाद के प्रश्न :

१. कुलुस्सियों मसीह की उत्मता कैसे बताता है?

२. कुलुस्सियों २:२०-२२ और पाठ तिन और चार पढिए। इन्हे कैसे एक किया जाए (यानी कोई नियम नही के विरूद्ध नियमों की सूची)?

३. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

१ थिस्सलुनीकियों

		तकर	
		अभिन्नदन	परमेश्वर का महिमा में आना
		प्रायोगिक	

२ थिस्सलुनीकियों

##			
1.		तसल्लि	परमेश्वर का न्याय करने के लिए आना
2.		निर्देश	
3.		उपदेश	

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक : पौलुस (१:१), एक पढ़ा लिखा यहूदी जिसने दमस्कस के रास्ते मे दर्शन पा कर हुदय परिवर्तन किया।

लिखने की तिथी : ५० ईश्वी - ५१ ईश्वी (दूसरी प्रचार यात्रा के दौराण)

किस के लिए लिखा गया - थिस्सलुनीकिया की स्थापना प्रेरित १७:१-१५ मे करी थी।

आवश्यक्ता : १ थिस्सलोनीकियों: अभिनन्दन और आखासन (१ थिस्स १:२,३)

२ थिस्सलोनिकियों : दूसरे आगमन पर सुधार (२ थि २:१,२)

विवाद के प्रश्न - १ & २ थिस्सलोनिकियों :

१. प्रेरितो १७:१-१५ पढिए और थिस्सलोनिकियों की कलीसिया के बनाए जाने की घटनाए को सारांश मे लिखाए।

२. प्रर्थनापूर्वक १ और २ थिस्सलोनिकेयों पर विचार करीए। कलीसीया के प्रबल विचार क्या है ? दूर्बल विचार क्या है? प्रबलता और दूर्बलता को अपने जीवन से तुलना कीजीए।

३. २ थिस्सलोनिकियों २:१०-१२ मे सच्चाई और भ्रम के बोर मे क्या बताया गया है, इस पर विवाद करीए। अपने जीवन पर लागू करीए।

४. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

१ तिमुथियुस

		नास्तिकता
		कलीसिया की स्थापना करना
तकर		
		कलीसिया का शासन

२ तिमुथियुस

		तिमोथियुस की स्थापना करना
तकर		

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाॅं:

उत्पादक : पौलुस (१:१), एक पढ़ा लिखा यहूदी जिसने दमस्कस के रास्ते मे दर्शन पा कर हुदय परिवर्तन किया।

लिखने की तिथी : १ तिमुथियुस : ६२ ईश्वी - २ तिमुथियुस : ६३ ईश्वी

किस के लिए लिखा गया : इफिसुस में तिमुथियुस (१:२) पौलुस ने तिमुथियुस से प्रेरितों १६:१-५ मे भेंट करी थी।

आवश्यक्ता: १ तिमुथियुस : तिमुथियुस द्वारा कलीसिया का निर्माण और शासन (१तिमु ३:१५)
२ तिमुथियुस: पौलुस के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए तिमुथियुस की नियूक्ति (२तिमु ४:१,२)

विवाद के प्रश्न - १ और २ तिमुथियुस

१. यूनानी शब्द "विशप" का अर्थ है संत, "पादरी", "चरवाह", और वृद्ध। १तिमुथियुस में इस कार्य में कार्य करने वाले के लिए जो शिक्षा बताई है उसकी सूची बनाईए।

२. १ तिमुथियुस में छोटे पादरी के लिए जो शिक्षा नियूक्त की गयी है उसकी सूची बनाईए।

३. १ तिमुथियुस पाठ पाँच मे कलीसिया के अनुशासन के जो दो सिद्धात बताए गऐ हैं उन्हे लिखिए?

४. १ तिमुथियुस पाठ एक और २ तिमुथियुस पाठ दो में अध्यात्मविद्या सम्बधि विवादों की चैतावनीयाँ जो दी गयी है उन्हे लिखीए?

५. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

तीतुस

		कलीसिया में देव भक्ति
		घर में देव भक्ति
		संसार में देव भक्ति

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक : पौलुस (१:१), एक पढ़ा लिखा यहूदी जिसने दमस्कस के रास्ते मे दर्शन पा कर हुदय परिवर्तन किया।

लिखने की तिथी : ६२ ईश्वी

किसे लिखा गया : तितुस को, जिसे पौलुस ने क्रेते टापू पर छोड़ दिया था ताकी वह कलीसिया का निर्माण कर सके (१:४)।

आवश्यकत्ता : कलीसिया के क्रम को स्तापित करे (१:५)

विवाद के प्रश्न :

१. तीतुस पाठ तीन मे कलीसिया के अनशासन के क्या सिद्धात बताए गए है?

२. पाठ तीन में, विश्वास और कार्य में पौलुस क्या रिश्ता बताता है?

३ परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

फिलेमोन

##	व.		
व.1c3		परिचय	एक भागे हुए सेवक के विषय
व. 4c7		धन्यवाद देना	
व. 8, 9		ओनेसिमस के लिए दलील	
व. 10c16			
व. 17c22			
व.23c25		नमस्कार	

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक : पौलुस (१:१), एक पढ़ा लिखा यहूदी जिसने दमस्कस के रास्ते मे दर्शन पा कर हुदय परिवर्तन किया।

लिखने की तिथी : ६२ ईश्वी

किसे लिखा गया : फिलेमोन, उसका परिवार और कलीसिया के लिए (१:१,२)
फिलेमोन दासों का स्वामी था। वह कुलुस्से का रहने वाला था, और वह पौलुस के प्रचार से मसीही बन गया था।

आवश्यक्ता : दास जो भाग गया था और मसीही बन गया था, उसके लिए दया।

टिप्पणी : फिलेमोन पौलुस का बहुत निजी चेला है।

विवाद के प्रश्न :

१. उनेसिमुस और फिलेमोन के कार्यों के प्रति पौलुस क्या उदहारण देता है? उनेसिमुस के फिलेमोन के पास लौट आने के कार्य से आप क्या सीखते है?

२. फिलेमोन को लिखे गए पौलुस के पत्र से आप समाज सुधार के प्रति कलीसिया के कार्यो के क्या सिद्दात हम सीखते है?

३.परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

इब्रानियों

<table>
<tr><th>#</th><th></th><th></th><th></th></tr>
<tr><td>१.</td><td></td><td rowspan="4">शारिरिक रूप में मसीह</td><td rowspan="9">मत सम्बंधि</td></tr>
<tr><td>२.</td><td></td></tr>
<tr><td>३.</td><td></td></tr>
<tr><td>४.</td><td></td></tr>
<tr><td>५.</td><td></td><td rowspan="5">मसीह का कार्य</td></tr>
<tr><td>६.</td><td></td></tr>
<tr><td>७.</td><td></td></tr>
<tr><td>८.</td><td></td></tr>
<tr><td>९.</td><td></td></tr>
<tr><td>१०.</td><td></td><td rowspan="4">मसीही का जवाब</td><td rowspan="4">प्रायोगिक</td></tr>
<tr><td>११.</td><td></td></tr>
<tr><td>१२.</td><td></td></tr>
<tr><td>१३.</td><td></td></tr>
</table>

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक : अनजाना, पौलुस या अपोलुस

लिखने की तिथी : ६० ईश्वी

किसे लिखा गया : रोम या फिलिस्तीन मे रह रहे यहूदी मसीहो के लिए।

आवश्यक्ता : मसीह की प्रधानता बताने के लिए स्वधर्मत्याग रोकने कि लिए जो मसीहत से यहूदी बन रहे थे। मसीह, स्वर्गदूतों, मूसा, मलिकीसिदक, आरूण और अबराहम से महान है।

मुख्य शब्द : भला (१३ बार) पादरी (३६ बार) विश्वास (३४ बार) वाचा (१९ बार)

विषय : परमेश्वर की पूर्णता अपने बेटे यीशु मसीह में।

विवाद के प्रश्न :

१. पाठ तीन और चार में "विश्राम मे "प्रवेश" के बारे मे क्या बताया गया है?

२. उत्पती १४:१८-२४ में मलिकिसिदक के बारे मे और पढीए। किन बातो में मसीह, मलिकिसिदक की रिति" पर है (इब्र१ ६:२०)? (इब्रानियों पाँच और सात की भी तुलन कीजीए)

३. सिंहासन की दाहिनी ओर मसीह के स्थान को देखीए। इस की विशेषता क्या है?

४. पाठ एक से दस तक कम से कम सात बार तुलना की गयी है। किस से और किन से मसीह को श्रेष्ट बताया गया है?

५. लेवी के पादरी से मसीह श्रेष्ट है, इस बात की पुष्टी संदर्भों को देते हुए कीजीए (पाठ पाँच से दस तक)

६. पाठ ११ "विश्वास का पाठ" ध्यान दीजीए की विश्वास हमेशा कर्तरि प्रयोग मे है

कमवाच्य नहीं। "विश्वास मे, (उसने) कुछ किया। (किस उत्तर की आवश्यक्ता नही)

७. "गवाहो का बादल" जो इब्रानियों १२:१ मे बताया गाय है, वह क्या है?

८. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

याकुब

##		
1.		कई उपदेश
2.		
3.		
4.		
5.		

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक : याकुब (१:१), यीशु का सौतेला भाई.

लिखने की तिथी : ४५ ईश्वी - ५० ईश्वी

किसे लिखा गाया : यहूदी मसीही जो तितर बितर हो गए थे (१:१)

विषय : सामान्य रूप से मसीही जीवन

टिप्पणी : याकुब एक विषय से दूसरे विषय की ओर कूदता है और फिर वापस आ जाता है। निम्न याकूब मे पाए गए विषयों का सारांश है:

१. प्रलोभत और परिक्षा - १:२-४, १२-१५.

२. अमीर व्यक्ति और गरीब व्यक्ति - १:९-११, २:१-१३,४:१३-१६,५:१-६.

३. विश्वास और कार्य - १:१९-२५, ३:१३-१८, ४:१-७,१७.

४. जीभ का प्रयोंग और दूर्वचन - १:२६ff, ३:१-१२,४:११ff, ५:१२.

५. बुद्धिमानी : गलत और सही १:५-८, ३:१३-१८

विवाद के प्रश्न :

१. कुछ लोगो का मानना है की पौलुस के कहने मे की मुक्ति विश्वास से मिलती है और याकूब के कहने मे की मुक्ति कार्यों से मिलती है, कुछ भेद है। प्रार्थना पूर्वक पौलुस और याकूब के लेखो पर मनन करे और विचार करे की क्या वे मेल खाते है। अपने जवाबो के सबूत में संदर्भ दे।

२. याकूब ३:१३-१७ मे जो दो प्रकार की बूद्धि बताई गयी है उन पर विवाद करे साथ मे उन का सोत, लक्षण और नतीजा भी लिखीए।

३. याकूब मे पाप की क्या परिभाषा दी गयी है?

४. परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

१ पतरस

##			
1.		विश्वासि का पैत्रिक धन	एक सतायी गयी कलीसिया को: जीवित आशा की पत्री
2.		मसीहों का समर्पण	
3.		मसीहों का सताया जाना	
4.			
5.		उपदेश	

२ पतरस

##			
1.		बहुमूल्य वादे	स्वधर्मत्याग की भविष्यवाणि
2.		मोहक	
3.		दूसरा आगमन	

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक : पतरस (१:१) एक मधुआरा जिसे यीशु ने बूलाया और वह उसका एक महान चेला बन गया (प्रेरित २:१४)

लिखने की तिथी : १ पतरस - ६३ ईश्वी
२ पतरस - ६३ ईश्वी से ६५ ईश्वी

किसे लिखा गया : एशिया माईनर के मसीहों के लिए जो सताए जा रहे थे (१:१)

विषय : १ पतरस दुःख पर विजय, जैसे यीशु के जीवन मे हुआ (१ पतरस ४:१)
२ पतरस: दुष्ट शिक्षको और ताना मारने वालो के विरूद चेतावनी
(२पतरस ३:१,२)
मुख्य शब्द - १ पतरस: दुःख (१५ बार)

विवाद के प्रश्न । और २ पतरस :

१. पतरस (१:१) बताता है कि पतरस परदेसी के लिए लिख रहा है जो कई देशो मे तितर बितर हो गए है। यह लोग कौन हैं और पतरस उन्हे इस तरहा क्यो लिख रहा है? अपने जवाबों को संदर्भों सहित बताऐ।

२. २ पतरस पाठ २ और तीन पर ध्यान लगाऐ। धार्मीक मनुष्य और बुरे व्यक्ति के विलक्षण लिखे। इन से अपने जीवन की तुलना करे। यदि आप जानते है की कुछ ऐसे क्षेत्र है जिन्हे बदलना है, तो परमेश्वर के पास पश्चताप के साथ जाईए और इसे बदलने के लिए उसकी शक्ति को माँगीए।

३.परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

१ यूहन्ना

##			
1.		परमेश्वर ज्योति है	हमेशा के जीवन की पत्री
2.		परमेश्वर प्रेम है	
3.			
4.			
5.		सच	
		जीवन	

२ यूहन्ना

##			
व.1c6		चलना	सच
व.7c11		भटकना	
व.12, 13		आन्नद	

३ यूहन्ना

##		
व.1c14		प्रेम से एक दूसरे की सेवा करो

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक : यूहन्ना (वह चेला जिसने इंजील लिखी)

लिखने की तिथी : ८० ईश्वी के अंत मे या ९० ईश्वी के शुरु में।

किसे लिखा गया : १ यूहन्ना: इफिसुस के मसीहो के लिए

२ यूहन्ना : चुनी हुई महिला के नाम, जो शायद स्थानीय गिरजाघर की पादरी थी जिस के घर पर विश्वासी मिला करते थे।

२ यूहन्ना : गयुस

अवश्यक्ता : १ यूहन्ना : सच्चे मसीही विश्वास का सिद्धांत और ब्रहम ज्ञान के सिद्धांत के विरूद अभ्यास।

३ यूहन्ना : एक धर्मोपहेशक की लड़ाई जिस मे गयुस, दियुत्रिफेस, दिमेत्रियुस और यूहन्ना भी शामिल है।

मुख्य शब्द : १ यूहन्ना : साहचर्य, जानना, प्रेम

२ यूहन्ना : सच्च (५ बार); प्रेम (४ बार)

विवाद के प्रश्न १,२,३ यूहन्ना :

१. यूहन्ना की इजील और १ यूहन्ना के लिखे जाने की तुलना करीए (यूहन्ना २०:३०,३१ और १ यूहन्ना ५:१३)

२. उन परिक्षणों की सूची बनाईए १ यूहन्ना मे जों हमें यह बताता है की हम अन्नत जीवन पा सकते हैं की नहीं।

३. यूहन्ना कहता है, "परमेश्वर ज्योती है" (१:५) और "परमेश्वर प्रेम है (४:८, ११) इन दो सच्चाईयों मे से यूहन्ना क्या सिद्धात निकालता है जो मसीही जीवन के लिए आवश्यक है ?

४. यूहन्ना ने पाप की क्या परिभाषा दी है (३:४, ५:१७)?

५.परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

यहूदा

##		
a«s.1c16		विधर्मि कलीसिया
a«s.17c25		सच्ची कलीसिया

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक : यहूदा (१:१), यीशु का सौतेला भाई।

लिखाने की तिथी : ६० ईश्वी या ७० ईश्वी

किसे लिखा गया : हर जगाह के मसीहो के लिए

आवश्यक्ता : झुठे शिक्षकों के विरूद्ध कलीसीया को चेतावनी (१:३,४)

पत्रियों का सारांश मे पुनर्नि रिक्षण :

पुस्तक	उत्पादक	दिनांक	किसे लिखा गया	विषय या आवश्यक्ता

प्रकाशितवाक्य

<table>
<tr><th>#</th><th></th><th></th><th></th></tr>
<tr><td>१.</td><td></td><td>पहला दर्शन</td><td rowspan="7">चिन्हों व्दारा यीशु मसीह का दैवी दर्शन</td></tr>
<tr><td>२.</td><td></td><td rowspan="2">सात कलीसियाऐं</td></tr>
<tr><td>३.</td><td></td></tr>
<tr><td>४.</td><td></td><td rowspan="2">सिंहासन</td></tr>
<tr><td>५.</td><td></td></tr>
<tr><td>६.</td><td></td><td rowspan="2">सात मोहरें</td></tr>
<tr><td>७.</td><td></td></tr>
</table>

८.		सात नरसिग्गे	
९.			
१०.			
११.			
१२.		अच्छे और बुरे की लडाई	
१३.			
१४.			
१५.		सात शीशीयां	
१६.			
१७.		अन्तिम विजय	
		अन्तिम आशीष	

पुस्तक को खोलने की कुछ और चाबियाँ :

उत्पादक : यूहन्ना (१:१)

लिखने की तिथी : ९५ ईश्वी

किसे लिखा गया : एशिया की सात कलीसिया

मुख्य वचन : "यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्या, जो उसे परमेश्वर ने इसलिए दिया कि अपने दासो को वे बाते, जिनाका शीघ्र होना आवश्य है, दिखाए और उसने अपने स्वर्गदूत को भेजकर उसके द्वारा अपने दास यूहन्ना को बताए।" (१:१)

विषय : सिद्धि

विवाद के प्रश्न :

१. प्रकाशितवाक्य इस बात को स्पष्ट करता है की वह चिन्हो और लक्षणो से प्रारम्भ होता है। इन लक्षणो का अर्थ प्राकशितवाक्य और सारी बाईवल मे मिलता है। आप की इस बात की मदद करने के लिए की आप लक्षणो का और पुस्तक को सही तरहा से अनुवाद कर सके, जब आप प्रकाशितवाक्य पढें तो सूची बनाईए लोगो की, (उदहारण - वाचा के दूत) पशुओं की, (उदहारण - अजगर) और चीजे (उदहारण - पवित्र शहर)। प्रकाशितवाक्य, सदंर्भों और शब्द कोश की मदद से जितनो के अर्थ लिख सकते हैं लिखीए। कम से कम १०। अधिक - ????????

२.परिज्ञानों, विचारों, प्रश्नो और निजी उपयोग जो पवित्रात्मा आप के जीवन, मे कर रहा है, इन सबकोलिख लीजीए।

आप ने जो पूर्ण किया है उस पर एक पुनर दृष्टी :

हर एक जन के लिए जिस ने बाईबल के इस पार से उस पार को बूरा किया है, यह अच्छा समय है की आप रूक कर यह बात पर ध्यान दे की पिछले दो या तीन वर्षों मे आप ने क्या प्राप्त किया।

१. बाईबल के बारे मे एक मूल कार्यकारी ज्ञान

अ) मानसिक बुद्धि - परमेश्वर की प्रयोजनाओं को बुद्धिमानि से अपनाना।

ब) एतिहासिक्ता - एतिहासिक स्थिती को समझना

स) भक्ति - अपने जीवन मे अपनाना

२. हर विषयो पर परमेश्वर के विचारो को अपनाने की योग्यता का कारण:

अ) मनुष्य के साथ परमेश्वर के कार्यो की मूल समझ

ब) ध्यान लगाने की कला सीख ली गयी।

स) संदर्भों और शब्दकोश का प्रयोग करने मे परीपूर्ण।

अपने संक्षिप्त ग्रंथों को आगे के पूनरनिरिक्षण और मनन के लिए संम्भाल कर रखीए।

अब आप दूसरो को अनुशासित करना चाहते होंगे, विश्वासीयों के छोटे समूह को अपने घर पर एकत्रित कर के, तीन वर्ष का यह बाईबल सर्वोक्षण की मदद से जो आप ने अभी पूर्ण किया है। अपनी सहायता के लिए "जवाबो की छोटी पुस्तक" खरीद सकते हैं।

परमेश्वर के सगं चलने के लिए दो मूल अवश्यक्तओं का ध्यान रखीए:

१. परमेश्वर की आशीष की नदी बनीए, जो आपने पाया है, उसे दुसरो के संग बाटीए।
२. अपनी उन्नती करते रहीए और अपने आप को पोषण देते रहीए वरणा आप सूख जाऐंगे।

आप के लिए कई रास्ते खुले हुए है। हर आवश्यक्ता को पूरा करने मे परमेश्वर आप का मार्ग दर्शन करे।

back cover

बाईबल के इस पार से उस पार को पढने से लाभ

* आप पूरी बाईबल को क्रमानुसार और भक्ति के साथ पढ़ पाऐंगे।

* आप परमेश्वर और मनुष्य के साथ उस के व्यवहार के बारे मे एक संतुलित दृष्य पाऐंगे।

* आप उत्पादक, पवित्रात्मा, पर भरोसा रखोंगे की वह उस के वचन के साथ आप से बात करे।

* आप और अधिक उन्नती पा सकते है; यदी आप समूह मे इस का अध्यन करे, चाहे वह संडे स्कूल है, घरेलू समूह हो, बाईबल स्कूल की कक्षा हो या कोई विद्यार्थी जिसने मसीही प्रचार विश्वविद्यालय मे पढ़ाई की हो (डब्लयू डब्लयू डब्लयू. कलाऊनलाईन. काम)

तरीका:
जब किसी साहित्य का अध्यन करे, तो हमे दो मूल अधिकारो का ध्यान रखना चाहीए

* रिश्तेदारी का अधिकार - हर चीज़ जो लिखी गयी है या कही गयी है, उस का किसी और वस्तु से कुछ विषेश लगाव या रिशतेदारी होती है।

* सामान्यता का अधिकार - एक उत्पादक किसी विषेश विशय पर अधिक दबाव डालता है।

यह छोटी पुस्तक में इन मूल अधिकारों का ध्यान रखा गया है और इसी कारण यह आवश्यक जानकरी देती है बाईबल को एक पृष्ट के चित्र पर जाँचने का। यह एतिहासिक स्थिती बताती है (मानव) उत्पादक की आवश्यक्ता और नजरीया और पुस्तक के हर भाग को चित्रो द्वारा दर्शाया गया है।

आप के चित्र

यह चित्र आप के चित्र बन जाते है जब आप उन को भरने लगते है। जब आप हर पाठ पर ध्यान लगाते है, तो इस प्रश्न को अपने मन मे रखिए, "परमेश्वर, इस पाठ का निचोड़ या सुगंध क्या है?" फिर, थोडे शब्दों में, पाठ के शीरशक को अपने आत्मा की

मदद से भरीए। जब आप इस पाठ को दूबारा दौहराऐं तो शीरशख को पढ कर उस पाठ का विषय मालूम पढ़ जाना चाहिए। यह चित्र फिर आप के लिए पूरी बाईबल का हमेशा का लेखा रह जाऐगा।

जवाबो की छोटी पुस्तक भी उपलब्ध है जो इस पुस्तक में दिए गए विवाद के प्रश्नो के जवाब है। यह विद्यार्थीयों के काम आऐगी, अपने जवाबो को जॉचने के लिए तथा किसी समूह के अगूवे को समूह मे विवाद करते वक्त। समूह के मुखीए
के लिए मार्गदर्शन नामक पुस्तक भी उपलब्ध है।